हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

₹ 20

सितम्बर 2015

ईदुल-अज़हा मुबारक



अल्लाह ने
गवाही दी कि उसके सिवा
कोई पूज्य नहीं और फ़रिश्तों ने
और उन लोगों ने भी जो न्याय और
संतुलन स्थापित करने वाली एक सत्ता
को जानते हैं, उस प्रभुत्वशाली,
तत्वदर्शी के सिवा कोई
पूज्य नहीं ।
–क़ुरआन

A WELL WISHER
Jamaat-e-Islami Hind Unit
Tanti Bagan, Kolkata

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 25 अंक 3 सितम्बर 2015

लोगों पर अल्लाह का हक़ है कि जो उसके घर (काबा) तक पहुंच सकता हो, वह उसका हज करे । -क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 20/- विशेषांक रु० 30/-

वार्षिक रु० 220/-, दो वर्ष 425/-

पांच वर्ष 1000/-, आजीवन रु० 5000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–100 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–35 US डॉलर

वेब : www.kanti.in

चेक / ड्राफ़्ट 'मासिक कान्ति' के नाम से बनवाएं

मैं बांध बनाने आया हूं

मैं हूं यायावर बंजारा
आवाज़ लगाने आया हूं
सूरज सर पर चढ़ आया है
एहसास कराने आया हूं...

जो आज खड़ा है यहां इधर
क़समें खाता है रह-रहकर
बस इक कुर्सी के लालच में
वो जा बैठेगा वहां उधर
अन्दर के अस्ली चेहरे की
तस्वीर दिखाने आया हूं...

बहुरूप बनाकर फिरते हैं
कोई धर्म नहीं ईमान नहीं
कथनी-करनी में अन्तर है
इनके अन्दर इन्सान नहीं
ये चाल-चलन से मायावी
ये राज़ बताने आया हूं...

ये आग लगाकर बस्ती में
रोटी सेकेंगे आ-आकर
समरसता में विष घोलेंगे
कड़वी बातों को चिल्लाकर
इनके झांसे में मत आना
ये ख़ास बताने आया हूं...

कुछ ऐसे-वैसे लोग यहां
करते रहते हैं मनमानी
मर्यादा की हद पार हुई
अब सर से ऊपर है पानी
सब ईंट उठा लो हाथों में
मैं बांध बनाने आया हूं...

पुष्पेन्द्र शरण 'पुष्प'

13/18 बी नुनिहाई, आगरा (उ०प्र०)



कहां क्या है ?

मैं बांध बनाने आया हूं (कविता)	–पुष्पेन्द्र शरण 'पुष्प'	3
कुरआन ज्योति		5
हदीस मंजरी		6
हज की महत्ता (संपादकीय)		7
भारत में बाल मज़दूर (आपके पत्र)		9
डॉ॰ कलाम को श्रद्धांजलि (साहित्य-समाचार)		13
प्रधानमंत्री जी को संबोधित (कविता)	–जयप्रकाश वाल्मीकि	13
नारी और कुरआन (आस्था)	–डॉ॰ फ़रहत हुसैन	15
शिक्षक के गुण (प्रेरणा)	–अफ़ज़ल हुसैन	19
हाइकू	–डॉ॰ रामनिवास 'मानव'	25
डायबिटीज़ का ख़तरा कम करें (स्वास्थ्य-चर्चा)		25
हज कैसे करें ? (विशेष आयोजन)	–सैयद हामिद अली	26-27
हज्रे असवद का महत्व (विशेष आयोजन)	–मौलाना अब्दुल हक़ फ़लाही	35
लेखन के बिना सांस लेना मुश्किल (भेंटवार्ता)	–डॉ॰ प्रीत अरोड़ा	37
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की ईद (आस्था)	–रिदा अतहर	41
दोहे	–रोहित यादव	42
नीति आयोग व पंचवर्षीय योजनाओं का भविष्य	–भारत डोगरा	43
सार्वजनिक नैतिकता का दायरा	–शशि कुमार झा	45
दोहे	–रोहित यादव	47
कसक (लघुकथा)	–डॉ॰ रामनिवास 'मानव'	48
मुंबई ऐसी भी थी !	–इन्तिज़ार नईम	48
पर्यावरण सुरक्षा और इस्लाम	–अबरार अहमद	49



(86) जब कभी कोई सूरा इस विषय की उतरी कि अल्लाह को मानो और उसके रसूल के साथ मिलकर जिहाद करो तो तुमने देखा कि जो लोग इनमें से सामर्थ्यवान थे वही तुमसे निवेदन करने लगे कि इन्हें जिहाद में शरीक होने से माफ़ रखा जाए और उन्होंने कहा कि हमें छोड़ दीजिए कि हम बैठने वालों के साथ हैं। (87) इन लोगों ने घर बैठने वालियों में सम्मिलित होना पसन्द किया और उनके दिलों पर ठप्पा लगा दिया गया, इसलिए उनकी समझ में अब कुछ नहीं आता।[89] (88) इसके विपरीत रसूल ने और उन लोगों ने जो रसूल के साथ ईमान लाए थे अपनी जान व माल से जिहाद किया, और अब सारी भलाइयां उन्हीं के लिए हैं और वही सफलता पाने वाले हैं। (89) अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, इनमें वे सदैव रहेंगे। यह है महान सफलता।

(90) बद्दू अरबों में से भी बहुत-से लोग आए[90] जिन्होंने बहाने किए ताकि उन्हें भी पीछे रह जाने की अनुमति मिल जाए। इस तरह बैठे रहे वे लोग जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल से ईमान की झूठी प्रतिज्ञा की थी। इन बद्दुओं में से जिन लोगों ने कुफ़्र (अवज्ञा) का तरीक़ा अपनाया है[91] बहुत जल्द वे दर्दनाक सज़ा के शिकार होंगे।

–क़ुरआन, 9 : 86-90

89. अर्थात यद्यपि यह बड़ी लज्जाजनक बात है कि अच्छे-भले हट्टे-कट्टे, स्वस्थ समर्थ्यवान लोग, ईमान का दावा रखने के बाद भी काम का समय आने पर मैदान में निकलने के बजाय घरों में घुस बैठें और औरतों में जा सम्मिलित हों, लेकिन चूंकि इन लोगों ने स्वयं जान-बूझकर अपने लिए यही रीति पसन्द की थी, इसलिए प्रकृति के नियम के अनुसार उनसे वे पवित्र भावनाएं छीन ली गईं जिनके कारण आदमी ऐसे में नीच तौर-तरीक़े अपनाने में लज्जा महसूस किया करता है।

90. अरब बद्दुओं से तात्पर्य मदीने के आसपास रहने वाले देहाती और रेगिस्तानी अरब हैं जिन्हें सामान्यतः बद्दू कहा जाता है।

91. ईमान का निफ़ाक़ भरा प्रदर्शन, जिसके पीछे वास्तव में पुष्टि, स्वीकरण, निष्ठा और आज्ञापालन न हो और जिसके ऊपरी इक़रार के बाद भी इंसान अल्लाह और उसके दीन की अपेक्षा अपने स्वार्थ और अपनी सांसारिक रुचियों को अधिक प्रिय रखता हो, वास्तविकता की दृष्टि से कुफ़्र और इन्कार ही है। अल्लाह के यहां ऐसे लोगों के साथ वही मामला होगा जो इन्कारियों और द्रोहियों के साथ होगा, भले ही दुनिया में इस प्रकार के लोग काफ़िर न ठहराए जा सकते हों और उनके साथ मुसलमानों की का-सा मामला होता रहे। दुनिया की इस ज़िन्दगी में जिस क़ानून पर मुस्लिम समाज की व्यवस्था स्थापित की गयी है और जिस विधान के आधार पर इस्लामी राज्य और उसके जज नियमों को लागू करते हैं, उसकी दृष्टि से तो निफ़ाक़ दिखाने पर कुफ़्र या 'कुफ़्र जैसा' का हुक्म केवल उन्हीं शक्लों में लगाया जा सकता है जबकि इन्कार, द्रोह या ग़द्दारी और बेवफ़ाई का प्रदर्शन खुले तौर पर हो जाए। इसलिए निफ़ाक़ की बहुत-सी शक्लें और दशाएं ऐसी रह जाती हैं जो शरीअत की अदालत में कुफ़्र के हुक्म से बच जाती हैं, लेकिन शरीअत के किसी फ़ैसले में किसी मुनाफ़िक़ का कुफ़्र के हुक्म से बच निकलना यह अर्थ नहीं रखता कि अल्लाह के फ़ैसले में भी वह इस हुक्म और उसकी सज़ा से बच निकलेगा।

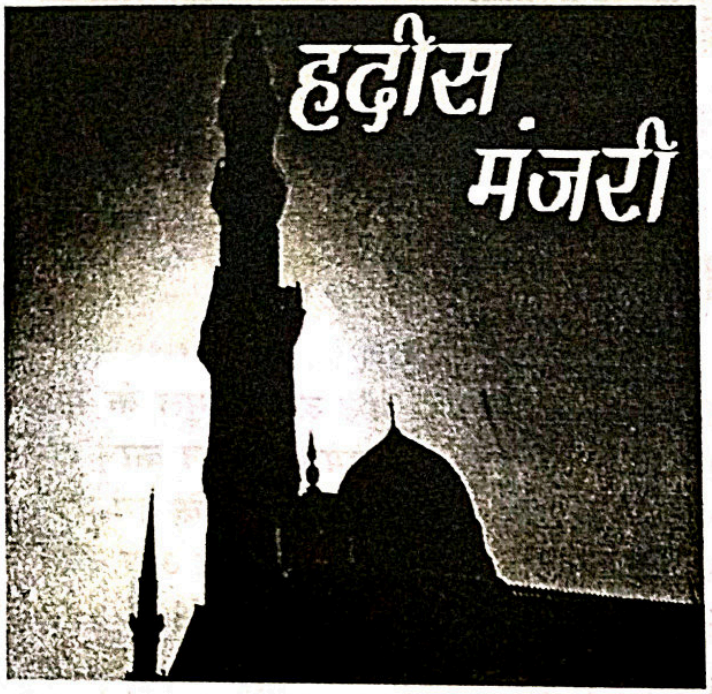

दुआएं

● हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र बिन अल-आस (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (स॰) ने प्रार्थना की: "ऐ अल्लाह दिलों को फेरने वाले, हमारे दिलों को अपने आज्ञापालन की तरफ़ फेर दे ।" –मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "अल्लाह की पनाह मांगो इससे कि आज़माइश की कठिनाई से, बदनसीबी में पड़ने से, दुर्भाग्यग्रस्त होने से तुम्हारी रक्षा हो सके और इससे कि शत्रुओं को हर्षित होने का अवसर मिले ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

और एक रिवायत में है कि हज़रत सुफ़यान ने कहा : मुझे सन्देह है कि मैंने इसमें एक चीज़ बढ़ा दी है ।

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) यह प्रार्थना किया करते थे : "ऐ अल्लाह, मेरे लिए मेरे दीन को ठीक रख, जो मेरे मामले का संरक्षक है और मेरे लिए मेरी दुनिया को ठीक रख जिसमें मेरा जीवन-यापन है और मेरे लिए मेरी आख़िरत को ठीक और बेहतर रख जो मेरे लौटकर जाने की जगह है, और जीवन को मेरे लिए हर भलाई में अभिवृद्धि का कारण बना, और मृत्यु को मेरे लिए प्रत्येक अनिष्ट चीज़ से मुक्त होकर आराम पाने का कारण बना ।" –मुस्लिम

● हज़रत अनस (रज़ि॰) से रिवायत है वे कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) यह प्रार्थना किया करते थे : "ऐ अल्लाह, मैं तुझसे पनाह मांगता हूं बचने के लिए लाचारी, आलस, कायरता, जरा-जीर्णता और कृपणता से । और मैं तुझसे पनाह मांगता हूं क़ब्र की यातना से बचने के लिए और मैं तुझसे पनाह मांगता हूं जीवन और मृत्यु की आज़माइश से बचने के लिए ।"

और एक रिवायत में है : "ऋण के बोझ और लोगों के अभिभूत करने से बचने के लिए ।" –मुस्लिम

● हज़रत अबू बक्र अस-सिद्दीक़ (रज़ि॰) से रिवायत है कि उन्होंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से कहा : आप मुझे कोई ऐसी प्रार्थना सिखा दें जिसे मैं नमाज़ में पढ़ा करूं । आपने कहा : "कहो : 'ऐ अल्लाह, निश्चय ही मैंने अपने आप बहुत ज़ुल्म किया है, तेरे सिवा कोई गुनाहों को क्षमा नहीं करता, अत: तू मुझे अपने यहां से क्षमा प्रदान कर और मुझ पर दया कर । निस्सन्देह तू अत्यंत क्षमाशील, दयावान है ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

एक रिवायत में ये शब्द भी हैं : "और मेरे घर में ।" "बहुत ज़ुल्म" भी आया है और "बड़ा ज़ुल्म" भी ।

● हज़रत अबू मूसा (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) यह प्रार्थना किया करते थे : "ऐ अल्लाह, मेरे गुनाह को क्षमा कर दे और मेरी नादानी को और मेरे अपने मामले में मुझसे जो ज़्यादती हुई हो उसे भी जिसे तू मुझसे ज़्यादा जानता है । ऐ अल्लाह, मेरे गंभीर और हंसी-मज़ाक़ में हुए दोनों प्रकार के गुनाहों को क्षमा कर और उन गुनाहों को भी जो मुझसे भूल-चूक में हुए हों और उन्हें भी जिनको मैंने इरादे से किया हो और यह हर एक गुनाह मेरे पास है । ऐ अल्लाह, क्षमा कर अगले और पिछले वे सब गुनाह जो मैंने छिपकर किये और जो मैंने खुलकर किये और जिसके विषय में तू मुझसे अधिक जानता है । तू ही आगे बढ़ाने वाला है और तू ही पीछे डालने वाला है और तुझे हर चीज़ पर पूर्ण सामर्थ्य प्राप्त है ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

हज की महत्ता

कुरआन में है : लोगों पर अल्लाह का हक़ है कि जो व्यक्ति इस घर (काबा) तक पहुंच सकता हो वह इसका 'हज' करे और जिस किसी ने 'कुफ़्र' की नीति अपनायी तो (वह जाने ले कि) अल्लाह सारे संसार से बेपरवाह है'' (कुआन, 3 : आले इमरान : 97) हज के लिए जाना वास्तव में अल्लाह की पुकार पर दौड़ना है । अल्लाह के आमंत्रण पर उसकी सेवा में हाज़िरी देना है । इसलिए सामर्थ्य रखने पर भी जो व्यक्ति हज नहीं करता वह वास्तव में अल्लाह से मुंह फेरे हुए है । अल्लाह से मुख मोड़कर मनुष्य स्वयं अपने साथ अन्याय करता है, इससे अल्लाह का कुछ नहीं बिगड़ता । अल्लाह ने 'काबा' को सर्वथा भलाई, बरकत और सारे संसार के मार्गदर्शन का केन्द्र बनाया है । यह 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) का केन्द्र है । हज़रत इबराहीम (अलैहि०) और उनके बेटे हज़रत इस्माईल (अलैहि०) ने इस घर का निर्माण अल्लाह के आदेश से किया था । इस निर्माण का स्थान भी अल्लाह ही ने निश्चित किया था । इस घर को अपना घर कहकर अल्लाह ने इसकी महानता और महत्त्व को बढ़ा दिया है और संसार में इसे केन्द्रीयता प्रदान की है । हज़रत इबराहीम (अलैहि०) वह पहले नबी हैं जिन्हें अल्लाह ने सारे संसार का इमाम बनाया । हज़रत इबराहीम (अलैहि०) को आदेश दिया कि वे लोगों में सामान्य रूप से हज की घोषणा कर दें ताकि जो लोग एक अल्लाह की बन्दगी और दासता स्वीकार करें वे सब के सब इस केन्द्र से संबंध स्थापित कर लें । साल में एक बार हज के लिए यहां एकत्र हों और इस घर का तवाफ़ (परिक्रमा) करें । सब मिलकर अल्लाह की इबादत करें । कुरबानी करें, खुद भी खाएं और मुहताजों को भी खिलाएं । काबा एक ओर वास्तविक उपासनागृह और वास्तविक मस्जिद है, दूसरी मस्जिदें इसकी प्रतिनिधि हैं, दूसरी ओर इस घर के निर्माण के मौलिक उद्देश्यों में कमज़ोरों, मुहताजों और निर्धनों की सहायता करना भी सम्मिलित है । इस प्रकार काबा संपूर्ण दीन (धर्म) का केन्द्र सिद्ध होता है । इसके साथ किसी का संबंध वास्तव में अल्लाह के दीन (धर्म) के साथ संबद्ध होने का अर्थ रखता है । इस घर का हज करके मनुष्य विशुद्ध तौहीद का सन्देशवाहक बनकर लौटता है । उसमें यह भावना जाग्रत होती है कि वह तौहीद के संदेश को सारे संसार में फैलाए ।

हज एक पहलू से सबसे बड़ी 'इबादत' है । अल्लाह के प्रेम में मनुष्य अपना कारोबार और अपने अपने परिवार-मित्रों आदि को छोड़कर लंबी यात्रा पर निकलता है । फिर उसकी यात्रा साधारण यात्रा की तरह नहीं होती । इस यात्रा में वह अल्लाह की ओर ध्यान देता है । जैसे-जैसे अल्लाह का घर निकट आता जाता है उत्सुकता एवं प्रेम की अग्नि और अधिक भड़कती जाती है । वह अपने गुनाहों पर लज्जित होता है, सच्चे दिल से तौबा करता है और अल्लाह से प्रार्थनाएं करता है कि उसे अच्छे कर्म करने का सौभाग्य

प्राप्त हो । हिजाज़ के भू-भाग में प्रवेश करता है तो इस्लाम की सच्चाई और महानता का एहसास अत्यंत बढ़ जाता है । इस्लामी इतिहास निगाहों के सामने आ जाता है । हृदय पर अल्लाह, उसके धर्म की महानता और प्रेम ऐसा अंकित हो जाता है कि मरते दम तक मिट नहीं सकता । हज से संबंधित जितने कार्य हैं उन सबसे मनुष्य के हृदय पर 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) की ही छाप पड़ती है । हज के सिलसिले में सबसे पहला काम 'इहराम' बांधना है । 'इहराम' एक अत्यंत फ़क़ीराना वस्त्र है, जिसमें मनुष्य बस एक तहमद बांध लेता है, कंधों पर एक चादर डाल लेता है, सिर को नंगा रखता है । कोई राष्ट्रपति हो या प्रधानमंत्री या प्रतिष्ठित व्यक्ति या साधारण नागरिक सब के सब एक स्तर पर दीख पड़ते हैं । सारे अन्तर मिट जाते हैं इहराम की दशा में मनुष्य भोग-विलास और सज्जा और शृंगारिक वस्तुओं से परहेज़ करता है । इस 'इहराम' की हज में वही हैसियत है जो नमाज़ में 'तकबीर तहरीमा' की है । 'तकबीर तहरीमा' के द्वारा नमाज़ी एक नवीन वातावरण में पहुंच जाता है और कुछ समय के लिए वह अपने ऊपर कुछ प्रतिबंध लगा लेता है ।

जिस प्रकार सलाम के द्वारा मनुष्य नमाज़ से निवृत हो जाता है उसी प्रकार वह सिर का हलक़ कराके इहराम संबंधी पाबंदियों से मुक्त हो जाता है । 'इहराम' बांधने के पश्चात उसके मुख से ये शब्द निकलते हैं : "हाज़िर हूं, ऐ अल्लाह ! मैं तेरी सेवा में हाज़िर हूं, हाज़िर हूं, तेरा कोई सहभागी नहीं । मैं तेरी सेवा में हाज़िर हूं । निश्चय ही प्रशंसा तेरे ही लिए है । सारी कृपाएं एवं उपकार तेरे ही हैं, राज्य तेरा ही है, तेरा कोई सहभागी नहीं है ।" ये शब्द बताते हैं कि गुलाम अपने स्वामी की पुकार पर दौड़ता है और स्वामी का गुणगान करता हुआ चला आ रहा है । प्रत्येक 'नमाज़' के पश्चात हर ऊंचाई पर चढ़ते और हर नीचाई की ओर उतरते हुए और प्रत्येक प्रात:काल जागने के पश्चात उच्च स्वरों में इन्हीं शब्दों को दुहराता है । मक्का में प्रवेश करके काबा पहुंचता है । हज्रे असवद को चूमता और काबा का 'तवाफ़' (परिक्रमा) करता है । काबा के सात चक्कर लगाता है । फिर मक़ामे इबराहीम पर या 'मस्जिदे हराम' में किसी स्थान पर दो 'रक्अत नमाज़' अदा करता है । पुकार उठता है : "अल्लाहु अकबर !" (अल्लाह सबसे बड़ा है)। "ला इलाह इल्लल्लाह" (अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं) इसके बाद नबी (सल्ल०) पर 'दरूद' और सलाम भेजता है, और हाथ फैलाकर जो कुछ मांगना होता है अल्लाह से मांगता है । फिर नीचे आता है और सामने की दूसरी पहाड़ी पर 'मरवा' की ओर तेज़ क़दमों से चलता है जिसे 'सई' कहते हैं । ज़िलहिज्जा की सुबह को 'हरम' की सीमा से बाहर जाकर अरफ़ात के मैदान में लोग पड़ाव डालते हैं । फ़िर उसी संध्या को सारे लोग मुज़दलफ़ा जाकर ठहरते हैं । फिर 10 ज़िलहिज्जा को मिना लौट आते हैं । वहां दो या तीन दिन ठहरते हैं । इन दिनों में प्रत्येक तीन जमरों पर सात-सात बार 'तकबीर' के साथ कंकड़ियां मारते हैं । तीसरे दिन उन खंभों पर कंकड़ियां मारकर मक्का लौट आते हैं । और सात बार काबा का 'तवाफ़' (परिक्रमा) करते हैं । वह 'तवाफ़े विदा' कहलाता है । इस 'तवाफ़' के बाद हज से मनुष्य निवृत्त हो जाता है ।

भारत में बाल मज़दूर

भारतवर्ष में बाल-मज़दूर की पुरानी परंपरा है । यह परंपरा आदिकाल से चली आ रही है । राजा महाराजा का युग हो या विदेशी मुल्क के लोग हों, या वर्तमान लोकतंत्र युग हो । सभी काल में जनसंख्या के हिसाब से गणना ठीक ढंग से किया जाए तो देश के अन्दर पांच वर्ष के बच्चे से लेकर बारह से पंद्रह वर्ष के बच्चे तक अपने परिवार की गुलामी या श्रम से लेकर, फ़ैक्ट्री तक हज़ारों तरह के कार्य में लगे हैं ।

सनद रहे कि बड़े लोगों के घरेलू कार्य से लेकर लघु जनों के साथ सीमांत उद्योग में भी बाल-मज़दूर का धड़ल्ले से इस्तेमाल होता है । आज़ादी के छियासठवें वर्ष बीत गये, लेकिन आंकड़ा बता रहा है कि देश के अन्दर जितने बच्चे हैं, उनका अनुपात सही ढंग से निकाला जाए तो पाया जाएगा कि साठ प्रतिशत बच्चे बाल-मज़दूर की ज़िन्दगी जी कर अपना और अपने परविार का भरण-पोषण करते हैं ।

जबकि यह हमारे लोकतंत्र पर एक काला धब्बा है । यहां सरकार के साथ हमारे समाज के पौराणिक संस्कार की इस बनावट को पूर्ण रूप से लेखक दोषी मानता है ।

अब आइए, मैं अपने आंकड़े को सम्पुष्ट कर रहा हूं । सबसे पहले मैं घर के रिटायर बुजुर्ग के साथ कार्यरत नौजवान दोनों ही घर से बाहर तक का कार्य घर के बच्चों से कराते हैं । इस कार्य को घर के बड़े लोग संस्कार से जोड़ते हैं । और मज़े में उपदेश भी देते हैं कि वे बड़े-बूढ़ों की आज्ञा का पालन करना सीखें । खेल का भी मौक़ा घर में मिलना चाहिए । कुछ कमज़ोर आय वाले तो मात्र स्कूल में भेज शिक्षा की ख़ानापूर्ती करते हैं और उस बच्चे से घर या दुकान या घरेलू रोज़गार में हाथ बंटाने के लिए मजबूर करते हैं । इसे लेखक-घरेलू बाल-मज़दूर मानता है ।

आज रोड के दुकानदार से लेकर छोटे-छोटे उद्योग में भी बाल-मज़दूर का ही प्रयोग किया जाता है, क्योंकि बाल-मज़दूर से कम पैसे में मज़दूरी कराया जाता है और रोज़गार करने वाले को आर्थिक बचत होती है । बचत क्यों न हो, उसे नॉन स्केल में भी सही मज़दूरी नहीं मिलती वह ग़रीबी और अशिक्षा के साथ सामाजिक स्तर पर काफ़ी कमज़ोर होता है । उसे बालश्रम-क़ानून का भय दिखा चुपके से कुछ थमा दिया जाता है । सब से ज़्यादा रसूख़दार, ऊंचे ओहदे पर बैठा नौकरशाह ही तो बाल-श्रम का दोहन करता है ।

अगर कहीं पर छोटे नेता इस सवाल को सरकारी या मीडिया के माध्यम से उठाते हैं तो उसे लोग दबा देते हैं । बाल-श्रम वहीं उजागर होता है । जहां कम से कम दस बच्चे कार्यरत रहते हैं । सभी प्राइवेट गाड़ी-ख़ाने में हेल्पर के रूप में बाल श्रमिक ही होते हैं । काम सिखाने के नाम पर उनके श्रम का दोहन होता है ।

लघु उद्योग के कितने नाम गिनाए जाएं, सभी जगह अशिक्षित बाल-श्रमिक दिखाई देते हैं । यहां तक कि भीख मांगते बच्चे दिखाई पड़ते हैं, चाहे कारण जो हो । दोषी कौन है, यह आप भलीभांति जानते हैं ।

बालश्रमिक तो अप्राकृतिक यौनाचार का भी शिकार होता है । यह मामला जब तूल पकड़ता है, तब प्रकाश में आता है और उसे आप नागरिक जानते हैं । हमारे क़ानून पालक को नागरिक जानते हैं । हमारे क़ानून पालक को नज़राना लेने से फुर्सत कहां है कि वे इस बाबत ध्यान दें और अपनी ज़िम्मेदारी का निर्वहन करें।

सभी होटलों, चाय-दुकान में प्लेट-ग्लास धोते बाल-श्रमिक नज़र आ जाएंगे । हाथ की उंगलियां पानी से सड़ी रहती हैं, पर उसे देखता-सुनता-समझता कौन है । जिनको देखना है, वे हाज़री बना अपना वेतन भर लेना ही भगवान की कृपा समझते हैं, नौकरी मिलती कहां है । अगर मिल गई तो क़ानूनी पचड़े में फंसना कौन कर्मचारी चाहता है ।

आप अब समाज सेवी को लें जो रजिस्टर्ड हैं । वे भी सरकारी लाभ उठाने में बाबुओं का दरबार लगाते रहते हैं । और जनता का ख़ज़ाना ख़ाली करने में ही उनका मार्च से मार्च बीत जाता है । भला ग़रीब, असहाय कमज़ोर बाल-मज़दूर को सुनता-देखता कौन है ?

डॉ० विनय कुमार 'विष्णुपुरी'
शिला भवन, शिव शक्ति नगर,
बाज़ार समिति, पटना-800006

ईद की शुभकामनाएं

'कान्ति' मासिक जून 2015, ''रमज़ान मुबारक'' अंक पाकर मन अभिभूत हो गया । संपादकीय में रमज़ान के संदर्भ में 'आत्मिक विकास', विशेष आयोजन में 'शांति-सलामती का महीना', 'रोज़ा एक प्रशिक्षण मास', 'रमज़ान के रोज़े की मर्यादाएं, 'रमज़ान की महत्ता' जैसे आलेख उत्कृष्ट लगे । वैसे तो व्रत के निहितार्थ तो होने भी यही चाहिएं, भूखे रहकर अमर्यादित आचरण करें, या तरह-तरह की डिश बनाकर खाएं, दिन भर कुछ न खाते रहें उसपर रौब दिखाने के लिए व्रत की अलख जगाने का नाम व्रत नहीं है ।

दूसरे शब्दों में व्रत के अर्थ संकल्प से भी होता है । जब हम किसी भी शुभ दिन किसी अच्छे कार्य करने और बुरे का परित्याग करने की इच्छा को दृढ़ता से अमल में लाने लगते हैं वह भी व्रत से बढ़कर होता है । कहने का मेरा आशय यह है कि रमज़ान के रोज़े ही सही अर्थों के व्रत की परिभाषा रेखांकित करते हैं ।

फिर ईद का अमूल्य तोहफ़ा महीने भर के संयम, नियम, ईमान, शांति-अमन का ख़ूबसूरत उपहार है । मेरी तरफ़ से 'कान्ति' परिवार एवं पाठकों को हार्दिक शुभ कामनाएं चन्द लाइनों में अपेक्षित है–

रमज़ान के महीने में रोज़े फिर ईद का त्योहार
ख़ुशियां देते हैं दोनों साल में एक बार
जहां रोज़े संयम-नियम, प्रशिक्षण, सजदा,
नमाज़, ज़कात, आत्मिक विकास के प्रतीक हैं
वहीं ईद एकता, प्रेम-भाईचारा, मिलनसार
दुआएं, अमन-शांति, सामूहिकता के प्रारूप हैं
दोनों के निहितार्थ हैं ख़ुशियां ही ख़ुशियां
और आप की ख़ुशी में मेरी कोटिश बधाइयां ।

शशि प्रभा शर्मा
पन्नापुरी, हापुड़

प्रेरणा स्रोत है कान्ति

'कान्ति' का अप्रैल 2015 अंक पढ़ा । कोटि-कोटि धन्यवाद । पत्रिका का उज्ज्वल भविष्य 24 बर्षों का प्रकाशन बता रहा है ।

'जीवन नहीं मरा करता है', गोपालदास नीरज, 'उपयोगी हैं फल और सब्ज़ियों के छिलके', आचार्य विनोवा भावे का सुप्रयास', 'यह पीढ़ी दर पीढ़ी अन्तर' आदि लेख बहुत अच्छे हैं । सम्मान समिति बैतुल द्वारा आप को अभिनन्दन पत्र मिलने पर बधाई ।

अंजलि रस्तोगी
अध्यक्ष-अरविन्द महिला विकास क्लब
मंढई चौक बदायूं

अनोखा प्रयोग

एक अनाथ और अत्यन्त ग़रीब छात्र एक प्रसिद्ध डॉक्टर के पास जाकर बोला डॉक्टर साहब मुझे पथरी है । जांच के बाद डॉक्टर बोला दो हज़ार जमा करा दो–आप्रेशन हो जाएगा । छात्र बोला मैं बहुत ग़रीब हूं और बेरोज़गार भी, मुझे नौकरी मिलने वाली ही है। नौकरी मिलने के उपरान्त मैं पूरा पैसा अदा कर दूंगा। डॉक्टर के लिए यह प्रस्ताव नया था फिर भी उन्होंने उसका आप्रेशन कर दिया । क़रीब दो साल बाद साभार सहित एक पत्र और दो हज़ार दो सौ रुपये का बैंक ड्राफ़्ट मिला । डॉक्टर के ख़ुशी से आंसू आ गये। डॉक्टर ने तुरंत एक हज़ार का ड्राफ़्ट बनवाया और उस छात्र को भेजा और पत्र लिखा – इस रक़म को जमा करा देना, तुम्हारा भविष्य सुरक्षित रहेगा । क्या ही अच्छा होता यदि हम भी हमारे समाज के ज़रूरतमन्दों का इसी प्रकार सहायता सहयोग करें तो ज़कात का मक़सद सफल होता नज़र आएगा ।

घेवरचन्द गोदीका
किशनपोल बाज़ार,
जयपुर, राजस्थान

हाशिमपुरा का ज़लज़ला

27 साल पुराना क़ातिलाना हमला या यूं कहें कि सामूहिक जनसंहार के दस्तावेज़ की कहानी आम आदमी

लेखकों एवं रचनाकारों से

''कान्ति'' में प्रकाशनार्थ जो रचनाएं हमें मिलती हैं, उनकी स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना अथवा रचनाओं की वापसी के लिए अपना पता लिखा लिफ़ाफ़ा डाक टिकट सहित अवश्य भेजें । इसके अभाव में रचनाओं के विषय में हम आपको जानकारी देने में असमर्थ हैं । ध्यान रहे कि पर्याप्त डाक टिकट लगाकर प्रकाशनार्थ सामग्री भेजें, ताकि डाक, बैरंग न हो । आशा है, आपका सहयोग मिलता रहेगा । -संपादक

की ज़ुबान पर से हटती नहीं है । केवल समाज के उस वर्ग को ही दफ़न होना पड़ा जिसने 27 साल पहले बाबरी मस्जिद को टूटती हुई देखा था क़ुसूर सिर्फ़ इतना है कि कोई इन्सान अपने धर्म की रक्षा की गुहार लगाता है तो उसे ऐसी मौत दी जाती है जिसका की अदालती कार्यवाही में कोई पुख़्ता सबूत ना मिल पाए । पूरे भारत की पत्रकारिता ने हाशिमपुरा के ज़लज़ले की हक़ीक़त को उजागर किया परन्तु इन्सानियत को मौत ही मिली । जिसकी क़तई उम्मीद नहीं थी ।

डॉ॰ जसवंत सिंह जनमेजय
कटवारिया सराय, दिल्ली

'बच्चों में कैसे हो सद्‌गुणों का विकास' ?

''कान्ति'' मासिक के 25 वें वर्ष में प्रवेश करने पर समस्त 'कान्ति' परिवार को हार्दिक शुभ कामनाएं 'कान्ति' उन्नति के शिखर पर निरंतर आगे बढ़ती जाए यही मंगल कामना है ! 'ईद' की आप सबको मुबारकबाद !

आजकल के बच्चे टी॰वी॰, मोबाइल, इंटरनेट, वीडियो-गेम में रम कर अपना अमूल्य जीवन पतन की ओर धकेल रहे हैं । बचपन व्यर्थ गंवा रहे हैं । हिंसक और संवेदनशील बन रहे हैं । छोटे-छोटे नन्हें बच्चे दुष्कर्म करने लगे हैं । ऐसा क्यों हो रहा है ? इस पर विचार करने की आवश्यकता है । पहले मां-बाप बच्चों को अच्छी शिक्षा पर ज़ोर देते थे । उन्हें उच्चकोटि का साहित्य उपलब्ध कराते थे । उच्चकोटि के साहित्य से उन्में सद्‌गुणों का विकास होता था । महापुरुषों की जीवनियां पढ़ने को देते थे । हमें फिर से बच्चों में ऐसे संस्कार डालने होंगे मोबाइल, इंटरनेट से उनका बचपन दूर करना होगा । तभी भारत महान और हमारे बच्चे संस्कार वाले बन सकेंगे ।

यशपाल जैन 'आदर्श'
494/5, राजापार्क, जयपुर
राजस्थान-302004

बिल्डिंग माफ़िया

शहरों में कुछ बिल्डरों द्वारा बहुमंज़िला इमारतों में बहुत-सी धांधलियां की जा रही हैं । जिनमें कहीं लोहे की मोटाई कम रखी जाती है तो कहीं सीमेंट का अनुचित मिश्रण किया जाता है । ऊपर से आवश्यक पानी की तराई भी नहीं की जाती । और तो और ट्यूबवेल के समीप ही उसी इमारत की सीवर लाइन के चेंबर बना दिये जाते हैं, जिस कारण ट्यूबवेल का उपयोगी जल दूषित एवं स्वास्थ्य के लिए घातक बन जाता है । प्रशासन सहभागी बन कभी औचक निरीक्षण द्वारा उसकी बंदिश से दूर रहता है । अन्यथा उसके अधिकारी मौक़े पर पहुंच कर ऐसी इमारतों को ध्वस्त करा सकते थे ।

अब जबकि सभी के लिए मकान की कार्य योजना को महाराष्ट्र शासन द्वारा आरंभ किया जाना है इस बाबत उसे सोचना चाहिए कि निर्मित मकान तथाकथित बिल्डर्स की भांति न तैयार हो जाएं कि असहाय ग़रीबों पर टूटकर उनकी जाने ले लें ।

मलिक, नागपुर

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

www.kanti.in

प्रचार-प्रसार मुहिम के लिए विशेष छूट

मासिक कान्ति के प्रचार-प्रसार हेतु एक मुहिम शुरू की गयी है जिसके तहत कोई भी व्यक्ति 'मासिक कान्ति' के 5 नये ख़रीदार बनाता है तो उसे मुफ़्त में एक और ख़रीदार बनाने की छूट होगी । इस अवसर से लाभ उठाने के लिए एक साथ एक हज़ार एक सौ रुपये (Rs. 1100/-) सीधे कान्ति के कार्यालय में जमा करने होंगे । प्रचार-प्रसार की यह मुहिम आगामी कुछ महीनों तक चलती रहेगी । मासिक कान्ति के पाठक इस विशेष छूट का लाभ उठाने के लिए अपने-अपने इलाक़ों में अपने सगे-संबंधियों एवं अन्य साथियों को प्रेरित कर सकते हैं । विस्तार से जानने के लिए सम्पर्क करें :

मैनेजर

मासिक कान्ति

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
जामिया नगर, नई दिल्ली-110025
09818799223, 011-26949430
E-mail : kanti hindimonthly@yahoo.com

कोलकाता में क़याम के लिए उमदा रिहाइश का मर्कज़

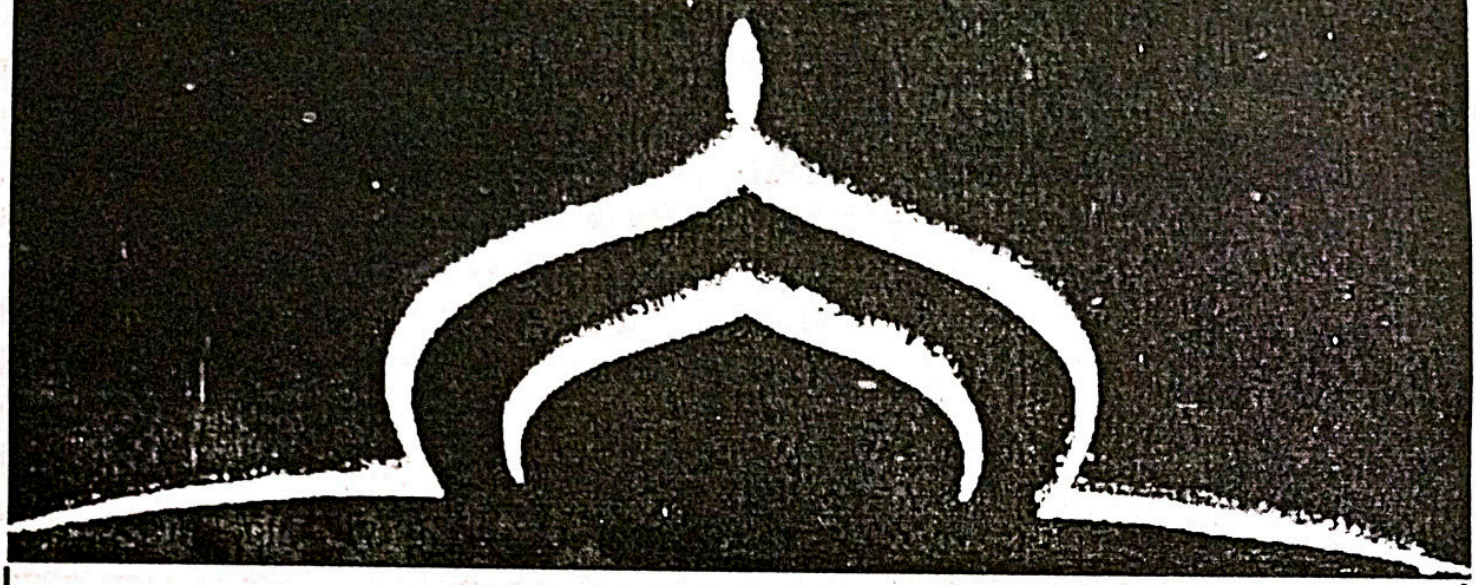

HOTEL AL-FALAH

Ph. : 033-22837901 , Cell : 9836015030
E-mail : hotelal_falah@hotmail.com

A/c Rooms & Non A/c Rooms
With
Attatch Bath Rooms

कोलकाता के शहर के दामन में (पार्क सर्कस) मुनासिब दामों पर रिहाइश का माक़ूल इन्तिज़ाम

एक बार ख़िदमत का मौक़ा ज़रूर दें।

83, Fazlul Haque Sarani, Kolkata - 700 017
WEST BENGAL

डॉ॰ कलाम को श्रद्धांजलि



सहयोग सीनियर सिटीज़न वेलफ़ेयर एसोसिएशन डी॰डी॰ए॰ फ़्लैट पेन्ज़-2, कटवारिया सराय, नयी दिल्ली द्वारा सेंट्रल पार्क में पूर्व राष्ट्रपति एवं मिसाइल मैन डॉ॰ ए॰पी॰जे॰ कलाम साहब को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करके उनके कृत्यों एवं वैज्ञानिक योगदान को सराहा गया ।

डॉ॰ कलाम साहब ने बचपन से लेकर वृद्ध अवस्था तक शिक्षा शास्त्र को सदैव क़ायम रखा उन्होंने बच्चों को वैज्ञानिक बनने के लिए प्रेरणा दी अंतिम सांस तक उन्होंने मेघालय के शिलांग में आइ॰एम॰एम॰ के बच्चों को विज्ञान की अच्छी-अच्छी बातें बताईं । सहयोग संस्था के वृद्ध सहयोगी श्री शंभू श्रीवास्तव (सेवा निवृत्त जे॰एन॰यू॰) ने डॉ॰ कलाम साहब की सादगी एवं नियमित कार्य की क्षमता की भूरि-भूरि प्रशंसा की उन्होंने कहा डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद पूर्व राष्ट्रपति भी सदैव सीधा सादा जीवन जीते रहे उन्होंने राष्ट्रपति भवन के अन्य प्रकार के ख़र्चों पर भी प्रतिबंध लगा दिया था ।

सहयोग संस्था के प्रधान श्री सोम प्रकाश शर्मा ने डॉ॰ कलाम की शैक्षणिक प्रकृति एवं विज्ञान की खोज तथा देश को 2020 तक संपूर्ण विकास की अवधारणा को क़ायम रखने के संबंध में प्रशंसा की । सहयोग संस्था के संयुक्त सचिव डॉ॰ जसवंत सिंह जनमेजय ने सभी साथियों को सलाह दी कि हम सभी वरिष्ठ नागरिकों को कॉलोनी के बच्चों की पढ़ाई की तरफ़ अधिक ध्यान देना चाहिए । हम लोग सुबह और शाम को बच्चों को अनेक विषय से कॉलोनी में से एक बच्चा डॉ॰ ए॰पी॰जे॰ कलाम जैसा बनकर राष्ट्र का गौरव बढ़ाएगा । संस्था की ओर से सभी सदस्यों ने 2 मिनट का मौन धारण किया कि डॉ॰ कलाम साहब की आत्मा को सदैव सुख शांति मिले । रामेश्वरम का भारत रत्न हमेशा अमर रहे । ऐसी हम सभी की कामना आकांक्षा है ।

डॉ॰ जसवंत सिंह जनमेजय
कटवरिया सराय, नयी दिल्ली

डॉ॰ यायावर सम्मानित

श्रीनाथद्वार की राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संस्था 'साहित्य मंडल' ने पाटोत्सव ब्रजभाषा महोत्सव सम्पन्न किया । इस समारोह में डॉ॰ रामस्नेहीलाल शर्मा 'यायावर' को उनकी ब्रजभाषा और साहित्य की सेवा के उपलक्ष में 'ब्रजभाषा-विभूषण' की उपाधि प्रदान की गयी ।

डॉ॰ यायावर ने वहां आयोजित समस्यापूर्ति (1) विट्ठलनाथ बखानी (सवैया) (2) धारे हैं' एवं 'विट्ठल आज आयो रे' (कविता) एवं (3) भयी अब गिरधर सों पहचान (गीत एवं पद) में भी भागीदारी की । स्मरणीय है कि डॉ॰ यायावर की 20 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें अनहदनाद बंसुनिया कौ' ब्रजभाषा के गीतों और ग़ज़लों का संग्रह है ।

कविता

प्रधानमंत्री जी को संबोधित

माननीय प्रधानमंत्री जी !
सांसद आदर्श ग्राम योजना के तहत
गांवों में
सड़क, बिजली, पानी,
पाठशाला और चिकित्सालय सहित आवास होना है
इसे ही अनिवार्य विकास को आदर्श माना है ।
किन्तु,
सांसद आदर्श ग्राम योजना में
सामाजिक समानता, समरसता
और
धार्मिक सौहार्दता का न कोई प्रावधान है
शायद यह विकास की परिभाषा में नहीं आया
शायद इसलिए आपका ध्यान इस ओर नहीं गया ।

जयप्रकाश वाल्मीकि
14, वाल्मीकि कॉलोनी, द्वारिकापुरी के पास,
शास्त्रीनगर, जयपुर (राज॰)

हमारी नई पुस्तकें

सर्वधर्म समभाव और इस्लाम धर्म	शोबा-ए-दावत	30.00
हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की बेटियँ	तालिब हाशिमी	22.00
झाड़-फूँक इस्लाम की रौशनी में	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	16.00
इस्लाम कैसे फैला?	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	36.00
कुव्वत का असल राज़	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
तलख़ीस तफ़हीमुल कुरआन (सूरा यासीन)	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	20.00
इस्लाम की पारिवारिक व्यवस्था	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	100.00
इस्लामी पारिभाषिक शब्द	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	18.00
सूफी बुज़ुर्गों की अनमोल बातें	मुहम्मद फारूक ख़ां	20.00
अध्यात्म का महत्व और इस्लाम	मुहम्मद फारूक ख़ां	20.00
आत्मा और परमात्मा	मुहम्मद फारूक ख़ां	24.00
सफलता और मुक्ति का एक ही रास्ता	मुहम्मद फारूक ख़ां	24.00
नफ़्स का तज़किया और हम	मुहम्मद फारूक ख़ां	24.00
मुक्ति की धारणा और इस्लाम	मुहम्मद फारूक ख़ां	26.00
कुरआन पर अमल	सुमय्या रमज़ान	75.00
विशुद्ध एकेश्वरवाद	मुहम्मद यूसुफ इस्लाही	24.00
हक़ की दावत और ग़ैर मुस्लिम	मतीन तारिक बाग़पती	16.00
रहमत ही रहमत	अश-शैख़ अताउल्लाह कुरेजा	66.00
ब्याज का हराम होना	डॉ० मुहम्मद उमर छापरा	32.00
मीरास का बँटवारा और उसके हक़दार	मिर्ज़ा सुबहान बेग	26.00
इस्लामः दयालुतापूर्ण ईश्वरीय धर्म	डॉ० फ़रहत हुसैन	28.00

MARKAZI MAKTABA ISLAMI PUBLISHERS

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
Phone: 26981652, 26984347, Fax: 26987858
E-mail: mmipublishers@gmail.com Website: www.mmipublishers.net

नारी और क़ुरआन

■ डॉ॰ फ़रहत हुसैन

महिलाएं हमारा आधा संसार हैं । दुर्भाग्य से उनके मामले में पुरुष प्रधान समाज संतुलित दृष्टिकोण नहीं अपना सका । कभी उसे 'पाप जननी' 'नरक का द्वार' 'मूर्ख' 'कुमार्गगामी बनाने वाली' कहा गया । कभी नारी स्वतंत्रता के नाम पर उसे उसके कर्मस्थल, घर परिवार, से निकालकर क्लब, फ़ैक्ट्री, सिनेमा और राजनीति में पहुंचाया तथा दोहरा शोषण किया । इस्लाम ने नारी के प्रति पूर्ण संतुलित एवं स्वाभाविक दृष्टिकोण अपनाया । उसके कलंकों को धोया, उसे सम्मानजनक स्थान पर आसीन किया, उसकी इज़्ज़त आबरू की रक्षा की उसे आर्थिक अधिकार प्रदान किए । उसके घर को उसकी वास्तविक कर्मस्थली बताकर उसे बाहरी जगत के दबाव, तनाव और पीड़ाजनक भागदौड़ से मुक्ति दिलायी ताकि वह एकाग्र मन से नयी नस्ल को संवार सके । क़ुरआन की इस विषय से संबंधित मुख्य आयतों (उद्धरणों) के अनुवाद को यहां प्रस्तुत किया जा रहा है । अधिक जानकारी के लिए पवित्र क़ुरआन, हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के कथनों तथा इस्लामी इतिहास का अध्ययन उचित होगा ।

इस्लाम ने नारी के प्रति पूर्ण संतुलित एवं स्वाभाविक दृष्टिकोण अपनाया । उसके कलंकों को धोया, उसे सम्मानजनक स्थान पर आसीन किया, उसकी इज़्ज़त आबरू की रक्षा की उसे आर्थिक अधिकार प्रदान किए । उसके घर को उसकी वास्तविक कर्मस्थली बताक़र उसे बाहरी जगत के दबाव, तनाव और पीड़ाजनक भागदौड़ से मुक्ति दिलायी ताकि वह एकाग्र मन से नयी नस्ल को संवार सके ।

● नारी सुख शन्ति तथा प्रेम की प्रतीक

"ईश्वर ने तुम्हारे लिए स्वयं तुम ही में से जोड़े पैदा किए ताकि तुम उनके पास सुख चैन पाओ, तथा तुम्हारे बीच प्रेमभाव तथा दयालुता रख दी ।" (30:21)

● स्त्री पुरुष की वस्त्र से उपमा

"तुम्हारी पत्नियां तुम्हारे लिए वस्त्र समान हैं और तुम भी उनके लिए वस्त्र समान हो ।" (2:187)

आशय यह है कि पति-पत्नी वस्त्र की भांति एक दूसरे के लिए शोभा, सहायक और बुराई के प्रति कवछ हैं ।)

● समान अधिकार

"महिलाओं के भी वैसे ही अधिकार हैं, जैसे उनके प्रति पुरुषों के हैं, हां पुरुषों को उनके ऊपर एक दर्जा प्राप्त है ।" (2:228)

समान अधिकार देते हुए पारिवारिक प्रबंध व्यवस्था के लिए पुरुष को घर के मुखिया के नाते मात्र एक श्रेणी की उच्चता दी है । पुरुष को स्त्री का स्वामी और स्त्री को दासी नहीं बनाया । एक-दूसरे स्थान पर संरक्षक बताया गया है-

"मर्द औरतों के संरक्षक हैं क्योंकि ईश्वर ने उन्हें अधिक (सामर्थ्य) दिया है तथा इसलिए भी कि वे अपना माल ख़र्च करते हैं ।"

● जायदाद में हिस्सा

"पुरुषों का उस माल में हिस्सा है जो उनके माता पिता तथा नातेदारों ने छोड़ा हो और स्त्रियों का भी उसमें हिस्सा है जो उनके माता पिता तथा नातेदारों ने छोड़ा हो ।" (4:07)

● महर (विवाह धन) की प्राप्ति

"विवाह के समय स्त्रियों को उनका महर निश्चित रूप से अदा करो...।" (4:04)

विवाह के समय पारस्परिक सहमति से तय की गयी रक़म पति द्वारा पत्नी को देना अनिवार्य है । जायदाद के अधिकार, यह महर की प्राप्ति आदि से नारी आर्थिक रूप से स्वाबलंबी रहती है ।

● मां का रुतबा

"हमने इंसान को ताकीद की कि वह अपने माता-पिता

से उत्तम व्यवहार करे । उसकी मां ने कष्ट पर कष्ट सहन कर उसे गर्भ में रखा और पीड़ा के साथ उसे जना..."

(46:15, 31:14)

● बेटी के जन्म पर अप्रसन्नता व्यक्त करने की निन्दा

"जब उनमें से किसी को कन्या शिशु के जन्म की ख़ुशख़बरी दी जाती है तो उसके चेहरे पर कलौंस छा जाती है और वह दुख से घुटने लगता है ।" (16:58)

यहां इस्लाम ने पूर्व अरबवासियों की बेटियों के बारे में सोच का चित्रण किया है जिसे इस्लाम ने पूर्णता से बदल दिया और कन्या के जन्म को शुभ समझा जाने लगा ।

● शिशु हत्या-कन्या हत्या जघन्य अपराध

"निर्धनता के डर से अपनी औलाद को क़त्ल न करो हम उन्हें भी आजिविका प्रदान करते हैं और तुम्हें भी । वास्तव में उनकी हत्या एक जघन्य अपराध है ।" (17:31)

कन्या शिशु से छुटकारा पाने की समाज की कुप्रथा भी अपराध है जो इस्लाम पूर्व अरब समाज में व्याप्त थी भारत में आज भी पायी जाती है हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने कठोर शब्दों में इसकी निन्दा की तथा बेटियों के पालन पोषण को पुण्य का कार्य बताया। कन्या शिशुओं से छुटकारा पाने के लिए भ्रूण परीक्षण कराकर गर्भपात कराने का चलन बढ़ रहा है इस्लाम इस कृत्य को भी जघन्य अपराध मानता है । कन्या वध के मामले में कहा गया–

"उस समय को याद करो जब ज़िन्दा दफ़न की गयी कन्या से पूछा जाएगा कि किस क़ुसूर में तुझे मार डाला गया ।" (8:8-9)

अपराध इतना क्रूरतापूर्ण और स्पष्ट है कि अपराधी से कुछ पूछने के बजाए क़यामत में उसी बच्ची से कहा जाएगा कि तेरा क़ुसूर क्या था, मात्र यह कि तू एक कन्या थी ।

● झूठा लांछन लगाने वाला कठोर दंड का भागी

"जो लोग पाकदामन औरतों पर दोषारोपण करें परन्तु चार गवाह प्रस्तुत न कर सकें उनके अस्सी कोड़े लगाओ और कभी उनकी गवाही स्वीकार न करो, वहीं अवज्ञाकारी हैं ।" (24:4)

इस्लामी क़ानून में सामान्यतया दो व्यक्तियों की गवाही पर्याप्त मानी जाती है इसलिए क़ुरआन के अध्याय 4 आयत 15 द्वारा इसके लिए चार गवाहों का प्रावधान किया गया । गवाहों के अभाव में यदि मुक़दमे की फ़ाइल यूं ही बन्द कर दी जाए तो आरोपित महिला पर बदनामी का दाग़ बना रहता है । इसलिए उपरोक्त क़ानून द्वारा झूठे लांछन के विरुद्ध नारी की अति उत्तम सुरक्षा की गयी ।

● चरित्र हनन निन्दनीय कार्य

"जो लोग पाकदामन भोली-भाली ईमानवाली औरतों के चरित्र पर झूठा लांछन लगाते हैं उनपर धिक्कार है दुनिया में और परलोक में, तथा उनके लिए घोर यातना है ।" (24:23)

"जो लोग ईमान वाले पुरुषों तथा स्त्रियों पर झूठे लांछन लगाकर उन्हें दुख पहुंचाते हैं उन्होंने अपने को इस लांछन और खुलेपाप के बोझ का अधिकारी बना लिया है ।" (33:58)

समान अधिकार देते हुए पारिवारिक प्रबंध व्यवस्था के लिए पुरुष को घर के मुखिया के नाते मात्र एक श्रेणी की उच्चता दी है । पुरुष को स्त्री का स्वामी और स्त्री को दासी नहीं बनाया ।

● स्त्रियां खेती की भांति

"तुम्हारी स्त्रियां तुम्हारी खेतियां हैं । तुम्हें अधिकार है जिस प्रकार चाहो अपनी खेती में जाओ, मगर अपने भविष्य की चिन्ता करो और ईश्वर की अप्रसन्नता से बचो ।" (2:223)

● मासिक धर्म

"पूछते हैं–मासिक धर्म के बारे में क्या आदेश है ? कहो वह एक गन्दगी की दशा है, उसमें अपनी पत्नियों से अगल रहो जब तक कि वे स्वच्छ न हो जाएं ।" (2:222)

● वैचारिक सामंजस्य ज़रूरी

तुम मुशिरक (बहुदेववादी । स्त्रियों से कदापि विवाह न करना जब तक कि वे ईमान न ले आएं । एक आस्थावान दासी मुशरिक कुलीन महिला से बेहतर है चाहे वह तुम्हें पसन्द हो । और अपनी स्त्रियों का विवाह बहुदेववादी पुरुषों से कभी न करना जब तक कि वे ईमान न ले आएं । एक ईमानवाला गुलाम मुशरिक पुरुष से बेहतर है, यद्यपि वह तुम्हें

बहुत प्रिय हो ।" (2:221)

आस्था के आधार पर मतभेद दाम्पत्य जीवन के आनन्द को कड़वाहट में बदले देते हैं इसिलए मानव स्वाभानुकूल ही उपरोक्त आदेश दिया गया है ।

● तलाक़ अन्तिम उपाय के रूप में

"जो लोग अपनी पत्नियों से न मिलने की क़सम खा बैठें उनके लिए अधिकतम चार महीने की मोहलत है । फिर यदि वे मेल कर लें तो अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील और दयावान है । और यदि वे तलाक़ की ठान लें तो अल्लाह सुनने और जानने वाला है ।" (2:266, 227)

पति-पत्नी में गंभीर मतभेद हो जाए तो मेल कराने और पंचनिर्णय की प्रक्रिया कुरआन में बतायी गयी है । जिसमें दोनों ओर के प्रतिनिधि फ़ैसला करते हैं (देखें 4 : 35) । मेल न होने की दशा में तलाक़ एक अन्तिम उपाय के रूप में है । औरत को भी तलाक़ लेने का अधिकार प्राप्त है । (देखें 2:229) अगर तलाक़ देनी हो तो पूर्ण विचार करके उसकी निर्धारित प्रक्रिया अपनाकर दी जाए । अन्तिम उपाय को शुरू में ही जल्दबाज़ी में प्रयुक्त करना अनुचित है ।

● महिलाओं के प्रति अपराधों की रोकथाम की व्यवस्था

● "हे नबी ईमान वाले मर्दों से कह दीजिए कि वे अपनी दृष्टि बचाकर रखें और अपनी इन्द्रियों की रक्षा करें...और ईमान वाली औरतों से कह दीजिए कि वे भी अपनी निगाहें बचाकर रखें और अपनी इन्द्रियों की रक्षा करें और अपने श्रृंगार का प्रदर्शन न करें सिवाय उसके जो स्वयं प्रदर्शित हो जाए, और अपने सीने पर अपनी ओढ़नी डाले रखे, और अपने पांव ज़मीन पर मारती हुई न चला करें कि जो श्रृंगार उन्होंने छिपा रखा है वह प्रकट हो जाए ।"

(24:33-31)

महिलाओं के विरुद्ध अपराधों का मुख्य कारण लोगों में संयम का अभाव तथा औरतों का बन ठनकर अपनी सुन्दरता की नुमाइश है, यहां इसी से रोका गया है ।

"अपने घरों में ठहरो शालीनता के साथ और अज्ञानकाल की भांति अपनी सज-धज दिखाती न फिरो ।" (33:33)

"हे नबी अपनी पत्नियों, पुत्रियों तथा अन्य आस्थावान स्त्रियों से कह दीजिए कि जब वे बाहर निकलें तो अपनी चादरों के पल्लू अपने ऊपर लटका लिया करें ताकि (कुलीन व सम्मानित स्त्रियों के रूप में) पहचान ली जाएं और सतायी न जाएं ।" (33:59)

"जब उनसे कोई चीज़ मांगो तो परदे के पीछे से मांगो, यह तुम्हारे व उसके दिलों की शुद्धता के लिए है ।" (33:53)

"(जब किसी बाहरी व्यक्ति से बात करनी हो तो) खुर्रे स्वर में साफ़ बात करो ताकि यदि उस व्यक्ति के मन में खोट हो तो वह तुम्हारी ओर से किसी भ्रम में न पड़े ।" (33:32)

"ईमान वालो तुम अपने घरों के अतिरिक्त दूसरों के घरों में अनुमति के बग़ैर प्रवेश न करो ।" (24:27)

"व्यभिचार के निकट भी न जाओ यह अशलील कार्य और अत्यन्त बुरा मार्ग है ।" (17:32)

"अपनी दासियों को संसारिक लाभ हेतु वेश्यावृत्ति पर मजबूर न करो ।" (24:32)

नारी स्वतंत्रता, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, सेक्स एजुकेशन आदि के नाम पर जो अशलीलता फैलाई जा रही है उसके परिणामस्वरूप महिलाओं और किशोरियों के विरुद्ध जघन्य अपराधों में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है । फ़िल्मों, टी॰वी॰ कार्यक्रमों तथा विज्ञापनों में अशलीलता पर सुप्रीमकोर्ट ने भी आपत्ति जतायी है । इस परप्रेक्ष्य में उपरोक्त कुरआनी संदेश/निर्देश/आदेश बहुत प्रासंगिक हैं ।

● दाम्पत्य जीवन में व्यावहारिकता न कि भावुकता

स्त्रियों के साथ अच्छे ढंग से जीवन यापन करो। यदि तुम्हें वे नापसन्द हों तो हो सकता है कि एक चीज़ तुम्हें पसन्द न हो मगर अल्लाह ने उसमें बहुत भलाई रख दी हो ।" (4:19)

● एक से अधिक पत्नियों की सशर्त अनुमति

"...तो स्त्रियों में से जो तुम्हारे लिए जायज़ हों दो-दो, तीन-तीन, चार-चार तक विवाह कर लो । परन्तु यदि तुम्हें डर हो कि न्याय न कर सकोगे तो फिर एक ही पत्नी पर बस करो ।" (4:03)

युद्ध आदि में पुरुषों की संख्या कम होना, पत्नी की शारीरिक अक्षमता, बांझपन, पुरुष की असाधारण परिथिति अर्थात किसी हंगामी आवश्यकता के लिए बहुपत्नीत्व की अनुमति न्याय की शर्त के साथ दी गयी है । इन आदेशों से पूर्व अनगिनत पत्नियों का रिवाज था उसे समाप्त करके अधिकतम सीमा चार निश्चित कर दी गयी ।

M/s. ABBAS SOAP FACTORY

77/2, Topsia Road (South)
KOLKATA - 700 046

अगर कोई अपने ब्रांड के नाम से माल बनवाना चाहते हैं तो भी राबिता क़ायम करें।

PRODUCTS

- ✓ WASHING POWDER
- ✓ TOILET SOAP
- ✓ WASHING SOAP
- ✓ DETERGENT POWDER
- ✓ BATH SOAP

Contact For Business
For
Agency & Distributor Ship

M : 08100226137 (Mohd. Abbas)
M : 09831496237 (Mohd. Khalid)
M : 08981605834 (Mohd. Khalid)

शिक्षक के गुण

■ अफ़ज़ल हुसैन

विद्यार्थियों के शिक्षा-प्रशिक्षण में शिक्षक के अपने व्यक्तित्व की भूमिका सबसे महत्त्वपूर्ण होती है । विद्यार्थी जाने-अनजाने शिक्षकों से बराबर प्रभावित होते रहते हैं और यह प्रभाव इतना गहरा होता है कि जीवन भर साफ़ तौर से महसूस किया जा सकता है ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का व्यक्तित्व मानवता लिए नमूना है, इसलिए शिक्षकों को नबी (सल्ल०) के व्यक्तित्व के निम्नलिखित पहलुओं को विशेष रूप से सामने रखना चाहिए ताकि वे उनकी रोशनी में अपने व्यक्तित्व को ढाल सकें और अपना चरित्र छात्रों के समक्ष प्रस्तुत कर सकें ।

आप (सल्ल०) का व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक और प्रभावी था, जो देखता आप की ओर खिंचता और आप का इशारा पाकर अपना सब कुछ न्योछावर करने को तैयार रहता । शिक्षकों को भी अपने भीतर इन गुणों की झलक लानी चाहिए ताकि छात्र उनसे विदकने के बजाय उनके पास आएं, ध्यान से उनकी बातें सुनें और शिक्षक का प्रभाव ग्रहण करें इन विशेषताओं के बिना शिक्षक अपना दायित्व ठीक ढंग से नहीं निभा सकता ।

जीवन के हर छोटे बड़े मामले में आप (सल्ल०) का तरीक़ा अनुकरणीय है । आप (सल्ल०) का पूरा जीवन एक खुली हुई पुस्तक है, कुछ भी गुप्त नहीं है । जिन बातों की, आप (सल्ल०) शिक्षा देते उनका स्वयं भी पालन करते । विद्यार्थी भी शिक्षक की बातों से अधिक उसके व्यवहार का अनुकरण करते हैं, इसलिए शिक्षक को भी अपने जीवन के सभी पहलुओं पर बराबर नज़र रखनी चाहिए ताकि विद्यार्थियों को अनुकरण के लिए अच्छा नमूना मिले ।

जीवन के हर छोटे बड़े मामले में आप (सल्ल०) का तरीक़ा अनुकरणीय है । आप (सल्ल०) का पूरा जीवन एक खुली हुई पुस्तक है, कुछ भी गुप्त नहीं है । जिन बातों की आप (सल्ल०) शिक्षा देते उनका स्वयं भी पालन करते । विद्यार्थी भी शिक्षक की बातों से अधिक उसके व्यवहार का अनुकरण करते हैं, इसलिए शिक्षक को भी अपने जीवन के सभी पहलुओं पर बराबर नज़र रखनी चाहिए ताकि विद्यार्थियों को अनुकरण के लिए अच्छा नमूना मिले । दूसरी सूरत में शिक्षकों की ग़लतियों का दुष्प्रभाव तो पड़ेगा ही, ग़लत रवैये का जो प्रभाव छात्रों पर पड़ेगा उसका दोष भी शिक्षक पर होगा ।

आप (सल्ल०) का व्यक्तित्व ज्ञान और तत्वदर्शिता से परिपूर्ण था हरेक शिक्षक को ज्ञान और तत्वदर्शिता से पूर्ण होना चाहिए, क्योंकि सही और पूर्ण ज्ञान के बिना विद्यार्थी को अच्छी शिक्षा नहीं दी जा सकती और तत्वदर्शिता के बिना सही ढंग से उनका प्रशिक्षण नहीं किया जा सकता है । प्रशिक्षण के काम के लिए बड़ी तत्व-दर्शिता चाहिए । शिक्षक को बराबर अपना ज्ञान बढ़ाते रहना चाहिए । ज्ञान के मामले में छात्र अपने शिक्षक को ही आदर्श समझते हैं । अगर शिक्षक को स्वयं अपने ज्ञान पर भरोसा न हो तो छात्रों का विश्वास टूटेगा । अगर किसी बारे में सही जानकारी न हो, तो ग़लत बातें बताने के बजाय अपनी अज्ञानता स्वीकार कर लेनी चाहिए । जानकारी प्राप्त कर बाद में विद्यार्थियों को बता देना चाहिए । इससे छात्रों का भरोसा बना रहेगा और शिक्षक झूठ बोलने से बचा रहेगा । हदीस में है कि–

"अगर किसी ने बिना ज्ञान के कोई बात बता दी तो उसका दोष बताने वाले पर होगा ।"

अल्लाह के नबी (सल्ल०) ने स्वयं कई सवालों के जवाब में अज्ञानता स्वीकार की है और जब अल्लाह की ओर से प्राकशना आई तो बता दिया ।

क्षमा करने और धैर्य से काम लेने में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) अपनी मिसाल आप थे । शिक्षकों को भी नादान बच्चों का सामना होता है, जिनसे हर समय ग़लतियों और भूलों की संभावना रहती है, इसलिए वही शिक्षक सफल हो सकता है, जिसमें ये गुण पाये जाते हों, चिड़चिड़े और गुस्सा करने वाले लोग कभी अच्छे शिक्षक नहीं बन सकते ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के शिष्टाचार और मिलनसारी का यह हाल था कि अपना, पराये, दोस्त, दुश्मन यहां तक कि उनसे भी जिन्हें आप पसन्द नहीं करते थे, उसके साथ भी बहुत शिष्टता का व्यवहार करते थे । सब से मुस्कराते हुए मिलते । शिक्षक को भी बहुत शिष्ट और मिलनसार होना चाहिए । शिक्षकों का भी हर तरह के लोगों से सामना होता है और उनके सहयोग की ज़रूरत होती है । इन गुणों के बिना वह अपना दायित्व नहीं निभा सकता ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की सीधी-सच्ची शिक्षाओं का जवाब नादानों ने ईंट, पत्थर से दिया, मगर आप अन्त तक उनके सुधार के प्रयास करते रहे और अन्ततः सफल हुए । शिक्षक को भी शिक्षण, प्रशिक्षण और सुधार की ओर से न तो निराश होना चाहिए और न विद्यार्थी और उनके अभिभावकों को निराश होने देना चाहिए ।

बलिदान, धैर्य और अल्लाह पर भरोसा रखने में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) अपनी मिसाल आप थे । शिक्षक को भी इस गुण से सुसज्जित होना चाहिए । जिसे संसार और सांसारिक सुख अधिक प्रिय हो, उसे इस क्षेत्र में नहीं आना चाहिए ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को ज़िम्मेदारी का एहसास इतना अधिक था और आप इतने लगन के साथ काम करते थे कि अल्लाह तआला ने खुद फ़रमाया, शायद आप अपने आपको इनके पीछे मार डालेंगे । शिक्षण-प्रशिक्षण बहुत ही कठिन कार्य है । शिक्षक भी इन गुणों के बिना अपना दायित्व अच्छी तरह नहीं निभा सकता ।

स्थिति चाहे कैसी भी जटिल हो नबी (सल्ल०) बड़ी तत्वदर्शिता से उसे सुलझा देते और हर पक्ष संतुष्ट हो जाता । शिक्षक को भी आये दिन कक्षा में और कक्षा के बाहर भी तरह-तरह के मामलों का सामना करना पड़ता है । अगर निपटने की योग्यता न हो तो शिक्षक को बड़ी कठिनाई होगी।

बच्चों से नबी (सल्ल०) को असाधारण स्नेह था उनकी बचकाना हरकतों की आप बहुत ज़्यादा अनदेखी करते थे । आप ने कभी किसी बच्चे को नहीं पीटा और मारने के लिए कहा भी तो आख़िरी उपाय के तौर पर । शिक्षक को भी अपने अन्दर ये गुण पैदा करना चाहिए ।

शिक्षक का स्वर

किसी पाठ का प्रभावी और सफल होना बहुत हद तक शिक्षक के स्वर पर निर्भर करता है । स्वर अगर आकर्षक और मीठा हो तो विद्यार्थी आसानी से आकर्षित होते हैं और पाठ में नीरसता या उकताहट महसूस नहीं करते । स्वर अगर कर्कश हो या शिक्षक अगर बहुत चीख़ कर बोले तो, कानों को बुरा लगता है, विद्यार्थी जल्दी उकता जाते हैं और थकान महसूस करने लगते हैं कर्कश स्वर से तो छोटे बच्चों पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ता है । वे डरे-सिहमे रहते हैं और शिक्षक की बात पर बिल्कुल ध्यान नहीं दे पाते ।

शिक्षक के स्वास्थ्य के लिए भी चीख़ना-चिल्लाना हानिकारक है । गला भी ख़राब हो जाता है और फ़ेफ़ड़े भी बहुत जल्दी प्रभावित हो जाते हैं । इसी तरह अधिक बोलना और ज़रूरत के बिना बोलना बातों का प्रभाव कम कर देता है । स्वर के मामले में शिक्षक के मार्गदर्शन के लिए अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के आदर्श से निम्नलिखित बातें प्रस्तुत की जा रही हैं । पाठ को प्रभावशाली और अपयोगी बनाने के लिए इनका पालन आवश्यक है–

1. अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का स्वर न बहुत ऊंचा होता और न बहुत धीमा । हां ज़रूरत पड़ने पर आप इतनी ऊंची आवाज़ में बोलते कि सामने वाला सुन सके । शिक्षक को भी अपनी आवाज़ न इतनी ऊंची रखनी चाहिए कि कानों को बुरी लगे और न इतनी धीमी कि सुनाई न पड़े ।

2. अल्लाह के रसूल (सल्ल०) पूरी बात मुंह भरकर बोलते थे । ऐसा नहीं कि आधी बात अन्दर ही रह जाए । शिक्षक को भी इसका पूरा ध्यान रखना चाहिए । नबी (सल्ल०) जब बोलते थे तो वाक्यों के अंतिम शब्द और शब्दों के अंतिम अक्षर तक सपष्ट सुनाई देते थे । शिक्षक को भी इसका अभ्यास करना चाहिए । शब्दों का उच्चारण सही हो तो बात भी अच्छी तरह समझ में आएगी और

विद्यार्थियों के उच्चारण का सुधार भी होगा ।

3. अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के स्वर में आवश्यकतानुसार उतार-चढ़ाव होता था, जिसमें बात में असाधारण प्रभाव पैदा हो जाता था । शिक्षक को भी एक ही सुर में बोलने से बचना चाहिए और स्वर में आवश्यकतानुसार उतार-चढ़ाव पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए ।

4. अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के स्वर में बनावट बिल्कुल नहीं था । शिक्षक को भी अपने स्वर में स्वाभाविक अंदाज़ अपनाना चाहिए । कुछ शिक्षक मुंह टेढ़ा करके बोलने और आवाज़ में बनावट पैदा करने में अपनी शान समझते हैं, हालांकि इसकी वजह से वे विद्यार्थियों की नज़र में हास्यास्पद बन जाते हैं ।

5. अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ज़रूरत भर बोलते थे, ज़्यादा बोलने और बेकार बातें करने से आप पनाह मांगते थे। शिक्षकों को भी बहुत बोलना पड़ता है, इसलिए बोलने में बहुत सतर्क रहना चाहिए । बिना ज़रूरत बोलने और बेकार बातें करने से बचना चाहिए।

शिक्षक की भाषा

छात्रों की शिक्षा-दीक्षा में शिक्षक की भाषा की भी बड़ी भूमिका होती है । विद्यार्थी चाहे अनचाहे अपने शिक्षक की भाषा बोलने लगते हैं । इसलिए शिक्षक को भाषा के प्रयोग में बहुत सतर्क रहना चाहिए । अगर शिक्षक की भाषा दोषपूर्ण होगी तो छात्रों की भाषा भी दोषपूर्ण हो जाएगी । इस विषय में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से हमें निम्नलिखित मार्गदर्शन मिलता है–

1. अल्लाह के रसूल (सल्ल०) बहुत ही साफ़, सादा और आमजनों की समझ में आने वाली भाषा का प्रयोग करते थे । पेचीदा और अलंकारयुक्त भाषा बोलने से बचते थे । कोई भी मुद्दा हो ऐसी भाषा में बताते कि अनपढ़ और साधारण योग्यता के लोग भी अच्छी तरह समझ लेते । शिक्षक का भी छोटे बच्चों से सामना होता है, जिनका शब्द ज्ञान बहुत सीमित होता है अगर बोलने में इसका ध्यान न रखा गया तो बच्चे समझ ही नहीं पाएंगे । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) कम से कम शब्दों में अपनी पूरी बात बता देते । वाक्य छोटे और शब्द सारगर्भित होते । शिक्षक को भी चाहिए कि वे छोटे-छोटे वाक्यों में कम शब्दों में अपनी पूरी बात रख दें ।

2. अल्लाह के रसूल (सल्ल०) उन बातों को इशारों में बताते जिन्हें विस्तारपूर्वक बताना शालीनता के विरुद्ध होता। शिक्षक को भी शालीनता का पूरा ध्यान रखना चाहिए, ताकि विद्यार्थियों की भाषा में भी गुण पैदा हो । ग़लत भाषा और असभ्य बात से शिक्षकों को स्वयं भी बचना चाहिए और विद्यार्थियों का भी समय पर सुधार करना चाहिए । बच्चों की भाषा में अक्सर असभ्य और बाज़ारी शब्द प्रवेश करते हैं । बच्चों को इससे रोकना चाहिए ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के शिष्टाचार और मिलनसारी का यह हाल था कि अपना, पराये, दोस्त, दुश्मन यहां तक कि उनसे भी जिन्हें आप पसन्द नहीं करते थे, उसके साथ भी बहुत शिष्टता का व्यवहार करते थे ।

शिक्षा का तरीक़ा

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से इस बारे में हमें निम्नलिखित मार्गदर्शन मिलता है–

1. पाठ का उद्देश्य विद्यार्थी और शिक्षक दोनों पर पूर्णत: स्पष्ट हो । नबी (सल्ल०) जो कुछ बताना और सिखाना चाहते थे उसका मूल उद्देश्य आप के सामने तो स्पष्ट होता ही था सीखने वालों को भी अच्छी तरह मालूम होता था कि वे क्या और किस लिए सीखने जा रहे हैं । शिक्षक को भी इसका ध्यान रखना चाहिए ताकि पढ़ाते समय पढ़ने वाले और पढ़ाने वाले पूरे ध्यान से उस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रयासरत रहें और इधर-उधर भटकने से बच जाएं ।

2. विद्यार्थियों में जिज्ञासा जगाकर पाठ प्रस्तुत किया जाए । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) कोई प्रश्न पूछकर या कोई अधूरी बात कहकर लोगों की जिज्ञासा उभार देते थे और पूरा ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लेते तब कोई बात प्रस्तुत करते ।

जैसे–नबी (सल्ल०) ने पूछा, "सबसे बड़ा उदार कौन है ?" फिर जवाब दिया । इसी तरह मिम्बर पर चढ़ते हुए तीन बार कहा–"वह मारा गया, वह मारा गया, वह मारा गया ।" फिर पूरी बात बतायी ।

सच्चाई यह है कि जब तक विद्यार्थी पूरी तरह सजग न हों, पाठ की ओर ध्यान नहीं दे सकते और विद्यार्थियों ध्यान दिये बिना शिक्षक के प्रयास सफल नहीं हो सकते हैं।

3. सब कुछ एक साथ बता देने के बजाए, पाठ को

उचित ढंग से विभाजित कर लिया जाए । फिर छात्रों को तैयार करके एवं भाग प्रस्तुत किया जाए और इस भाग के समझ में आ जाने के बाद दूसरा भाग प्रस्तुत किया जाए । एक हदीस में इस बारे में पूरा मार्गदर्शन मिलता है । इस तरह पूरा पाठ आसानी से समझ में आ जाता है ।

4. विद्यार्थियों के लिए यथा संभव सुविधाएं उपलब्ध करायें, उन्हें कठिनाई में न डालें कि वह घबराकर कंधा विदा हो जाए । "आसानियां पहुंचाओ, कठिनाई में न डालो ।" क्रमशः सरल से कठिन की ओर बढ़ें, ताकि बच्चे उन पर क़ाबू पाते जाएं ।

5. शिक्षक पढ़ाते हुए देखता रहे कि ध्यान भटकने या उकताहट न पैदा होने पाये । रसूल (सल्ल०) इसका बहुत ध्यान रखते थे ।

6. पठन-पाठन के लिए इनमें से कोई तरीक़ा अवसर के अनुसार अपनाया जा सकता है–

1. बातचीत का तरीक़ा
2. प्रश्नोत्तर का तरीक़ा
3. वर्णन का तरीक़ा
4. संभाषण का तरीक़ा

1. बातचीत का तरीक़ा :

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) बातों-बातों में बहुत सी महत्त्वपूर्ण जानकारियां पहुंचा दिया करते थे । यह तरीक़ा बहुत ही रोचक, सरल, स्वाभाविक और उपयोगी है । विद्यार्थी खुलकर अपना मतलब बयान कर देते हैं । शिक्षक को उनकी कठिनाई और उनके विचार का ठीक-ठीक अनुमान लगाने में सुविधा होती है और उनके सुधार और प्रशिक्षण का अवसर हाथ आता है, लेकिन बातचीत उपयोगी और निर्णायक उसी समय हो सकती है, जब इस विषय में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के आदर्श का पूरा-पूरा अनुसरण किया जाए ।

बातचीत खुले माहौल में की जाए ताकि हरेक अपना मुद्दा बेझिझक रख सके । अलबत्ता शिष्टाचार को हर हाल में बनाये रखा जाए । पूरे ध्यान और खुले मन से बात सुनी जाए । बात काटी न जाए, एक समय में एक ही व्यक्ति बात करे । मुद्दे से अलग या अनुचित और फ़िज़ूल बात होने लगे तो मुनासिब ढंग से उसका सुधार किया जाए । बातचीत के दौरान शिक्षा प्रशिक्षण के जो स्वाभाविक अवसर हाथ आएं उनका पूरा सदुपयोग किया जाए ।

बातचीत में शब्द ठहर-ठहर कर बोले जाएं और आवश्यकतानुसार ज़ोर देने के लिए शब्दों को दोहराया जाए। बातचीत में सामने वाले की योग्यता, रुचि और आवश्यकता का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाए ।

2. प्रश्नोत्तर का तरीक़ा :

बहुत-सी बातें अल्लाह के रसूल (सल्ल०) इस तरीक़े से भी समझाते कि जो कुछ बताना होता उसे पहले प्रश्न के रूप में रखते और फिर सही उत्तर देते । दूसरों को भी आज़ादी से पूछने का अवसर देते । प्रश्न अगर विषय से अलग होता तो बाद में अलग से उत्तर देते । यह तरीक़ा बहुत उपयोगी है । इसमें सबसे बड़ी ख़ूबी यह है कि विद्यार्थी का मस्तिष्क प्रश्न का उत्तर खोजने में पूरा ज़ोर लगा देता है या कम से कम पूरे ध्यान और एकाग्रता से उसका उत्तर सुनने पर आमादा हो जाता है ।

प्रश्न छोटे हों और स्पष्ट हों, ताकि सामने वाला अच्छी तरह समझ जाए कि उनसे क्या पूछा जा रहा है । प्रश्न पूछने का अंदाज़ ऐसा हो कि हरेक अपने कान खड़े कर ले और उत्तर सुनने पर पूरा ध्यान लगा दे । प्रश्न पूछने के बाद सोचने का अवसर दिया जाए फिर खुले मन से उत्तर सुना जाए । ग़लत उत्तर को सही कर दिया जाए । अगर उत्तर न आए तो स्वयं ही उत्तर देकर पूरी तरह संतुष्ट कर दिया जाए । जिज्ञासा उत्पन्न कर संतुष्टि की व्यवस्था न करना हानिकारक है ।

विद्यार्थियों को भी प्रश्न पूछने का अवसर दिया जाए क्योंकि जो अधिक पूछता है वह अधिक सीखता है, लेकिन अनर्गल और व्यर्थ प्रश्न पर झिड़कने के बजाय उसकी अनदेखी कर दी जाए या मुनासिब ढंग से टोक दिया जाए।

3. वर्णन का तरीक़ा

किसी चीज़ के बारे में कुछ बताना होता या कोई घटना सुनाना होती, तो आप (सल्ल०) कभी-कभी वर्णन का तरीक़ा अपनाते लेकिन आप के वर्णन में निम्नलिखित विशेषताएं होतीं–

आप (सल्ल०) वर्णन को लम्बा नहीं खींचते, बल्कि छोटा रखते, ताकि लोग उकताहट न महसूस करें ।

2. अल्लाह के रसूल (सल्ल०) शब्दों से ऐसा दृश्य खींचते कि अनदेखी सच्चाइयां आंखों के सामने नज़र आती महसूस होतीं ।

3. बात को अच्छी तरह स्पष्ट करने के लिए आप (सल्ल॰) मुनासिब उदाहरण और उपमा प्रस्तुत करते । इस तरह हर पहलू आसानी से समझ में आ जाता ।

4. आवश्यकतानुसार अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) अपने स्वर में उतार-चढ़ाव पैदा करते और जिस शब्द पर ज़ोर देना होता उस पर ज़ोर देते । इससे यह होता कि आप जो कुछ प्रस्तुत करते उसका महत्व और उसकी गहराई पूरी तरह समझ में आ जाती ।

नबी (सल्ल॰) कोई बात केवल शब्दों में बता देने पर ही बस नहीं करते, बल्कि ज़रूरत पड़ने पर उसे करके दिखाते । इस तरह उसका व्यावहारिक रूप भी पूरी तरह समझ में आ जाता ।

4. संभाषण का तरीक़ा :

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) आम तौर पर खुत्बा (संभाषण) देते थे । सामूहिक शिक्षा-प्रशिक्षण के लिए आप इसी तरीक़े को अपनाते । जब आप संभाषण के लिए खड़े होते तो सभा पर सन्नाटा छा जाता । बहुत ही संक्षिप्त और सारगर्भित बात कहते, जो बहुत प्रभावकारी होती । आप का अंदाज़ भी बहुत जोशीला होता । आप के शरीर, चेहरे और आंखों से आप के दिल के हाल का पता चलता, अत: श्रोता बहुत प्रभावित होते । संभाषण का तरीक़ा अपनाने में शिक्षक को भी इन गुणों का ध्यान रखना चाहिए–

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) अपनी बात को अच्छी तरह समझाने के लिए निम्नलिखित तरीक़े अपनाते थे–

करके दिखाते या हाथों और उंगलियों के इशारे से बताते थे । कभी-कभी रेत पर रेखाचित्र बनाकर भी समझाते। किसी जानी पहचानी चीज़ से उपमा देकर समझाते। किसी मुनासिब घटना या चुटकुले से मदद लेते । उसके विपरीत से तुलना करके उत्तर स्पष्ट करते । आवश्यकतानुसार बात को दो-तीन बार कहकर अच्छी तरह समझा देते ।

शिक्षकों को भी इन तरीक़ों से अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए ।

छात्रों से व्यवहार

छात्रों के साथ भलाई का व्यवहार करने की अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने वसीयत की है । आप का तरीक़ा यह था–

मुस्कराते हुए मिलते, नर्मी से पेश आते । सामने वाले के आत्मसम्मान का हमेशा ख़याल रखते आप (सल्ल॰) ने कभी किसी की बेइज़्ज़ती नहीं की । उनका दिल रखने के लिए शालीन हास्य से भी काम लेते । बीमार हो तो इयादत के लिए जाते, हाल पूछते दिलासा देते और दुआ करते । उनकी समझ और रुचि का ध्यान रखते । अपनी बातों और उपदेशों को कभी उन पर बोझ नहीं बनने देते । हरेक की बात ध्यान से सुनते । अच्छी बात की सराहना करते । अनुचित बात होती तो टोक देते । कोई अगर अपनी हद से आगे बढ़ता तो बड़े धैर्य से बर्दाश्त करते ।

कोई कमी देखते तो बातों-बातों में टोकते या किसी उदाहरण से ध्यान दिलाते । उनके दुख-दर्द में काम आते । ढाड़स बंधाते । साधनहीनों की स्वयं भी मदद करते और सम्पन्न सहाबा से भी उनकी मदद करवाते । उनके साथ बहुत अपनापन का व्यवहार करते । सीने से लगाकर दुआएं देते । दोनों कंधों पर हाथ रखरकर स्नेह से बातें बताते और उपदेश देते । कोई व्यक्ति अगर थोड़ी भी सेवा करता तो शुक्रिया अदा करते और दुआएं देते । सभा में बैठे एक-एक व्यक्ति पर ध्यान देते ताकि किसी को यह न लगे कि उसपर दूसरों की तुलना में कम ध्यान दिया गया । बच्चों के साथ आप (सल्ल॰) का व्यवहार तो और अधिक स्नेह और प्रेम का होता । आप बच्चों को देखकर बहुत ख़ुश होते । उनके सरों पर हाथ फेरते, गोद में उठा लेते । उनकी रुचि की बातें करते । बच्चों को एक पंक्ति में खड़ा करके उनकी दौड़ कराते । रास्ते पर मिलें तो अपनी सवारी पर बिठा लेते । ग़लती करें तो समझा कर माफ़ कर देते ।

एक बच्चे को चूमते हुए आप (सल्ल॰) ने कहा कि "बच्चे जन्नत का फूल हैं ।" अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के शिक्षा-प्रशिक्षण के आदर्श तरीक़े और विद्यार्थियों के साथ आप के व्यवहार का परिणाम था कि उनके भीतर ज्ञान प्राप्ति की असाधारण लगन और उत्कंछठा पैदा हुई । आप की हर बात उन्होंने दिल से सुनी और उन पर अमल किया। आप (सल्ल॰) की बातों और उपदेशों को गिरह में बांध लिया । उन्हें जीवन भर याद रखा और उन्हें दूसरों तक पहुंचाने में तन, मन, धन से लग गये । इस मार्ग में हर तरह का दुख झेला और डटे रहे । हर हाल में सत्य पर जमे रहे। अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करने के लिए ख़ून पसीना एक कर दिया । अल्लाह उनसे राज़ी हुआ । आज भी हालात बदल सकते हैं, शर्त यह है कि शिक्षक अपने अन्दर वे गुण पैदा कर लें ।

طبقات دوزخ سات ہیں۔ سقر۔ سعیر۔ لظی۔ حطمہ۔ جحیم۔ جہنم اور ہادیہ۔

قادری دواخانہ کی کامیاب ترین یونانی دوائیں

LARGEST UNANI
G.M.P.
CERTIFIED COMPANY

قادری قبض روجن ®

گیسٹک کے درد میں؟



بدہضمی، بھوک کی کمی، درد جگر، قبض، سینے کی جلن اور پیٹ کے امراض میں بہت ہی مفید ہے

زعفرانی تیل ®

گٹھیا کے درد میں؟



کسی بھی قسم کے درد چوٹ موچ۔ گٹھیا۔ جلنے کٹنے اور بچوں کی مالش میں بہت ہی مفید ہے۔

پشٹک چورن ®

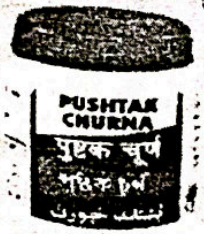

جریان، کثرت احتلام، سرعت انزال، ضعف باہ اور جملہ امراض مردانہ میں بہت مفید ہے

ذیابطیش سی ®

شوگر کی کامیاب دوا



مثانہ کو قوت پہنچاتی ہے۔ پیشاب کی زیادتی اور ذیابطیش سے ہونے والی کمزوری میں بے حد مفید ہے

زعفرانی مالٹ



بہ عضوی کمزوری کے لئے

دماغ و اعصاب کے لئے محرک ہے۔ ضعف باہ کو دور کرتی ہے اور اعلیٰ درجہ کا ممسک بھی ہے۔ اس کے متواتر استعمال سے مردانہ قوت اور خواہش میں اضافہ ہوتا ہے۔

مقدار خوراک۔ صبح و شام۔ ۵ گرام دودھ کے ساتھ

کیسر فورٹ ®

قوت باہ کی طاقت میں اضافہ کے لئے



اگر مردی کی قوت میں مردانگی میں کمزوری واقع ہوتو اس کو ضعف باہ کہتے ہیں اور اگر وظیفہ زوجیت ادا کرنے کے بالکل قابل نہ ہوتو اس کو نامردی کہتے ہیں۔ ان تکالیف کو دور کرنے کے لئے ادارہ قادری دواخانہ نے خیتی یونانی جڑی بوٹیوں کے مرکب سے ایک ایسی کیسر فورٹ ایجاد کرلی ہے جو اعصاب کو طاقت دے کر باہ کی طاقت کو بڑھاتی ہے اور کمزوری کو دور کرنے میں بہت ہی مفید ہے۔

مقدار خوراک روزانہ ایک گولی سونے وقت دودھ کے ہمراہ

Qadri Dawakhana ™
8-14, Nawab Walid Ali Shah Road, Kol-24.
(O) 8-152, B. A. Farooquie Road, (Akra Road) Kolkata- 700 010
Ph. No. 2469-3173-2489-3539 (M) 9830009616 / 9674013169
Website : www.qadridawakhana.com
Email : qadridawakhana80@yahoo.co.in

STOCKIST

Qadimi Dawakhana
1397, Ballimaran, Delhi - 6
Ph : 011 23966395

M/s. Shifa Clinic
A-280, Moti Masjid Road,
P.O. Chikamberpur, Shaheed Nagar
Ghaziabad, Ph : 0120 - 2621288

हाइकू

•

नेता नरेश,
प्रजा भोली जनता,
अजूबा देश ।

•

हांकता राजा
पैदल-हाथी-घोड़े,
मारता कोड़े ।

•

बाप तो शाह,
बेटे शहज़ादे हैं,
बाक़ी प्यादे हैं ।

•

भरी संसद,
पर नेता एक न
आदमक़द ।

•

है विष पीना,
बहुत कठिन है
जीवन जीना ।

•

कैसा नसीब !
चढ़ता है सच ही
सदा सलीब ।

•

दुख पाहुना,
कुछ लेकर आया,
देकर गया ।

•

जितना तपा,
आदमी हो या सोना,
उतना दिपा ।

•

छोड़े न हाथ,
भूख पतिव्रता-सी
निभाती साथ ।

•

घर में घर,
आदमी में आदमी,
फिर भी डर ।

• डॉ॰ रामनिवास 'मानव'

स्वास्थ्य-चर्चा

डायबिटीज का ख़तरा कम करें

डायबिटीज (मधुमेह) के शिकार लोगों पर बड़े पैमाने पर किये गये एक शोध के बाद यह बात सामने आयी है कि जिन लोगों को डायबिटीज होने का ख़तरा ज़्यादा रहता है, वे दवाओं के सेवन के बजाय अपनी जीवनशैली और खानपान में सुधार करके इसका ख़तरा काफ़ी कम कर सकते हैं । यह शोध तीन वर्ष तक 3000 से भी अधिक डायबिटीज के मरीज़ों पर किया गया था, जिनमें सभी आयु वर्ग के स्त्री-पुरुष शामिल थे ।

शोधकर्ताओं ने अध्ययन में शामिल हुए डायबिटीज के मरीज़ों को दो समूहों में विभक्त कर एक समूह के मरीज़ों को आमतौर पर डायबिटीज के उपचार में प्रयुक्त होने वाली दवा 'मेटफोर्मिन' खाने के लिए दी और दूसरे समूह के लोगों को नियमित व्यायाम तथा संतुलित खानपान पर विशेष रूप से ध्यान देने को कहा गया और निष्कर्ष के तौर पर शोधकर्ताओं ने पाया कि इनमें से जिन लोगों ने अपने आहार, जीवनशैली और नियमित दिनचर्या में आवश्यक सुधार किया था और संयमित जीवन व्यतीत करने की कोशिश की थी, उनमें डायबिटीज के विकसित होने की आशंका 58 फ़ीसदी तक कम हो गयी थी । इन लोगों ने प्रतिदिन आधे घंटे तक नियमित व्यायाम करने के साथ-साथ अपने भोजन में वसा और मसालेदार पदार्थों की मात्रा घटाकर अपना वज़न 5-7 प्रतिशत तक कम करने में सफलता पायी थी किन्तु जिन लोगों ने अपनी जीवनशैली व खानपान में सुधार नहीं किया और डायबिटीज के उपचार के लिए प्रयुक्त होने वाली दवा मेटफोर्मिन का ही सेवन किया, उनमें डायबिटीज विकसित न होने का ख़तरा सिर्फ़ 30 प्रतिशत ही कम हुआ ।

ऐसे ही अध्ययन चीन और फिनलैंड में भी किये गये और उनके भी बिल्कुल इसी तरह के परिणाम सामने आये । इन अध्ययनों से उत्साहित शोधकर्ताओं का कहना है कि इन अध्ययनों से सामने आये नतीजे इतने प्रभावी हैं कि इनके ज़रिये डायबिटीज के मरीज़ों को बहुत लाभ पहुंच सकता है । शोधकर्ताओं का कहना है कि ये अध्ययन इसलिए भी उत्साहवर्द्धक हैं क्योंकि जीवनशैली में थोड़े से बदलाव से ही स्वास्थ्य में बहुत महत्वपूर्ण सुधार आ जाता है ।

हज कैसे करें ?

■ सैयद हामिद अली

हज तीन तरह के हैं–

(1) हज्ज इफ़राद–यानी मीक़ात (एहराम बांधने की जगह) से सिर्फ़ हज की नीयत से एहराम बांधें ।

(2) क़िरान–यानी मीक़ात से हज और उमरे दोनों की नीयत करके एहराम बांधें और दोनों को एक साथ अदा करें ।

(3) तमत्तो–यानी मीक़ात से सिर्फ़ उमरे की नीयत से एहराम बांधें, मक्का पहुंचकर उमरा अदा करके एहराम खोल दें । फिर आठवीं ज़िलहिज्जा को मस्जिदे हराम ही से हज का एहराम बांधें । इफ़राद और क़िरान में एहराम की सारी पाबन्दियां हज अदा होने तक क़ायम रहती हैं जिनका निभना अधिकतर लोगों के लिए मुश्किल होता है, इसके विपरीत तमत्तों में आसानियां हैं, अत: हम नीचे तमत्तो का तरीक़ा लिखते हैं और हाजियों को तमत्तो ही का मशविरा देते हैं ।

जहाज़ के 'यलम्लम्"[1] के सामने से गुज़रने से पहले ही अपनी हजामत बनवा लें, बग़ल आदि के बाल साफ़ करें, नाख़ुन कटवा लें, अच्छी तरह नहा लें कि मैल-कुचैल न रहे । अगर ग़ुस्ल न कर सकें तो वुज़ू कर लें, सिले कपड़े उतारकर तहबन्द बांध लें, ऊपर से चादर ओढ़ लें, इत्र लगाएं फिर दो रक्अत नफ़्ल नमाज़ अदा करें । सलाम फेरने के बाद ही सिर से चादर उतार दें और दिल से अल्लाह की रिज़ा के लिए उमरे की नीयत करें । साथ ही ऊंची आवाज़ में तलबियह कहें–

लब्बै-क, अल्लाहु-म लब्बै-क, लब्बै-क ला शरी-क ल-क लब्बै-क, इन्नल हम-द वन्-ने अम-त ल-क वल मुल-क, ला शरी-क ल-क ।

"मैं हाज़िर हूं, ऐ अल्लाह, मैं हाज़िर हूं ! (तेरे दरबार में) मैं हाज़िर हूं ! तेरा कोई शरीक नहीं, मैं हाज़िर हूं !

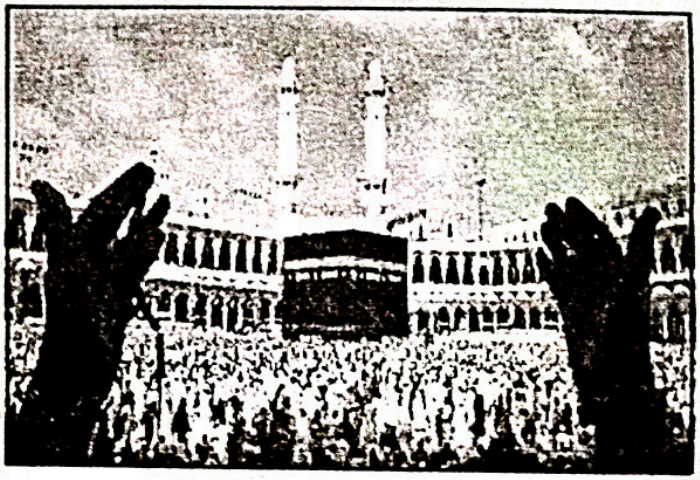

बेशक तारीफ़ तेरे ही लिए है ! नेमतें तेरी ही हैं और इक़्तिदार और हुक्मरानी तेरे ही लिए है । तेरा कोई शरीक नहीं ।"

पूरे शौक़ के साथ ख़ुदा को हाज़िर नाज़िर जानते हुए उसे मुख़ातब करते हुए तलबियह कही जाए और ख़ूब सोच-समझकर कही जाए ।

नाजायज़ काम

अब आप एहराम की हालत में हैं । इस हालत में आपके लिए सिले हुए कपड़ा पहनना, सिर और चेहरा ढांकना, टख़ने ढांकने वाला जूता या मोज़ा पहनना, नाख़ुन काटना, बदन के किसी भी भाग से बाल काटना, कंघी करना, तेल लगाना, बदन या कपड़ों की जूं मारना, ख़ुशबू लगाना, सहवास करना, किसी भी प्रकार की शहवानी (काम-वासना संबंधी) बात या हरकत करना, ख़ुशकी के जानवरों का शिकार करना आदि ये सब बातें हराम हैं । हां, औरतें सिले कपड़े और मोज़े पहन सकती हैं और सिर ढांक लेंगी । परन्तु चेहरे पर कपड़ा डालना, हाथ में दस्ताने पहनना और ज़ाफ़रान से रंगा हुआ कपड़ा पहनना उनके लिए भी मना है ।

1. यलम्लम् पर किसी वजह से एहराम न बांध सकें तो जद्दा से बांध सकते हैं । मदीना तय्यिबा पहले जा रहे हों तो यहां एहराम बांधने के बजाय मदीना से वापसी पर बांधें । फ़र्ज़ हज अदा करने वालों को पहले हज अदा करना चाहिए, फिर मदीना जाना चाहिए ।

हज के अनुष्ठान

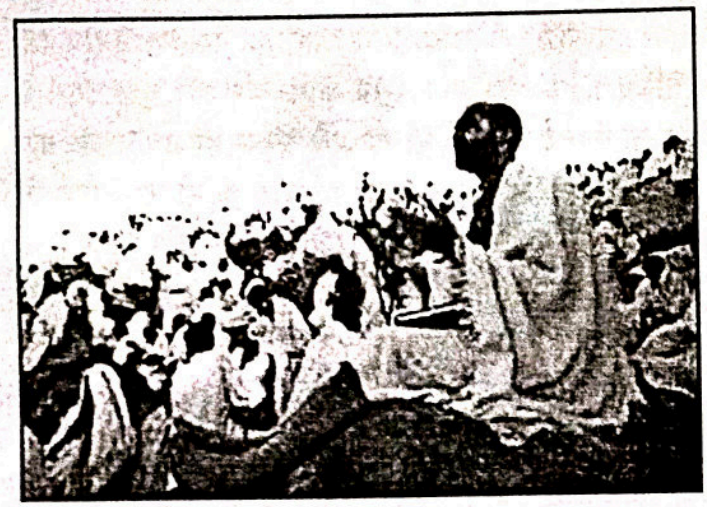

एहराम की हालत में ख़ालिस पानी से नहाना जायज़ है, परन्तु मैल दूर न करें । और बिना ख़ुशबू का सुरमा लगाना, मूज़ी (कष्ट देने वाले) जानवरों को मारना, रुपये की थैली या पेटी तहबन्द के ऊपर या नीचे बांधना और तहबन्द में रुपया या घड़ी के लिए जेब लगाना जायज़ है ।

करने के काम

अब मक्का मुअज़्ज़मा पहुंचने तक आपके लिए कोई ख़ास काम नहीं है । आप अपना सारा वक़्त अल्लाह को राज़ी करने और उसकी इबादत में गुज़ारिए, नमाज़ें एहतिमाम के साथ पढ़िए, क़ुरआन की समझकर तिलावत कीजिए, तौबा और इस्तिग़फ़ार कीजिए, अल्लाह को ख़ूब याद कीजिए और उससे गिड़गिड़ाकर दुआएं मांगिए, तलबियह ज़्यादा से ज़्यादा पढ़िए, क्योंकि यही आपका ख़ास ज़िक्र है । किसी से मिलते वक़्त, ऊपर चढ़ते और नीचे उतरते वक़्त, सुबह और नमाज़ों के बाद ऊंची आवाज़ से बार-बार तलबियह पढ़िए और इसका मतलब समझकर अपनी ज़िम्मेदारियां याद कीजिए । लड़ाई-झगड़ा करने, लोगों को कष्ट देने और व्यर्थ और फ़िज़ूल की बातों से बचिए । लोगों की सेवा कीजिए, दीन का इल्म हासिल कीजिए, लोगों को दीन की शिक्षा दीजिए और ये सब शौक़ और मुहब्बत के साथ अल्लाह की रिज़ा के लिए कीजिए ।

मक्का मुअज़्ज़मा में ठहरना

जद्दा से चलने के बाद 'शमीसिया' नामक एक जगह है । यहां से हरम की हदें शुरू हो जाती हैं । यहीं हुदैबिया का मैदान है जहां नबी (सल्ल०) ने अल्लाह की राह में मर मिटने के लिए सहाबा किराम (रज़ि०) से बैअत ली थी । इस स्थान से गुज़रते वक़्त उस बैअत का तसव्वुर कीजिए । और चूंकि आप हरम की सीमा में दाख़िल हो रहे हैं, अतः अदब, एहतिराम के जज़्बात और ख़ुशू के साथ (विनम्रतापूर्वक) दुआएं मांगते आगे बढ़िए । मक्का में दाख़िल होने से पहले ग़ुस्ल कीजिए और दो रक्अत नमाज़ पढ़ लीजिए । बेहतर है कि आप जद्दा ही में नहा लें, क्योंकि गाड़ीवाले इच्छानुसार गाड़ी नहीं रोकते । मक्का मुअज़्ज़मा में ख़ुशू और ख़ुज़ू के साथ और अदब और एहतिराम से तलबियह पढ़ते हुए दाख़िल हों ।

ख़ाना काबा की हाज़िरी और तवाफ़

मक्का मुअज़्ज़मा में दाख़िल होने के बाद वुज़ू करके अल्लाह के दरबार में उसकी अज़मत और जलाल (प्रताप) का ध्यान रखते हुए ख़ुशू व ख़ुज़ू के साथ मस्जिदे हराम में उस दरवाज़े से दाख़िल हो जाइए जिसका नाम बाबुस्सलाम है । और सीधे हज्रे असवद के पास आइए और एहराम की चादर को दाहिने कंधे के नीचे से निकालकर बाएं कंधे पर डाल दीजिए, फिर हज्रे असवद की ओर बैतुल्लाह के सामने इस तरह खड़े हो जाइए कि आपका दाहिना कंधा हज्रे असवद के पश्चिमी किनारे के सामने हो और पूरा हज्रे असवद आपकी दाहिनी ओर हो, फिर तवाफ़ की नीयत करके दाहिनी ओर इतना चलिए कि हज्रे असवद आपके सामने हो जाए और–

बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर ला इला-ह इल्लल्लाहु व लिल्लाहिल हम्द ।

1. ख़ाना काबा का दरवाज़ा हज्रे असवद के दाहिनी तरफ़ है और हज्रे असवद दरवाज़े के बाईं तरफ़ है ।

"अल्लाह के नाम से, अल्लाह ही बड़ा है, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है ।"

कहकर हज्रे असवद पर दोनों हाथ रखकर धीरे से उसे चूमिए और अगर ऐसा न हो सके तो हाथ से छूकर हाथ चूम लीजिए या किसी छड़ी वग़ैरह से हज्रे असवद को छूकर उसे चूम लीजिए, या अपनी जगह खड़े-खड़े दोनों हाथों की हथेलियां हज्रे असवद की ओर कर दीजिए और ऊपर वाली दुआ पढ़कर उन्हीं को चूम लीजिए । इनमें से जो हो सके कर लीजिए, लेकिन किसी को किसी भी तरह तकलीफ़ न पहुंचाइए । इसके बाद ख़ाना काबा के दरवाज़े[1] की ओर चलिए, इस तरह के 'ख़ाना काबा' बाएं कंधे की ओर रहे और 'हतीम' के अन्दर घुसकर नहीं बल्कि बाहर से तवाफ़ कीजिए । 'रुक्ने यमानी' के पास पहुंचकर उसे छूते हुए या उसकी तरफ़ इशारा करते हुए गुज़र जाइए, फिर हज्रे असवद के पास पहुचिए । यह एक चक्कर हुआ, इसी प्रकार हर बार हज्रे असवद को चूमकर सात चक्कर लगाए जाते हैं । सातवें चक्कर के बाद हज्रे असवद को फिर बोसा दीजिए (चूमिए), अब तक तवाफ़ हुआ । इस तवाफ़ में शुरू के तीन चक्करों में ज़रा कंधे हिलाकर, अकड़कर, पास-पास क़दम डालकर कुछ तेज़ चलिए, बाक़ी चार चक्करों में मामूली रफ़्तार से लिए । तवाफ़ में मुअल्लिम लोग लंबी-लंबी दुआएं पढ़वाते हैं, ये दुआएं नबी (सल्ल०) से साबित नहीं हैं । आप कोई भी मसनून दुआ या ज़िक्र जो याद हो और जिसमें आपका दिल लगे उसे बार-बार पढ़ सकते हैं । क़ुरआन की तिलावत कर सकते हैं, कलिमा पढ़ सकते हैं, तौबा व इस्तिग़फ़ार कर सकते हैं । अपनी ज़बान (भाषा) में अल्लाह से दुआ कर सकते हैं । वैसे तो बिना किसी ज़िक्र या दुआ के भी तवाफ़ हो जाता है । अगर आप याद कर सकें तो यह छोटी-सी दुआ[1] बेहतर रहेगी जो क़ुरआन की आयत भी है–

रब्बना आतिना फ़िद्दुनिया ह-स-न-तौं व फ़िल आख़िर-त-ति ह-सा-न-तौं व क़िना अज़ाबन्नार ।

"ऐ हमारे रब ! हमें दुनिया में भी भलाई दे और आख़िरत में भी भलाई दे और हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा ।"

तवाफ़ कर चुकने के बाद 'मक़ामे इबराहीम' की तरफ़ आइए । अगर बिना कशमकश के 'मक़ामे इबराहीम' के पीछे जगह मिल जाए तो 'मक़ामे इबराहीम' के पीछे वरना आसपास जहां भी जगह मिल जाए, दो रक्अत नमाज़ पढ़ लीजिए । इन रक्अतों में सूरह काफ़िरून और सूरह इख़्लास पढ़ें तो बेहतर है । यह दो रक्अत नमाज़ हर तवाफ़ के बाद पढ़नी चाहिए और अगर मकरूह वक़्त हो तो उस वक़्त के गुज़रने के बाद पढ़िए ।

नोट : इस तवाफ़ के शुरू होने पर तलबियह कहना बन्द कर दीजिए, अब हज का एहराम बांधने पर तलबियह शुरू होगा ।

सफ़ा और मरवा के बीच सई

अब फिर हज्रे असवद के पास आइए और उसे चूमिए या ऊपर बताए गये तरीक़ों में से जो तरीक़ा भी बिना कशमकश के मुमकिन हो अपनाइए । फिर मस्जिदे हराम के 'बाबुस्सफ़ा' नामक दरवाज़े से बाहर निकलिए और सफ़ा पहाड़ी की ओर जाइए ।[2] सफ़ा के पास पहुंचे तो बेहतर है कि यह कहें–

इन्नस्सफ़ा वल मरव-त मिन श' आइरिल्लाह, अब्दउ बिमा ब-द-अल्लाहु बिही ।

"सफ़ा और मरवा अल्लाह (के दीन) की निशानियां हैं, मैं उसी (सफ़ा) से शुरू करता हूं जिनसे अल्लाह ने शुरू किया ।"

फिर सफ़ा की सीढ़ियों पर इतना चढ़िए कि आपको ख़ाना काबा नज़र आने लगे । अब ख़ाना काबा की ओर मुंह करके खड़े हो जाइए और दोनों हाथ दुआ के लिए कंधों तक उठाइए और कहिए–

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला इला-ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरी-क लहू, लहुल मुल्कु, व लहुल हम्दु व हु-व 'अला कुल्लि शैइन क़दीर, ला इला-ह इल्लल्लाहु वहदहू, अन्ज-ज़ व' अदहू व न-स-र 'अब्द-हू व

1. कुछ रिवायतों में है कि यह दुआ रुक्ने यमानी और हज्रे असवद के बीच पढ़नी चाहिए ।
2. सफ़ा और मरवा दो पहाड़ियां थीं, लेकिन अब उनका केवल निशान बाक़ी है, ये पहले मस्जिदे हराम के बाहर थीं, अब यह मस्जिद के अन्दर ही शामिल है ।

ह-ज़-मल अहज़ा-ब वहदहू ।

"अल्लाह ही बड़ा है ! अल्लाह ही बड़ा है ! अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, अकेला वही माबूद है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी के लिए बादशाहत है और उसी के लिए तारीफ़, और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है । अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं, अकेला वही इलाह (माबूद) है, उसने अपना वादा पूरा किया, अपने बन्दे की मदद की और दल की दल सेनाओं को अकेले पराजित किया ।"

फिर खूब गिड़गिड़ाकर दुआ कीजिए, अपनी और दूसरों की हिदायत, मग़फ़िरत, दीन पर जमे रहने और दीने हक़ की सरबुलन्दी के लिए । इसके अलावा तमाम जायज़ दुआएं और जो आपके अपने हाल और ज़रूरत के अनुसार दुआएं हों सब मांग सकते हैं । इस दुआ के बाद फिर ऊपर लिखा ज़िक्र कीजिए । यह ज़िक्र और इसके बाद दुआ तीन बार कीजिए । फिर नीचे उतरकर मरवा की ओर चल दीजिए, ऐसा समझिए कि आप अल्लाह की राह पर लपक रहे हैं, उसकी इताअत में सरगर्म हैं, उसके दीन को ग़ालिब करने के लिए दौड़-धूप में लगे हैं । यदि ख़ामोश चलें अब भी सई हो जाएगी । परन्तु अच्छा यही है कि आप अल्लाह के ज़िक्र में ले रहें । (इसके लिए कोई ख़ास ज़िक्र नहीं है, जो ज़िक्र चाहें करें ।) रास्ते में एक मक़ाम पर रास्ते के दोनों ओर हरे रंग के दो निशान मिलेंगे, यहां पहुंचें तो ज़रा लपककर चलिए । कुछ आगे फिर हरे रंग के दो निशान मिलेंगे, बस यहां तक लपककर चलिए । सफ़ा से मरवा और मरवा से सफ़ा जाते इन दोनों निशानों के बीच ज़रा लपककर चलिए, बाक़ी हिस्से में मामूली रफ़्तार से चलिए । मरवा पहुंचने के बाद उसकी एक दो सीढ़ियों पर चढ़िए । यहां भी क़िबला की ओर मुंह करके खड़े हो जाइए और हाथ उठाकर उसी ज़िक्र और दुआ में लग जाइए जिस तरह सफ़ा पर किया था ।[1] यह सई का एक चक्कर हुआ । इसके बाद मरवा से उतरकर सफ़ा की तरफ़ चलें और बेहतर यही है कि अल्लाह के ज़िक्र में लगे रहें । सफ़ा पर पहुंचने के बाद जैसे पहले ज़िक्र और दुआ में लगे रहे थे वैसे ही फिर लग जाइए, यह दूसरा चक्कर हुआ । इसी तरह सात चक्कर कीजिए ।[2] इसके बाद आप सिर के बाल मुंड़वा दीजिए या कतरवा दीजिए । अब आप उमरे से फ़ारिग़ हो गये और उमरे का एहराम भी ख़त्म हो गया । अब आपके लिए वे तमाम चीज़ें हलाल हो गयीं जो एहराम की हालत में मना थीं और जब तक आप हज का एहराम न बांधेंगे, ये सब चीज़ें जायज़ हो रहेंगी ।

हज से पहले के काम

हज का एहराम आप आठवीं ज़िलहिज्जा को बांधेंगे । इससे पहले आप मक्का मुकर्रमा में बिना एहराम के रहेंगे । इस वक़्त की क़द्र कीजिए, बेकार बातों से बचिए, बैतुल्लाह का ज़्यादा से ज़्यादा तवाफ़ कीजिए । इन तवाफ़ों में शुरू के तीन चक्करों में न तो रमल (दौड़कर चलना) होगा न इज़तिबाग़ (चादर को दाहिनी बग़ल से निकालकर बाएं कंधे पर डाल लेना और दायां कंधा खुला छोड़ना) और न तवाफ़ के बाद सफ़ा और मरवा के बीच 'सई' होगी । अपना ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त मस्जिदे हराम में गुज़ारिए और तवाफ़, नफ़्ल नमाज़, क़ुरआन की तिलावत, ज़िक्र, दुआ और तौबा व इस्तिग़फ़ार की ज़्यादती कीजिए, परन्तु सोच-समझकर और ख़ुलूस व ख़ुशू के साथ कीजिए । इन कामों के अलावा लोगों की इस्लाह और दीन की दावत व तब्लीग़ के मौक़ों को भी हाथ से न जाने दीजिए । साथियों की सेवा और बीमारों की ख़ैरियत पूछना बहुत ज़्यादा अज्र का काम है ।

हज का एहराम

हालांकि आप हज का एहराम पहले भी बांध सकते हैं लेकिन सुन्नत यही है कि आठवीं ज़िलहिज्जा को सुबह-सवेरे मस्जिदे हराम से एहराम बांधें । नहा सकते हों तो नहा लें वरना वुज़ू करें और मस्जिदे हराम ही में दो रक्अत नमाज़

1. सफ़ा और मरवा पर ज़िक्र व दुआ करना मसनून है ।
2. सफ़ा-मरवा के बीच दौड़ना न ज़रूरी है न सही । हरे रंग के निशानों के बीच भी सिर्फ़ लपककर चलना चाहिए ।
3. हज के कामों में एक बार सफ़र-मरवा की सई करना वाजिब है । यह सई मिना की रवानगी से पहले 8 ज़िलहिज्जा को भी कर सकते हैं और 10 ज़िलहिज्जा को तवाफ़े ज़ियारत के बाद भी । अगर 8 ज़िलहिज्जा को सई करें तो पहले तवाफ़े काबा करें, क्योंकि तवाफ़ के बिना सई नहीं होती । (प्रकाशक)

नफ़्ल पढ़ें, सलाम फेरते ही सिर खोलकर दिल में अल्लाह के लिए हज की नीयत करते हुए ख़ुलूस और ख़ुशू और सूझ-बूझ व सोच-समझकर तलबियह कहें–

लब्बै-क, अल्लाहुम-म लब्बै-क, लब्बै-क, ला शरी-क ल-क लब्बै-क, इन्नल हम-द वन्-ने अम-त ल-क वल मुल-क ला शरी-क ल-क ।

अब आप फिर एहराम की हालत में हैं और आप पर एहराम की सारी पाबन्दियां आयत हो गयीं । आप चलते-फिरते, उठते-बैठते, लोगों से मिलते-जुलते, ज़ौक़-शौक़, समझ-बूझ, इख़्लास व तवज्जोह के साथ ज़्यादा से ज़्यादा तलबियह पुकारिए ।[3]

मिना में ठहरना

एहराम बांधने के बाद उसी दिन जल्द से जल्द मिना के लिए रवाना हो जाइए । सुबह-सवेरे ठंडे चल दें तो बेहतर है । मक्का मुअज़्ज़मा से मिना की दूरी सिर्फ़ तीन या साढ़े तीन मील है, रास्ते में तलबियह पुकारते जाइए । मिना पहुंचकर आपको कोई ख़ास काम नहीं करना है । बस आठवीं ज़िलहिज्जा के दिन और उसके बाद आने वाली पूरी रात यहां ठहरना है और जुहर से फ़ज्र तक की नमाज़ें यहीं पढ़नी हैं । नमाज़ें पूरे एहतिमाम और ख़ुशू व ख़ुज़ू के साथ पढ़नी हैं । समझ-समझकर क़ुरआन की तिलावत कीजिए, अल्लाह का ज़िक्र और उसमें दुआएं कीजिए, तलबियह की ज़्यादती कीजिए और लोगों का सुधार और दावत व तब्लीग़ का काम भी अच्छे और हकीमाना तरीक़े से कीजिए ।

अरफ़ात में ठहरना

नवीं ज़िलहिज्जा का सूरज निकलने के बाद अरफ़ात के लिए चल दीजिए, मिना से अरफ़ात छह मील है । अरफ़ात में नवीं ज़िलहिज्जा के ज़वाल (सूरज ढलने) से लेकर दसवीं ज़िलहिज्जा की सुबह सादिक़ के तुलू होने (पौ फटने) तक किसी वक़्त भी ठहरना हज का रुक्ने आज़म (सबसे बड़ा रुक्न) है, जिसके बिना हज नहीं होता । रास्ते में पूरे वक़ार और ख़ुशू के साथ अल्लाह का ज़िक्र करते और तलबियत पढ़ते हुए जाइए । ज़वाल से पहले अरफ़ात में दाख़िल न हों तो बेहतर है । उस वक़्त तक 'मस्जिदे नमरा' (जो अरफ़ात से मिली हुई है) के क़रीब ठहरें । ज़वाल का वक़्त क़रीब आने पर बेहतर है कि ग़ुस्ल कर लें, परन्तु मैल न छुड़ाएं । खाने-पीने से भी उसी वक़्त फ़ारिग़ हो जाएं । ज़वाल होते ही मस्जिदे नमरा में जुहर और अस्र की नमाज़ें एक साथ (यानी पहले जुहर फिर अस्र की) जुहर के वक़्त इमाम के पीछे पढ़ें । नमाज़ से पहले ख़ुतबा सुनिए, अगर आपको जमाअत न मिले तो जुहर की नमाज़ जुहर के वक़्त में और अस्र की नमाज़ अस्र के वक़्त में पढ़ें । नमाज़ पढ़ने के तुरंत बाद अरफ़ात के मैदान में दाख़िल हो जाइए । बतने उरना[1] के अलावा जहां चाहें ठहरें, बस लोगों से अलग और रास्ते में न ठहरें ।

अरफ़ात का यह क़ियाम पूरे हज का निचोड़ है । यहां एक क्षण भी ग़फ़लत से बरबाद न कीजिए । तलबियह, ज़िक्र, दुआ, क़ुरआन की तिलावत और तौबा व इस्तिग़फ़ार में अपना सारा वक़्त गुज़ारिए ।[2] अरफ़ात में आप जबकि लेट-बैठ भी सकते हैं, परंतु बेहतर यही है कि जहां तक हो सके खड़े रहें और हाथ उठाकर गिड़गिड़ा-गिड़गिड़ाकर और रो-रोकर दुआ करते रहें । अल्लाह से ख़ूब रो-रोकर दुआएं करना, तौबा इस्तिग़फ़ार करना अरफ़ात में करने के अस्ली काम हैं । आप ख़ुदा से अपनी हिदायत, मग़फ़िरत, दीने हक़ की ठीक-ठीक पैरवी, उसकी सरबुलन्दी के लिए प्रयत्न और ख़ुदा की राह में सब्र व इसतिक़ामत के लिए ख़ूब गिड़गिड़ाकर दुआ कीजिए कि ख़ुदा की रिज़ा और आख़िरत की कामयाबी आपकी तमाम सरगर्मियों का मर्कज़ और आपका और तमाम मुसलमानों की ज़िन्दगी का मक़सद बन जाए और मुस्लिम उम्मत फिर से दीन की शहादत और इक़ामत के पद को संभाल ले । दुआ के अलावा अरफ़ात के मैदान में हश्र के मैदान का और क़ियामत के दिन जमा होने का विचार करके अपनी पूरी ज़िन्दगी का कड़ा और बेलाग जायज़ा लीजिए । एक मोमिन की ज़िन्दगी कैसी होनी

1. बतने उरना, मस्जिदे अरफ़ात से पश्चिम की ओर सटी हुई एक वादी है ।
2. मुअल्लिम के इन्तिज़ार में वक़्त बरबाद न कीजिए, जो कुछ कीजिए ख़ुद ही कीजिए ।
3. अरफ़ात में एक पहाड़ी 'जबले रहमत' है, वहां दुआ करने का मौक़ा मिले तो ज़रूर करना चाहिए ।

चाहिए और ईमान व इस्लाम के तक़ाज़े और मांगें क्या-क्या हैं ? इन सबको सामने रखकर हर-हर पहलू से अपनी ज़िन्दगी के एक-एक पहलू का कड़ा हिसाब लीजिए, फिर आपको जो-जो कोताहियां नज़र आएं उन पर गहरे तौर पर शर्मिंदा हो जाइए, आजिज़ी और गिड़गिड़ाहट के साथ उनसे तौबा कीजिए और मज़बूत इरादे और पूरी सूझ-बूझ के साथ अहद (प्रतिज्ञा) कीजिए कि आप आइन्दा ख़ुदा के दीन की पैरवी और उसकी दावत तथा इक़ामत के सिलसिले में अपनी हैसियत और सकत के अनुसार कोई कोताही न करेंगे। यह है अरफ़ात का क़ियाम, और यह दुआ, यह तौबा और यह अहद ही इस क़ियाम (ठहरने) के हासिल हैं।[1]

मुज़दलफ़ा में ठहरना

सूरज डूबने पर मग़रिब की नमाज़ पढ़े बिना तलबियह पुकारते और अल्लाह का ज़िक्र करते हुए मुज़दलफ़ा को चल दीजिए। मुज़दलफ़ा में इशा के वक़्त में पहले मग़रिब की और उसके फ़ौरन बाद सुन्नतें पढ़े बिना इशा की नमाज़ पढ़िए। मुज़दलफ़ा में जहां चाहें ठहर सकते हैं, बस लोगों से अलग, रास्ते में वादी-ए मुहस्सर में न ठहरें। जबले 'क़ज़ह' के क़रीब ठहरें और बेहतर है, यहां भी आप ज़िक्र व दुआ और तौबा व इस्तिग़फ़ार वग़ैरह में लगे रहें। अलबत्ता थोड़ा बहुत सो लीजिए क्योंकि यह सुन्नत है। सुबह सादिक़ होने (पौ फटने) के फ़ौरन बाद नमाज़ पढ़िए, फिर सुबह की रोशनी ख़ूब फैलने तक अल्लाह की हम्दो-सना, तकबीर, तहलील और दुआ व इस्तिग़फ़ार में व्यस्त रहिए।

रमी जमर-ए उक़बा

सूरज निकलने से थोड़ा पहले सुकून और वक़ार के साथ तलबियह पुकारते और अल्लाह का ज़िक्र करते हुए मिना को चलिए। रमी-ए जमरात के लिए मुज़दलफ़ा से चने के दाने के बराबर कंकड़ियां ले लीजिए। बतने मुहस्सर के पास से तेज़ी के साथ निकल जाएं कि यहीं हाथी वाले (असहाबे फ़ील) अल्लाह के अज़ाब से हलाक हुए थे। मिना पहुंचकर सीधे जमरए उक़बा (मक्का की ओर आख़िरी खंभा) पर पहुंचिए। इस खंभे से पांच-छह हाथ की दूरी पर नीचे की ओर इस तरह खड़े हो जाइए कि मिना आपकी दाहिनी ओर हो और काबा बाईं ओर। हर बार एक कंकड़ी दाहिने हाथ के अंगूठे और कलिमे की उंगली से पकड़कर खंभे के नीचे के हिस्से पर 'अल्लाहु अकबर' कहकर मारिए। इसी तरह एक के बाद एक सात कंकड़ियां मारिए। आज आपको बस इसी जमरे की रकमी करनी है। याद रखें कि इस जमरे पर पहली कंकड़ी मारते ही तलबियह कहना बन्द हो जाएगा, अब आप तलबियह न पुकारेंगे। (जमरा एक ओर से जाएं और दूसरी ओर से आएं।)

क़ुरबानी

रमी के बाद क़ुरबानगाह जाकर क़ुरबानी कीजिए और हो सके तो अपने हाथ से कीजिए। क़ुरबानी से पहले दुआ पढ़िए। इस दुआ में 'अन' के बाद अपना और जिन-जिन की तरफ़ से क़ुरबानी हो उनका नाम लीजिए।

इन्नी वज्जहतु वज्हि-य लिल् लज़ी फ़-तरस्समावाति वल अर-ज़, 'अला मिल्लति इबराही-म हनीफ़ौं-वमा अना मिनल मुशरिकीन, इन-न सलाती, व नुसुकी व महया-य, व ममाती लिल्लाहि रब्बिल आलमीन, ला शरी-क लहू व बिज़ालि-क अमिरतु व अना मिनल मुसलिमीन। अल्लाहुम-म ल-क व मिन्-क 'अन...बिसमिल्लाहि वल्लाहु अकबर।

हल्क़ और क़स्र

क़ुरबानी के बाद सिर के बाल मुंडा दीजिए (यह बेहतर है) या कतरवा दीजिए। औरतें अपनी चोटी का सिरा पकड़कर कुछ बाल तरशवा दें और बस। अब आपका एहराम ख़त्म हो गया और बीवी से हमबिस्तरी (सहवास) के अलावा वे तमाम चीज़ें जो एहराम की वजह से हराम थीं, अब हलाल हो गयीं।

तवाफ़े ज़ियारत

हालांकि तवाफ़े ज़ियारत बारहवीं ज़िलहिज्जा की शाम तक हो सकता है, मगर अफ़ज़ल यही है कि दसवीं ज़िलहिज्जा को हल्क़ या क़स्र के बाद कर लें। ख़ूब नहा-धोकर, सिले कपड़े पहनकर मक्का मुअज़्ज़मा के लिए चल दीजिए और जिस तरह पहले लिखा जा चुका है, तवाफ़ कीजिए। दो रक्अत नमाज़े तवाफ़ पढ़ने के बाद ज़मज़म पर

1. 8 ज़िलहिज्जा को मिना जाने से पहले सई कर चुके हैं तो अब सई करने की ज़रूरत नहीं है। (प्रकाशक)

जाकर, बिसमिल्लाह पढ़कर, पानी पीजिए । इसके बाद क़ायदे के अनुसार सफ़ा और मरवा के बीच सई कीजिए'–अब आप पर से एहराम की तमाम पाबन्दियां उठ गयीं । औरत यदि हाइज़ा (महीने से) हो तो पाक होने के बाद यह तवाफ़ और सई करे । (एहराम, अरफ़ात का क़ियाम और तवाफ़े ज़ियारत हज के अरकान हैं, इनके बिना हज नहीं होता ।)

मिना में क़ियाम और रमी जमरात

सई के बाद उसी दिन जुहर की नमाज़ पढ़कर मिना के लिए रवाना हो जाइए । दसवीं ज़िलहिज्जा की रात से लेकर कम से कम बारह ज़िलहिज्जा तक आपको मिना में रहनाऔर तीनों जमरों की रमी करना है । अच्छा तो यह है कि आप तेरह को भी मिना में रमी करके वापस जाएं रमी जमरात का वक़्त ज़वाल के बाद से सूरज डूबने तक है । ग्यारहवीं को नमाज़े जुहर के बाद पहले जमरए ऊला (जो मस्जिदे ख़ीफ़ के पास है) की रमी कीजिए । क़ायदे के अनुसार सुतून की जड़ में सात कंकड़ियां मारिए, फिर खड़े होकर खुदा से दुआ और उसे याद कीजिए । इसके बाद जमरए वुस्ता (बीच का जमरा) की रमी कीजिए । यहां भी रमी के बाद क़िबले की ओर मुंह करके ज़िक्र और दुआ कीजिए । इसके बाद जमरए उक़बा की रमी कीजिए, मगर इस जमरे की रमी के बाद ठहरकर दुआ नहीं होती । रमी के बाद अपने क़ियाम की जगह आ जाइए, ख़ासतौर से रात को मिना ही में रहिए । बारहवीं को भी इसी तरह रमी कीजिए । और अगर तेरहवीं को रहें तो तेरहवीं को भी रमी करें । मिना में ठहरने के दौरान अपने वक़्त को बेकार बरबाद न करें । नमाज़ पूरी तवज्जोह और ख़ुशू व ख़ुज़ू के साथ मस्जिदे ख़ीफ़ में जमाअत के साथ पढ़ें । ज़िक्र, दुआ और तौबा व इस्तिग़फ़ार में ज़्यादा से ज़्यादा लगे रहें । दावत व तब्लीग़ के मौक़े यहां ज़्यादा हैं, उन्हें हाथ से न जाने दें ।

मक्का मुअज़्ज़मा में क़ियाम

रमी के बाद बारहवीं या तेरहवीं ज़िलहिज्जा को मक्का मुअज़्ज़मा आ जाइए और जब तक आपकी रवानगी की बारी न आये, यहां के क़ियाम को बड़ा क़ीमती जानकर इससे

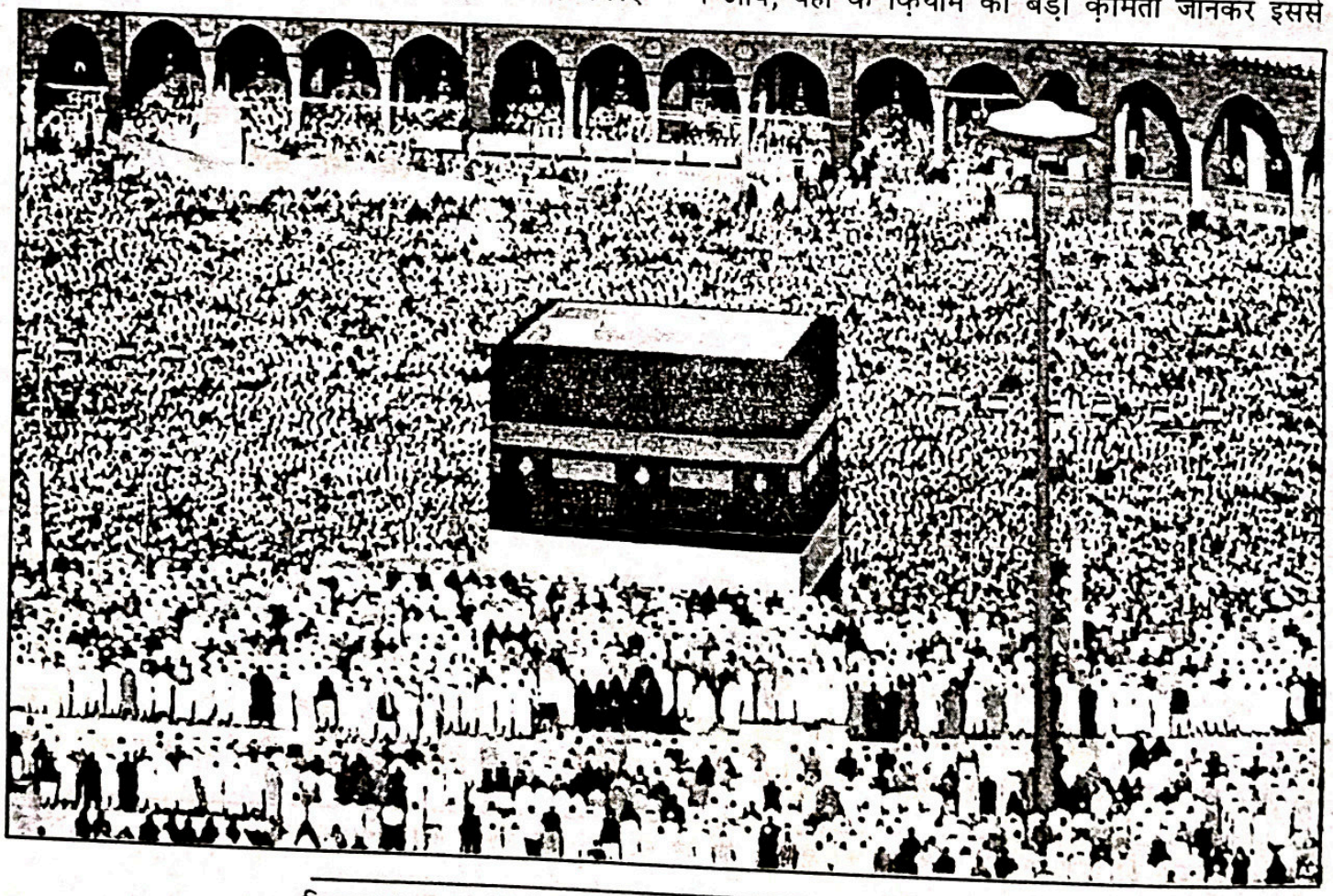

ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उटाइए । पता नहीं, फिर कभी यहां आना नसीब हो या न हो, अत: खाना काबा का ख़ूब तवाफ़ कीजिए । मस्जिदे हराम में ज़्यादा से ज़्यादा नफ़्ल नमाज़ें पढ़िए । ज़िक्र, दुआ, क़ुरआन की तिलावत और तौबा इस्तिग़फ़ार में ज़्यादा से ज़्यादा लगे रहिए । मुल्तज़म (हज्रे असवद और ख़ाना काबा के दरवाज़े के बीच की ख़ाना काबा की दीवार) से लिपट-लिपटकर दुआएं कीजिए और जब भी मौक़ा मिले, लोगों की इस्लाह और दीन की दावत में कोई कमी न छोड़िए ।

तवाफ़े विदा

रवाना होने से पहले यह तवाफ़ किसी भी वक़्त किया जा सकता है । परन्तु अच्छा यही है कि जिस दिन और जिस वक़्त आप रवाना हो रहे हों, उसी दिन और उसी वक़्त यह अलविदाई तवाफ़ करें और ज़ौक़-शौक़, ख़ुशू-ख़ुज़ू और गिड़गिड़ाते हुए तवाफ़ करके 'ख़ाना काबा' से विदा हों ।

कुछ अन्य मसले

(1) अच्छा यह है कि आप कुछ साथियों के साथ हज का सफ़र करें और ये सब लोग अपने में से मुनासिब आदमी को अपना अमीर बना लें जिसकी सब इताअत करें और जो सबकी सलाह से काम करे । सफ़र के अलावा भी इस्लाम में इज्तिमाइयत की बड़ी अहमियत है । इसलिए हज के बाद जब आप घर आएं तो इसकी फ़िक्र करें कि आपकी ज़िन्दगी इज्तिमाइयत के साथ बसर हो और आप किसी इस्लामी नज़्म (व्यवस्था) के पाबन्द होकर सच्चे दीन का पालन करें और दीन की दावत के काम में लग जाएं । अगर हज में वापसी के तुरन्त बाद आपने अपने अहद (प्रतिज्ञा) को पूरा करने की कोशिश न की तो डर है कि आपकी भावनाएं और जज़्बात ठंडे पड़ जाएं और आप उस अहद को पूरा न कर सकें, जो आपने अल्लाह से किया है ।

(2) हज हक़ीक़त में मुसलमानों के ख़लीफ़ा (शासक) या उसके मुक़र्रर किये हुए किसी नायब के एहतिमाम में होना चाहिए । हज के कुछ मनासिक (प्रथाएं) तो बिल्कुल उन्हीं पर संबंधित हैं । यह इस उम्मत की बदक़िस्मती है कि इस नेमत से महरूम है । और न सिर्फ़ हज बल्कि पूरे दीन के बारे में भारी नुक़सान उठा रही है । उम्मत की यह बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है कि वह ख़िलाफ़त के निज़ाम को फिर से क़ायम करने की जानतोड़ कोशिश करे । इस वक़्त तो हुकूमते हिजाज़ के एहतिमाम में हज होता है ।

(3) तवाफ़ के लिए जनाबत (नहाना फ़र्ज़ होना) और हैज़ (महीना) वग़ैरह से पाक और बावुज़ू होना ज़रूरी है ।

(4) 'ख़ाना काबा' के अन्दर दाख़िल होना हज का कोई हिस्सा नहीं है । ज़्यादा से ज़्यादा इसे मुस्तहब कहा जा सकता है । इसके लिए लोगों से कशमकश करना हरगिज़ जायज़ नहीं । यदि आप अन्दर दाख़िल हो जाएं तो दो रक्अत नफ़्ल नमाज़ अन्दर किसी भी तरफ़ मुंह करके पढ़ लें ।

(5) हरम की हदों में किसी जानवर को डांटना, शिकार करना और घास वग़ैरह काटना मना है । हां ! मूज़ी (कष्ट देने वाले) जानवरों को मारना जायज़ है ।

(6) हज में तीन चीज़ें फ़र्ज़ हैं : (1) हज की नीयत करके एहराम बांधना, (2) अरफ़ात में 9 ज़िलहिज्जा को ठहरना, (3) तवाफ़े ज़ियारत जो 10 ज़िलहिज्जा से 12 ज़िलहिज्जा तक किसी भी दिन हो सकता है । इनमें से कोई चींज़ छूट जाए तो हज नहीं होगा ।

मदीना मुनव्वरा की हाज़िरी

मदीना मुनव्वरा की हाज़िरी हज का हिस्सा नहीं है । उलमा ने यहां तक लिखा है कि अगर किसी के पास सिर्फ़ इतनी रक़म हो कि वह मक्का मुअज़्ज़मा जाकर वापस आ सकता है, मगर मदीना मुनव्वरा नहीं जा सकता तो उस पर हज फ़र्ज़ हो गया और उसे हज की अदायगी की फ़िक्र करनी चाहिए ।

परन्तु ऐसा कौन मुसलमान हो सकता है कि दूरदराज़ देशों और इलाक़ों से सफ़र करके मक्का आये और उसे मदीना आने का शौक़ न हो । हदीसों में मदीना तय्यिबा की बड़ी फ़ज़ीलत बतायी गयी है । यहीं नबी (सल्ल०) की मस्जिद (मस्जिदे नबवी) है जो नबी (सल्ल०) और आपके सहाबा (रज़ि०) की तामीर की हुई है । और यह मस्जिद नबी (सल्ल०) और ख़िलाफ़ते राशिदा के दौर में दावते दीन, इस्लाह और तर्बियत और इक़ामते दीन का मर्कज़ रही है । नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया–

"सफ़र न किया जाए, मगर तीन मस्जिदों की ओर (1) मस्जिदे हराम, (2) मस्जिदे अक़्सा और (3) मेरी यह मस्जिद ।" (बुख़ारी, मुस्लिम)

दूसरी मस्जिदों के मुक़ाबले में–सिवाय मस्जिदे हराम के–मस्जिदे नबवी में नमाज़ पढ़ने का अज्र हज़ार गुना ज़्यादा है । (बुख़ारी, मुस्लिम)

मस्जिदे नबवी में हुज़ूर के घर '(रौज़ा मुबारक)' और मिम्बर (मंच) के बीच एक जगह रियाज़ुल जन्नह (जन्नत का बग़ीचा) है (बुख़ारी व मुस्लिम)। इसी मस्जिद से सटा हुआ आपका 'मज़ारे मुबारक' है ।

मदीना मुनव्वरा हाज़िर हों तो ज़्यादा समय मस्जिदे नबवी में गुज़ारें । बेहतर तो यह है कि चालीस वक़्त (आठ दिन) की फ़र्ज़ नमाज़ें लगातार मस्जिदे नबवी में अदा करें । फ़र्ज़ नमाज़ों के अलावा तहज्जुद की नमाज़ और दूसरी नफ़्ल नमाज़ें भी पढ़ें । लेकिन जो नमाज़ भी पढ़ें, शऊर और ख़ुशू और इत्मीनान के साथ पढ़ें । रियाज़ुल जन्नह में मौक़ा मिलने पर दो रक्अत नफ़्ल ज़रूर पढ़ें, मगर दूसरे लोगों के लिए जगह जल्द ख़ाली कर दें । मस्जिदे नबवी में नमाज़ों के अलावा तिलावत, ज़िक्र, दुआ, इस्तिग़फ़ार और दरूद का एहतिमाम करें ।

रौज़ा-ए-नबवी पर हर नमाज़ के बाद हाज़िरी ज़रूरी नहीं है । आप दिन में एक बार हाज़िर हों या एक से अधिक बार, जब भी हाज़िर हो अदब और एहतिराम के साथ धीरे-धीरे दरूद और सलाम अर्ज़ करें । मस्जिदे नबवी में ज़ोर-ज़ोर से बात करने की मनाही है । आपके बराबर ही आपके दोनों साथियों हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰) और हज़रत उमर (रज़ि॰) के मज़ारात (क़ब्रें) हैं, उन पर भी दरूद व सलाम भेजे, फिर इधर से रुख़ मोड़कर और क़िबले की ओर मुंह करके ख़ुदा से अपनी दुनिया और आख़िरत की कामयाबी, उन पाक और बाबरकत बुज़ुर्गों की सच्ची पैरवी और अल्लाह के कलिमे को ऊंचा करने के लिए दुआ करें । नबी (सल्ल॰) के रौज़े पर सजदा करने, आप (सल्ल॰) से दुआ करने या रौज़े की जाली चूमने की कोशिश न करें, क्योंकि ये सब काम शरीअत के ख़िलाफ़ हैं । जन्नतुल बक़ी (मदीना का क़ब्रिस्तान जिसमें बेशुमार सहाबा (रज़ि॰) और उम्मत के सालेह लोग दफ़्न हैं) और उहुद के शहीदों के मज़ारों पर जाएं तो उनके लिए दुआ करें और शरीअत के ख़िलाफ़ कामों से बचें । (मस्जिदें क़ुबा, जन्नतुल बक़ी और उहुद के शहीदों के मज़ारों के लिए कोई ख़ास दुआएं नहीं हैं ।)

मदीना तय्यिबा की हाज़िरी के दौरान आप अल्लाह से अहद करें कि आप अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) और सहाबा (रज़ि॰) की पैरवी करते हुए दीने हक़ की पैरवी और दावत व इक़ामत का हक़ अदा करेंगे और अल्लाह की राह में हर तरह की क़ुरबानियां देकर उसे राज़ी और ख़ुश करने की कोशिश करेंगे । हज और मदीने की हाज़िरी के बाद वापस आकर आपकी ज़िन्दगी इस्लाम के सांचे में ढल गयी और आप इस्लाम के दाई और अलमबरदार बन गये तो आपका हज 'हज्जे मबरूर' और आपकी ज़ियारत क़बूल हो गयी । इंशाअल्लाह !

ज़मज़म का पानी

हदीस में है कि प्यारे नबी (सल्ल॰) ने तवाफ़े ज़ियारत के बाद दो रक्अत नमाज़ पढ़ी और फिर ज़मज़म पर आकर ख़ूब पानी पिया । प्यारे नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया–"ज़मज़म का पानी हर मक़सद के लिए फ़ायदेमंद है–अगर तुम इसे बीमारियों से शिफ़ा के लिए पियोगे तो तुम्हें शिफ़ा मिलेगी, अगर तुम इसे दिल के इत्मीनान और सकून के लिए पीयोगे तो तुम्हें इत्मीनान और सकून मिलेगा, अगर इसे प्यास बुझाने के लिए पियोगे तो अल्लाह तआला तुम्हारी प्यास बुझा देगा । इस कुएं को हज़रत जिबरील ने एक चट्टान पर चोट मारकर बनाया और यह हज़रत इस्माईल (अलैहि॰) के पानी पीने की जगह है । (दारकुतनी)

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया–"ज़मीन पर मौजूद तमाम पानी से बेहतर 'ज़मज़म' का पानी है, यह भूखे के लिए ग़िज़ा (भोजन) और बीमार के लिए शिफ़ा है ।"

(इब्ने हिब्बान)

ज़मज़म पानी को खड़े होकर पीना चाहिए । इसे 'बिसमिल्लाह' पढ़कर पीना चाहिए और पीने के बाद यह दुआ पढ़नी चाहिए–

अल्लाहुम-म इन्नी अस् अलु-क 'इल्मन नाफ़ि 'औं व रिज़क़ौं वासिऔं व शिफ़ाअम् मिन् कुल्लि दाइन् ।

"ऐ अल्लाह मैं तुझसे मांगता हूं नफ़ा देने वाला 'इल्म' और रिज़्क़ की कुशादगी और हर मर्ज़ की शिफ़ा !"

(नैलुल औतार)

हज्रे असवद का महत्व

● मौलाना अब्दुल हक़ फ़लाही

पवित्र काबा में लगे पत्थर (हज्रे असवद) का क्या महत्व है जानने से पहले कुछ बातें जान लेना बहुत ज़रूरी है ।

इस काले पत्थर को 'हज्रे असवद' के नाम से जाना जाता है । काबा की सम्पूर्ण इमारत में इसका स्थान वही है जो अंगूठी में नगीने का होता है या मानव शरीर में दिल का होता है । इसे 'मूर्ती' की एक शक्ल या 'शिवलिंग' कहना घोर अन्याय और ज़्यादती है ।

आइए, जानने की कोशिश करें कि काबा क्या है और उसमें लगे उस काले पत्थर (हज्रे असवद) का क्या महत्त्व है ।

अल्लाह ने अपने महान पैग़म्बर पितामह हज़रत इब्राहीम (अलैहि॰) को एकेश्वरवाद के केन्द्र के रूप में मक्का में काबा के निर्माण का आदेश दिया तो वे अपने सुपुत्र इस्माईल को साथ लेकर इस पुनीत कार्य में जुट गये । इस महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना का उल्लेख क़ुरआन में इस प्रकार किया गया है–"और यह क्षण स्मरणीय है जब इब्राहीम और इस्माईल इस घर पर (काबा) की बुनियादें उठा रहे थे (उन्होंने प्रार्थना की) ऐ हमारे रब ! इसे हमारी ओर से स्वीकार कर ले; निस्संदेह तू सुनने वाला और जानने वाला है । ऐ हमारे रब ! हम दोनों को अपना मुस्लिम (आज्ञाकारी) बना और हमारी सन्तान से अपना एक आज्ञाकारी समुदाय उठा, और हमें अपनी इबादत के तरीक़े बता और हमारी तौबा क़बूल कर; निस्संदेह तू तौबा क़बूल करने वाला और दयाशील है। ऐ हमारे रब ! उन लोगों में उन्हीं में से एक 'रसूल' उठा जो उन्हें तेरी आयतें सुनाये, उन्हें 'किताब' और हिकमत (तत्वदर्शिता) की शिक्षा दे और उन्हें शुद्धता एवं विकास प्रदान करे । निस्संदेह तू प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है । (2:126-129)

इस संदर्भ में वह अंश भी अति स्मरणीय है जो इब्राहीम (अलैहि॰) के संबंध में अल्लाह ने कहा–

"और कौन है जो इब्राहीम के पन्थ से मुंह मोड़ सके सिवाय उसके जो स्वयं को मूर्खता से ग्रस्त कर ले ? उसको तो हमने दुनिया में चुन लिया था और वह 'आख़िरत' में अच्छे लोगों में से होगा । जब उससे उसके रब ने कहा : 'मुस्लिम हो जा ।' तो वह पुकार उठा : 'मैं सारे संसार के रब का मुस्लिम हो गया ।' इसी की वसीयत इब्राहीम ने अपने बेटों को की, और याक़ूब ने भी (अपनी सन्तान को की) कि मेरे बेटो ! अल्लाह ने तुम्हारे लिए यही 'दीन' निर्वाचित किया; तो तुम मुस्लिम ही होकर मरना ।"

(2:130-132)

अंतत: इब्राहीम (अलैहि॰) की प्रार्थना स्वीकार हुई और जिस सत्य का अलख उन्होंने जलाया था उसी का प्रचार-प्रसार उनकी सन्तान ने भी किया और नबियों का एक लम्बा सिलसिला उनकी नस्ल में चला जिसने तौहीद (एकेश्वरवाद) की मशाल जलाये । यहां तक कि उनकी प्रार्थना के अनुरूप मक्का में अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद का आगमन हुआ, जिन्हों ने मानवता का कायाकल्प कर दिया ।

काबा की दीवारें जब ऊंची हो गयीं तो हज़रत इब्राहीम (अलैहि॰) ने एक विशिष्ट क़िस्म का पत्थर उसकी दीवार में लगाया, जो इस पूरी इमारत के लिए आकर्षण था । इसे हज्रे असवद या काला पत्थर कहते हैं ।

हदीस-ग्रंथों में ऐसा उल्लेख मिलता है कि सर्वप्रथम काबा का निर्माण स्वयं आदम (अलैहि॰) ने किया था और वे इस पवित्र पत्थर को जन्नत से अपने साथ लाए थे ।

जो भी हो, पर सत्य यह है कि वह 'हज्रे असवद' एक पत्थर है, इससे ज़्यादा कुछ नहीं । वह पवित्र है, चूमने और आदर करने योग्य है पर पूजनीय नहीं । न पहले किसी नबी ने इसकी पूजा की, न आज कोई करता है और न आइन्दा ऐसा होगा ।

यहां यह स्पष्ट कर देना ज़रूरी है कि काबा-निर्माण संबंधी उपरोक्त उल्लेख और पूर्ववत बयान (अर्थात हज़रत इब्राहीम अलैहि॰ से सम्बद्ध काबा-निर्माण की घटना) में कोई विरोधाभास नहीं है क्योंकि समय के अन्तराल से मज़बूत क़िले भी जीर्ण-शीर्ण हो जाते हैं जैसा कि हम दिल्ली और देश के अन्य शहरों में देखते हैं । स्वयं हज़रत इब्राहीम के निर्माण के बाद अनेकों ऐसी घटनाएं घटीं व

आग लगने से या बाढ़ की चपेट में आ जाने से या दुश्मनों के हमले के नतीजे में इसकी इमारत पूर्णत: या आंशिक रूप में ध्वस्त हो गयी और उसका समय रहते बेहतरीन गारे-मसाले और पत्थर से जीर्णोद्धार किया गया ।

हज्रे असवद के संबंध में यहां एक महत्त्वपूर्ण घटना का उल्लेख करना उचित होगा जिससे उसके महत्त्व पर प्रकाश पड़ता है । हदीस के अत्यंत प्रामाणिक एवं महत्वपूर्ण ग्रन्थों में इसका वर्णन आया है; यथा : बुख़ारी, मुस्लिम, अबू दाऊद, नसई, इब्ने माजा, दारमी, मुवत्ता, मुस्नद अहमद आदि। इन में से कुछ उद्धरण इस प्रकार हैं :

1. हज़रत उमर (रज़ि॰) हज्रे असवद के पास आए, उसे चूमा और बोले : "मुझे पता है, तू एक पत्थर है, न कुछ नुक़सान पहुंचा सकता है और न फ़ायदा यदि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को तुम्हें चूमते न देखा होता तो मैं तुम्हें न चूमता ।" (बुख़ारी, अध्याय 50, हज्रे असवद का वर्णन, रिवायत आबिस बिन रबीआ।

2. उमर बिन ख़त्ताब के रुक्न (अर्थात हज्रे असवद) को संबोधित करके कहा : "अजी, मैं तो बस इतना ही जानता हूं कि तू एक पत्थर है । न तो तू किसी को लाभ पहुंचा सकता है न हानि । यदि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को तुझे हाथ से चूमते न देखा होता तो मैं भी तुम्हें न चूमता ।" तत्पश्चात उन्होंने उसे बोसा दिया, फिर बोले : "हम रमल क्यों न करें" (अर्थात काबा का तवाफ़ (परिक्रमा) अकड़ कर क्यों न करें ?) ऐसा हम मुशरिकों (मूर्तिपूजकों) को दिखाने के लिए करते हैं ।' अल्लाह ने उनका नाश कर दिया ।" पुन: बोले : जो काम नबी (सल्ल॰) ने किया, उसे छोड़ना हम पसंद नहीं करते ।"

(उपरोक्त संदर्भ)

3. इसी से मिलते-जुलते शब्द 'सहीह मुस्लिम' में आये हैं । (हज का वर्णन, हदीस नं॰ 248, 249)

4. मैंने कठोर स्वभाव वाले उमर को देखा कि वे हज्रे असवद को चूम रहे हैं और कहते जा रहे हैं : ख़ुदा की क़सम ! मैं तुझे चूमूंगा हालांकि मैं जानता हूं कि तू एक पत्थर है, न तो तू हानि पहुंचा सकता है, न लाभ यदि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को तुझे चूमते न देखा होता तो तुझे (हरगिज़) न चूमता ।"

(उपरोक्त संदर्भ, हदीस नं॰ 250)

5. सुवैद बिन उक़्बा कहते हैं कि मैंने उमर को देखा कि उन्होंने हज्रे असवद को चूमा और उससे चिमट गये और कहा : मैंने अल्लाह के रसूल को तुझ पर बहुत मेहरबान देखा है । (उपरोक्त संदर्भ, हदीस नं॰ 252)

6. उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि॰) 'रुक्न' (अर्थात हज्रे असवद) पर टूटे पड़े और बोले : मुझे अच्छी तरह पता है कि तू बस एक पत्थर है । यदि मैंने अपने दोस्त (मुहम्मद) (सल्ल॰) को तुझे चूमते, हाथ से बोसा लेते न देखा होता तो न तुझे चूमता और न हाथ से बोसा देता । निस्संदेह अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के जीवन में एक अच्छा नमूना है ।"

(मुस्नद अहमद 1/51 पृ॰ 21)

इतने सारे संदर्भ उद्धृत करने का उद्देश्य मात्र यह था कि हज्रे असवद के संबंध में सही दृष्टिकोण पाठकों के सामने आ सके और कोई भ्रम न रहे, फिर भी यदि कोई जिज्ञासु और अधिक छानबीन करना चाहे तो उनका मार्गदर्शन किया जा सकता है । (कुछेक संदर्भ यह हैं : अबू दाऊद, किताबुल मनासिक 42, मुवत्ता, किताबुल हज 115)

इन संदर्भों में यह बात स्पष्ट हो गयी कि हज्रे असवद कोई मूर्ति या बुत या शिवलिंग नहीं है जिसकी मुसलमान पूजा करते हैं क्योंकि इस्लाम तो मूर्ति-पूजा का विरोधी है, न कि पोषक । वे तो इसे अल्लाह से प्रेम की एक प्रतीक के रूप में देखते हैं और इसे चूमते हैं । इससे अधिक कुछ नहीं कि ऐसा करना अल्लाह के रसूल की एक सुन्नत है ।

वहां यह घटना उल्लेखनीय है कि मक्का छोड़ने (हिजरत) के आठवें वर्ष जब हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने 10 हज़ार सहाबा की फ़ौज के साथ मक्का पर विजय प्राप्त की तो आप 'मस्जिदे-हराम' (काबा के परिसर) में अपने निकटस्थ अन्सारी व मुहाजिर साथियों के साथ पधारे । काबा का तवाफ़ किया । हज्रे असवद को चूमा । उस समय आपके हाथ में एक कमान थी । काबा की छत पर और उसके इर्द-गिर्द 360 मूर्तियां थीं (मानो प्रत्येक दिन के लिए एक मूर्ति थी ।) आप उसी कमान से उन मूर्तियों को ठोकर मारते जाते थे और कहते जाते थे : "जाअल हक़्कु व ज़हक़ बलबातिलु इन्नल बाति-ल का-न ज़हूक़ा ।"

(कुरआन 17 : 81)

अर्थात, 'और घोषणा कर दो कि सच आ गया और असत्य मिट गया, असत्य तो मिटने ही वाला है ।'

लेखन के बिना सांस लेना मुश्किल

● डॉ॰ प्रीत अरोड़ा

अमेरिका में रहकर डॉ॰ अनिता कपूर साहित्यिक गतिविधियों में भागीदारी के साथ-साथ लेखन में भी निरंतर प्रयत्नशील हैं । अनिता जी जब भारत आई हुई थीं, मुझे उनसे दो बार मिलने का सौभाग्य हुआ । उनसे हुई बातचीत के कुछ अंश प्रस्तुत हैं–

अनिता जी आपका साहित्य के क्षेत्र में कैसे आना हुआ ?

■ पाठ्यपुस्तक की कविताएं हमसे सबसे पहले रूबरू होती हैं । वहीं से रुचि-सुरुचि की भूमिका जाने-अनजाने बनती है । मेरी भावनाओं ने कब रचना-प्रक्रिया और अभिव्यक्ति की कूची पकड़ शब्द रूपी रंगों में डुबोकर लिखना शुरू किया, पता ही नहीं चला । मां कहती है कि जब बहुत छोटी ही थी, तब पहली छोटी-सी कविता ''गुड़िया'' लिखी थी । फिर ज्यों-ज्यों बड़ी होने लगी और समझ आने लगी तो देखा कि हमेशा खुद को किताबों में घिरा पाती । पढ़ने के लगाव ने धीरे-धीरे लेखन में भी रुचि पैदा कर दी थी । स्कूल कॉलेज की पत्रिकाओं में रचना भी छपती रही तथा कॉलेज की पत्रिका में संपादन का मौक़ा भी मिला ।

फिर धीरे-धीरे पत्र-पत्रिकाओं में तथा समाचारपत्रों में भी मेरी लिखी रचनाएं, ख़ास कर कविताएं प्रकाशित होने लगी । इससे हिम्मत और बढ़ी तथा लिखने से प्यार और जुड़ाव और बढ़ता गया । संवेदनशील मन की छटपटाहट, ज़िन्दगी का कभी मुस्कुराना और कभी रूठना, जीवन की लकीरें-कभी पूर्णविराम कभी अर्धविराम, कभी प्रश्नवाचक-सभी को क़लम की नोक से भावनाओं की स्याही में डुबोकर लेखन करती रही । कभी बेबसी का बग़ावत करना और आंधी का अंधी गलियों से गुज़रना रफ़्ता-रफ़्ता साहित्य के मैदान में ले आया ।

हमने सुना है कि आप पत्रकार भी हैं । इस क्षेत्र की ओर आपका रुझान कैसे हुआ ?

■ जैसा कि अभी आपको बताया कि कॉलेज में वार्षिक पत्रिका संपादित करने का भी अवसर मिला था । लगातार कई वर्षों तक संपादन किया । रुझान होने के कारण उस समय मन में तय तो कर ही लिया था कि बस अब जीवन का उद्देश्य मिल गया है, और अब पत्रकार ही बनना है । कॉलेज ख़त्म होने से लेकर अमेरिका आने तक की ज़िन्दगी की यात्रा के दौरान, ऊबड़-खाबड़ रास्तों को सही-सलामती से पार करने की जिद्दोजहद और गृहस्थी के कर्तव्यों को निभाते-निभाते, पत्रकारिता कहीं पीछे छूट गयी थी, पर मन के किसी कोने में चुपके नन्हीं बच्ची-सी दुबकी रही ।

लेखन तो गाहे-बगाहे चलता रहा और छपती भी रही, क्योंकि सैलाब को तो बहना ही था । इसी बहाव में चार कविता-संग्रह भी प्रकाशित हो गये । सामचार-पत्रों की दुनिया की एक अलग ही खुशबू और अपना एक आकाश होता है । जहां सिर्फ़ शब्द ही चारों ओर दिखाई देते हैं । अमेरिका आते ही सबसे पहले यहां हिन्दी के सामचारपत्र और पत्रिकाएं ढूंढनी शुरू की, पर चौदह वर्ष पहले हिन्दी उतनी मुखर नहीं थी जितनी आज है । फिर भी लिखने के मौक़े तो मिलते रहे, पर उन गिरने-चुने समाचारपत्रों की उम्र छोटी रही, जिसमें मैं लिखती थी तब एक दिन मन के कोने में दुबकी पत्रकारिता रूपी नन्हीं बच्ची ने इतना उकसाया कि आज स्वयं एक हिन्दी समाचारपत्र ''यादें'' नाम से संपादित कर रही हूं ।

भारतीय लेखिकाओं में आपकी पसंदीदा लेखिकाएं कौन-कौन-सी हैं ?

■ यूं तो कई लेखिकाएं हैं, जिनको पढ़ती आ रही हूं और वे अपने-अपने लेखन के अंदाज़ के लिए पसंद की जाती हैं । हां, शिवानी जी और अमृता प्रीतम जी हमेशा से पहली पसंद रही हैं । आज तक मैंने शिवानी जी के हाथ से लिखा पोस्टकार्ड (उन दिनों तो पोटकार्ड का ज़माना था) सहेज कर रखा हुआ है, जो उन्होंने किसी पत्रिका में मेरी एक कविता पढ़कर आशीर्वाद के रूप में भेजा था । पर अफ़सोस कि दोनों से कभी रूबरू मिलना न हो सका । सुधा ओम ढींगरा जी, चित्रा मुद्गल जी, सूर्य बाला जी, मनीषा कुलश्रेष्ठ जी की कहानियां, रचना श्रीवास्तव जी,

हरकीरत हक़ीर जी, अनामिका जी, रेखा मैत्र जी तथा सुदर्शन प्रियदर्शिनी जी की कबिताएं भावना कुंवर जी, हरजीत संधु जी तथा सुधा गुप्ता जी के लिखे हाइक भी बहुत पसन्द हैं ।

अनीता जी जैसा कि आप अभी भारत से वापस अमेरिका लौटी हैं, तो आपको भारत और अमेरिका में से कहां अधिक रहना पसंद है और क्यों ?

■ प्रीत जी, यह सवाल पूछकर आपने मेरी दुखती रग पर हाथ रख दिया है । परिस्थितियां और क़िस्मत अमेरिका ले आई तो शुरू के कुछ अरसे तो यही लगता रहा कि कहीं अपने अस्तित्व को भूल न जाऊं और यहां की रफ़्तार भरी ज़िन्दगी में लेखन कहीं पिछले पायदान पर न छूट जाए । ऐसा कुछ अरसा हुआ भी, फिर अचानक से जैसे अपना वजूद ख़तरे में दिखाई देने लगा । ऐसा महसूस हुआ कि लेखन के बिना तो सांस लेना मुश्किल होने लगा है...इसके पहले की कहीं फेफड़े ख़राब हो जाएं...एक निश्चित अंतराल के बाद अपनी धरती, भारत से अपने वतन की हवा और खुशबू की आक्सीजन लाना ज़रूरी हो गया है ।

बस, उसके बाद तो दोनों जगह ही रहना पसंद, आने लगा है बावजूद इसके निरंतर यही एहसास होता है, जैसे अपनी रूह का एक कोना अपनी धरती के खूंटे से बंधा छोड़ आई हूं । आज के वैज्ञानिक युग में इंटरनेट और फ़ेसबुक के ज़रिये आप सभी से जुड़ा हुआ महसूस करती हूं, तो राहत मिल जाती है, खुद को दूर नहीं पाती । मैं अपने हिस्से के भारत को अपने साथ ले आई हूं । यहां भी हमने एक छोटा-सा भारत बसा लिया है ।

आपके काव्य संग्रह 'सांसों के हस्ताक्षर' में से आपकी सर्वाधिक प्रिय कविता कौन-सी है और क्यों ?

■ यत तो आपने प्रीत जी किसी मां से पूछ लिया हो कि उसको अपना कौन-सा बच्चा अधिक प्यारा है ? यह बता पाना तो वैसे काफ़ी मुश्किल है, क्योंकि मैंने आत्म-सर्जन को बड़ा मूल्य चुकाकर पाया और कमाया है । फिर भी ''सीधी बात'' कविता दिल के ज़्यादा क़रीब है, क्योंकि इसमें जगत की जड़ता, संसार की असारता, यौवन की हरियाली और भयावह वीरान के रंगों के उपरांत की ''सीधी बात'' ही नहीं, उसके नेपथ्य में घटित दुखते लम्हों के हस्ताक्षर भी हैं । हालांकि मेरे चार कविता-संग्रह पहले भी आ चुके हैं, पर ''सांसों के हस्ताक्षर'' कविता-संग्रह मेरे दिल के बहुत क़रीब है, मेरे जीवन के दस्तावेज़ की तरह ।

आजकल हाइक विधा बहुत प्रचलित है । हाइक और तांका पर आधारित आपकी किताब 'दर्पण के सवाल' भी प्रकाशित हुई है । तो हाइक लिखने में विशेष तौर पर किन-किन बातों का ध्यान रखना पड़ता है ?

■ आजकल हाइक विधा काफ़ी प्रचलित है और यह एक ज़ापानी शैली है जिसमें सिर्फ़ तीन पंक्तियों में (5+7+5=17) वर्ण (मात्राएं नहीं) का निर्वाह होता, जिसमें भाव, विचार और कल्पना समाहित होते हैं । मैंने जब पहली बार हाइक लिखा तो तत्काल जो विचार दिमाग़ में उपजा था वो यह कि, जैसे कविता एक बड़ा वृक्ष हो और हाइक 17 पंक्तियों वाला बोंसाई, मगर एक पूरा काव्य इसमें समाहित है । हाइक कविता का संबंध क्षणिक अनुभूति से है, इसीलिए इसे क्षण-काव्य भी कहते हैं । हाइक की एक प्रमुख विशेषता है कि इसको संकेतों में, कम शब्दों में लिखा जाना और अधिक समझा जाना है । लघुता हाइक का विशेष आकर्षण है, इसकी ताक़त है । शब्दों में व्यक्त करना हाइक रचना की सबसे बड़ी चुनौती है । उदाहरण के तौर पर आप यह एक हाइकू देखें–

चेहर पर
हो झुर्रियां बेशक
रूह पे नहीं ।

आप आजकल संपादन का कार्यभार भी संभाल रही हैं ? यह अनुभव आपके लिए कैसा है । ख़ास तौर पर 'यादें' अख़बार के संपादन से आपको क्या-क्या उम्मीदें हैं ?

■ जी ''यादें'' समाचार पत्र के संपादन का कार्यभार संभाला है और यह चुनौती भरा कार्य है, ख़ासतौर पर जहां अंग्रेज़ी का बोलबाला हो । उसके बीच अपनी भाषा में अलख जगाना तो आसान है, पर उसे जगाए रखना किसी परीक्षा से गुज़रने जैसा होता है । संपादन के कार्य से हर रोज़ कुछ नया करने और सीखने को मिलता है । दुनिया बहुत क़रीब लगती है । फ़िलहाल सारा ध्यान इसी में है कि ''यादें'' को और बेहतर कैसे बनाया जाए, और सभी वर्ग के लोगों और उनकी पसंद की पठनीय और रोचक समाग्री पाठकों तक पहुंचाई जा सके । मुझे पूरा विश्वास है कि पाठकों के सहयोग और स्नेह के चलते यह क़दम एक बड़े काफ़िले में अवश्य बदलेगा । सच तो यह है कि कोई भी

पत्र अपने लेखकों और पाठकों के बलबूते पर ही निरंतरता पाता है ।

आप अमेरिका में हिन्दी संस्था 'विश्व हिन्दी ज्योति' की संस्थापक भी हैं इस संस्था द्वारा विशेष रूप से क्या-क्या कार्य किए जाते हैं ?

■ प्रीत जी, वैसे तो संस्था के नाम से ही पता चल जाता है कि संस्था क्या कार्य करती है । हमारी संस्था और संस्था से जुड़े हुए लोग हिन्दी के प्रचार-प्रसार के कार्य में जी जान से जुड़े हैं । संस्था की तरफ़ से हिन्दी पढ़ाने का काम किया जाता है । हिन्दी के साथ-साथ बच्चों को विविध जानकारी दी जाती है । साहित्य में रुचि पैदा करने के लिए बच्चों के लिए पद्य और गद्य प्रतियोगिता करते हैं । समय-समय पर हमारी संस्था काव्य-गोष्ठी और कवि-सम्मेलन भी आयोजित करती रहती है ।

आपकी कोई ऐसी तमन्ना जो अभी तक पूरी न हुई हो ?

वैसे तो इंसानी फ़ितरत है, और तद्अधिक पाने की इच्छा रखना । यह चाहना ही हमें जिलाए रखती है, जीने का मक़सद बनती है । वरना ज़िन्दगी बेरंग हो जाए । लेखन एक निरंतर होने वाली प्रक्रिया है और सोच उस प्रक्रिया की छाया । जैसे साहित्य की बात करें तो अभी कविता, हाइक, ग़ज़ल, लेख, साक्षात्कार, लघुकथा सभी विधा पर लिखा है और प्रकाशित भी होता रहा है । बस अब कहानी-लेखन पर काम कर रही हूं । मन के अथाह समुद्र में तूफ़ानी लहरें एक ख़ास रूप-रेखा बनाना ही चाहती हैं...इंतिज़ार है तो बस एक हाई टाइड का जब चांद पूरे शबाब पर हो और मेरे शब्द और सोच कहानी के आसमान को छू लें ।

अन्त में आप हमारे पाठकों के लिए क्या कहना चाहेंगी ?

किसी भी रचनाकार के लिए पाठक मार्गदर्शक या गुरु का-सा ही काम करते हैं । जब वे हमें हमारे लेखन के लिए एक छोटे बच्चे-सा सराहते हैं तो रचनाकार को बेहद ख़ुशी होती है, लेखन सार्थक महसूस होता है । पर व्यक्तिगत तौर पर में आलोचना और पाठकों की प्रतियोगिताओं का ज़्यादा स्वागत करती हूं, क्योंकि आलोचना असंतुष्टि के क्रम को आगे बढ़ाकर लेखन को तराशने में मददगार साबित होती है । रचनाकार पाठकों के बलबूते पर ही निरंतरता पाता है, उसका लेखन गतिशील होता है ।

हज की हक़ीक़त

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने हम लोगों को संबोधित करते हुए कहा–ऐ लोगो ! तुम पर 'हज' अनिवार्य किया गया है, तो तुम 'हज' करो ।

(मुस्लिम, नसई)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से पूछा गया कि कौन-सा कर्म उत्तम है ? आपने कहा–अल्लाह और उसके 'रसूल' पर 'ईमान' लाना, पूछा गया–फिर कौन-सा ? कहा–अल्लाह के मार्ग में 'जिहाद' करना । पूछा गया–फिर कौन-सा ? आपने फ़रमाया–हज मबरूर ।

अबू सईद खुदरी (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा कि तेजोमय एवं प्रतापवान अल्लाह कहता है–मैंने बन्दे को शारीरिक स्वास्थ्य दिया और उसे जीविका में कुशादगी प्रदान की, पांच वर्ष व्यतीत हो गये और वह मेरी ओर नहीं आया, तो यह बेनसीब है । (इब्ने हब्बान, बैहक़ी)

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि॰) कहते हैं कि एक व्यक्ति नबी (सल्ल॰) की सेवा में आया और कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) । क्या चीज़ 'हज' को आवश्यक करती है ? आपने कहा–सफ़र ख़र्च और सवारी ।

अबू उमामा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : जिसको न किसी स्पष्ट आवश्यकता ने रोका हो और न किसी रोकने वाले रोग ने और न किसी अत्याचारी शासक ने और उसने 'हज' न किया हो और इसी दशा में उसकी मृत्यु आ जाए तो उसे अधिकार है चाहे 'यहूदी' बनकर मरे या 'ईसाई' बनकर । (बैहक़ी)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा–हज और उमरह करने वाले अल्लाह के (पास पहुंचने वाले) मंडल हैं (जो उसकी सेवा में जा रहे हैं)। यदि वे उससे प्रार्थना करें तो वह उनकी प्रार्थना स्वीकार करे और यदि वे उससे क्षमा की प्रार्थना करें तो वह उन्हें करे ।

OUR PUBLICAITON IN BENGALI

FOR DAWAH WORK

Pavitra Quran (Bengali)	S. A. Ala Moududi	180/-
Islam Parichity	S. A. Ala Moududi	25/-
Islamer Jivn Paddhati	S. A. Ala Moududi	15/-
Tawhid Resalat O P. Jivan	S. A. Ala Moududi	15/-
Shanti Path	S. A. Ala Moududi	7/-
Ekmatra Dharma	S. A. Ala Moududi	10/-
Islamer Paigam	S. A. Ala Moududi	5/-
Bhanga O Gara	S. A. Ala Moududi	7/-
Islamer Naitik Dristikon	S. A. Ala Moududi	10/-
Islam O Nari	Mohd. Qutub	6/-
Pardah Ekti Bastav Prayojon	Shamsunnahar Nizami	15/-
Quraner Talaq O Tin Talaq	Nurul Islam Khan	10/-
Purdah O Islam	S. A. Ala Moududi	75/-
Swami Strir Adhikar	S. A. Ala Moududi	50/-
Arthanaitik Samasyar	S. A. Ala Moududi	10/-
Ek Mahat Jivan	A.S.M. abdul Hai	66/-
Adarsha Manab	S. A. Ala Moududi	6/-
Nabi Jivaner Baishishtya	S. A. Ala Moududi	7/-
Muha. (S) : Islamer Vartabahak	R. Rao	12/-
Islam O V ishwer Bhabishyat	Dr. M.W. Hoffman	7/-
Ahwban (Appeal)	Ali Nasim Hejaji	15/-
Nari : Islamer Dristete	Al Bahi Al-Khawli	90/-

Bangla Islami Prakashani Trust
27B, Lenin Sarani, Kolkata-700 013
Email : mizanweekly@gmail.com

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की ईद

● रिदा अतहर

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के मदीना तशरीफ़ लाने से पहले मदीनावासी दो ईदें मनाया करते थे यह दोनों ईदें किसी बुत के नाम की होती थीं। इस दिन मेले लगते, दोस्तों के साथ घूमा-फिरा जाता, खाने पकाए जाते और एक-दूसरे को उपहार दिए जाते।

जब आप (सल्ल०) हिजरत करके मदीना पहुंचे और आपने देखा कि मदीना के लोग इस तरह ईद मनाते हैं, तो आपने फ़रमाया कि मैं तुम्हारे लिए दो दिन नियत कर देता हूं, जिसमें तुम लोग खुशी मना सकते हो, लेकिन ये ईदें बुतों के नाम की नहीं होंगी, तुम लोग चूंकि मुसलमान हो चुके हो अत: अज्ञानकाल के रस्मो-रिवाज और बुतों की यादों को छोड़ दो और उसके बजाय अल्लाह तआला के आगे झुकने और उसके गुणगान को अपनी आदत बना लो। इनमें से एक ईद रमज़ान के फ़ौरन बाद नियत करता हूं और दूसरी ईद हज के दूसरे दिन होगी।

पहली ईद इस ख़ुशी में कि अल्लाह तआला ने अपनी कृपा से रमज़ान के रोज़े रखने की तौफ़ीक़ दी और दूसरी ईद उस घटना की याद में कि जब हज़रत इबराहीम (अलैहि०) ने अपने बेटे हज़रत इस्माईल (अलैहि०) को केवल अल्लाह की ख़ुशनूदी व प्रसन्नता में ज़िब्ह करने का इरादा किया। उस समय से मुसलमानों में ये दोनों ईदें प्रचलित हैं।

इस्लाम की सबसे पहली ईद यकुम शव्वाल, 2 हिजरी सन् 2 मार्च 634 ई० के दिन मनायी गयी। मंगल का दिन था, अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने मदीने से निकल कर लगभग एक हज़ार गज़ की दूरी पर खुले मैदान में ईद की नमाज़ पढ़ाई।

ईद का चांद देखकर सबसे पहला काम जो आप और आप के सहाबा करते थे, वह सद्क़ा व फ़ितरा की अदायगी थी, जो हर हाल में नमाज़ पढ़ने से पहले ज़रूर ज़रूरतमन्दों तक पहुंचा दिया जाता आम तौर पर यह नियम था कि हर बड़े शहर में सदक़ा देने की घोषणा सारे बाज़ारों और गलियों में एक व्यक्ति के द्वारा करा दी जाती। इस तरह सदक़ा-फ़ितरा वसूल करने के लिए भी एक आदमी निर्धारित कर दिया जाता, ताकि सदक़ा-फ़ितरा एक प्रबंध के तहत ग़रीब व ज़रूरतमन्दों में बांटा जा सके और यह न हो कि किसी ग़रीब को ढेरों मिल गया और कोई वंचित रह गया। ईद के दिन आप ग़ुस्ल (स्नान) करते, वुज़ू करते और अच्छे कपड़े पहनते। हदीस में आया है कि आप (सल्ल०) ईद के दिन बहुत अच्छे कपड़े पहना करते थे। एक चादर जो कि क़ीमती और सुन्दर कपड़े की होती, जिस पर लाल और सब्ज़ धारियां पड़ी होतीं। फिर आप ख़जूरें या कोई मीठी चीज़ खाकर तकबीर पढ़ते हुए घर से निकल जाते।

फ़ज्र की नमाज़ और ईद की नमाज़ के बीच नमाज़ न पढ़ते। ईदगाह तक पैदल जाते, धीरे-धीरे तकबीर पढ़ते हुए। अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला इलाह इल्लल्लाहु, वल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर वलिल्लाहिल हम्द। ईदगाह पहुंच कर जब सूरज सवा नेज़े से ऊपर हो जाता,

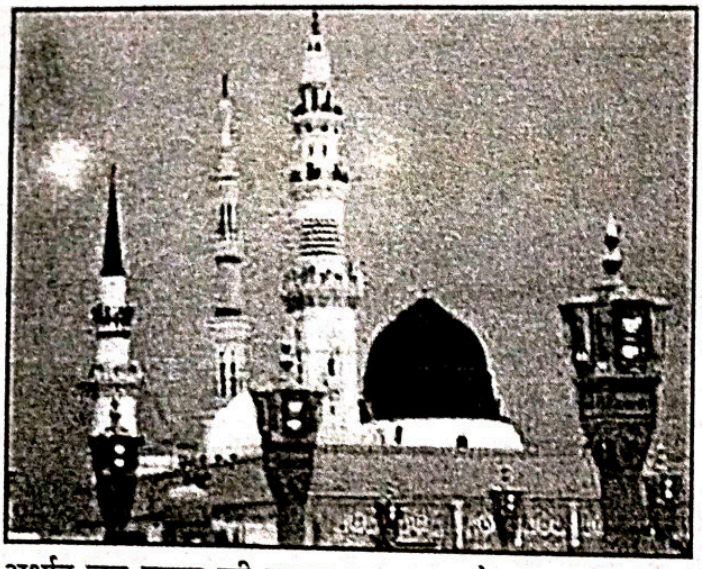

अर्थात जब चाश्त की नमाज़ का वक़्त हो जाता, उस वक़्त आप (सल्ल०) सहाबा (रज़ि०) को जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ाते । दो रक्अत नमाज़ पढ़ने के बाद आप खड़े हो जाते और मजमें की तरफ़ मुंह करके लोगों को कुछ नसीहत फ़रमाते, कोई विशेष आदेश देना होता तो, इरशाद फ़रमाते या अगर कहीं फ़ौज भेजनी होती, तो उसके प्रस्थान के संबंध में आदेश जारी करते । यह खुत्बा आप (सल्ल०) बिना किसी मिम्बर पर खड़े होकर पढ़ते और खुत्बे की समाप्ति पर दुआ करते ।

मर्दों में खुत्बा देने के बाद आप औरतों की तरफ़ आते, तो उस वक़्त आप (सल्ल०) के दास हज़रत बिलाल (रज़ि०) आपके साथ होते थे । हुज़ूर अकरम (सल्ल०) औरतों को नसीहत फ़रमाते, फिर उनको सदक़े का आदेश देते । इस पर औरतें अपनी बालियां या कोई और वस्तु अपने सामर्थ्य के अनुसार डाल देतीं और हज़रत बिलाल (रज़ि०) सब चीज़ें जमा करके आप (सल्ल०) की सेवा में पेश कर देते थे ।

याद रहे कि यह सदक़ा, फ़ितरे के अतिरिक्त होता था । नमाज़ और खुत्बे से फ़ारिग़ होकर आप (सल्ल०) वापस आ जाते । एक रास्ते से जाते और दूसरे रास्ते से वापस आते यह इसलिए कि इस तरह मदीने के दूसरे निवासियों (ईसाई और यहूदी) को इस्लाम की महत्ता और शानो-शौकत का एहसास हो ।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अपने सहाबा (रज़ि०) को ज़ाहिरी तौर से भी खुशी मनाने की आज्ञा दी कि इस दिन तुम लोग अपने दोस्तों, रिश्तेदारों से मिलो-जुलो, उनको उपहार दो, खेल-तमाशों में व्यस्त रहो, तो भी कोई हर्ज नहीं है ।

सहीह बुख़ारी में लिखा है कि ईद के दिन उम्मुलमोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि०) ने दो लड़कियों को अपने पास बिठा रखा था, जो अच्छे स्वर में गा रही थीं । ये गाने जंगे बआस के बारे में थे । इतने में आप (सल्ल०) तशरीफ़ लाए और बिछौने पर दूसरी ओर मुंह करके लेट गए, लड़कियां गाती रहीं अचानक उनके वालिद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) आए और यह दृश्य देखकर अपनी बेटी को झिड़का और कहने लगे कि "खुदा के पैग़म्बर के घर पर शोर ?"

इस पर रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मुंह फेरा और इरशाद फ़रमाया, "अबूबक्र इनको कुछ न कहो, आज ईद का दिन है । इनको खुशी मना लेने दो ।" (हदीस : बुख़ारी)

दोहे

बहुत 'करप्शन' बढ़ रहा, बढ़ा 'कास्ट' का शोर ।
इसे बढ़ाने में लगे, नेतागण पुरज़ोर ।।

देख 'करप्शन' ने किये, सारे काम ख़राब ।
दफ़्तर में ही पी रहे, अफ़सर आज शराब ।।

आरक्षण ने डाल दी, अब जनता में फूट ।
जिसके चलते मच रही, नौकरियों में लूट ।।

सभी पार्टियां कर रही, आज बहुत तक़रीर ।
मिले उन्हें बहुमत तो, बदले फिर तस्वीर ।।

रोहित भ्रष्टाचार से, देश हुआ बरबाद ।
जिसके कारण हो रहे, दंगे और फ़साद ।।

'कास्टिज़्म' और 'करप्शन', चीज़ बड़ी मनहूस ।
जिसके चलते देश में, निकलें रोज़ जुलूस ।।

रिश्ते भी बहरे हुए, बहरा हुआ समाज ।
कोई अब सुनता नहीं, पीड़ित की आवाज़ ।।

अपने तो अपने रहे, दूजे बनते ग़ैर ।
यही भाव पैदा करें, इक-दूजे में बैर ।।

रोहित यादव
सैदपुर, मंडी अटेली,
महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)

नीति आयोग व पंचवर्षीय योजनाओं का भविष्य

● भारत डोगरा

योजना आयोग को समाप्त करने तथा उसके स्थान पर नीति आयोग को आरंभ करने की पूरी कार्यवाही बहुत जल्दबाज़ी में की गई । इसके लिए न तो व्यापक विमर्श हुआ, और न ही सरकारी निर्णय व निर्णय प्रक्रिया में ऐसी पारदर्शिता अपनाई गई जिससे कि नागरिकों में इसके औचित्य (या औचित्य के अभाव) की समझ ठीक से बन सकती । महत्वपूर्ण बिषय पर की गई जल्दबाज़ी का परिणाम यह हुआ कि राष्ट्रीय महत्व के कुछ बड़े सवालों पर अनिश्चय की स्थिति बनी रही ।

ऐसा ही एक सवाल यह है कि पंचवर्षीय योजनाओं का भविष्य क्या है ? 12वीं पंचवर्षीय योजना जो पहले से चल रही है वह ठीक से पूरी होगी या नहीं? राज्यों में बनाए गए योजना बोर्ड या योजना तंत्र का भविष्य क्या है ? उन्हें आगे योजनाएं तैयार करने की तैयारी करनी है या नहीं । 12 वीं योजना के मध्य समय पर मूल्यांकन प्रस्तुत किया जाएगा या नहीं ? इतने महत्वपूर्ण सवालों पर बहुत समय तक अनिश्चिय की स्थिति बनी रही । बजट में सामाजिक क्षेत्रों व अन्य प्राथमिकता के क्षेत्रों के बजट में अनेक महत्वपूर्ण कटौतियां कर दी गई तो इससे अनिश्चय की स्थिति और बढ़ गई । निश्चित तौर पर कोई यह कहने या बताने की स्थिति में नहीं था कि जितनी कटौतियां प्राथमिकता के क्षेत्रों में केंद्र सरकार के बजट में की गई है, उसकी कहां तक भरपाई राज्य सरकारों के बजट में की गई है । अब फिलहाल इतना तो पता चला है कि 12 वीं पंचवर्षीय योजना को पूरा करने के बारे में नीति आयोग की गवर्निंग काउंसिल में निर्णय लिया गया है ।

सच कहें तो कई तरह के सुधार की ज़रूरत है जिससे पंचवर्षीय योजनाएं और बेहतर ढंग से बन सकें । इसमें सबसे बड़ी ज़रूरत तो यह है कि पंचवर्षीय योजनाएं तैयार करने में जन-भागीदारी की प्रक्रियाएं पहले से चल तो रही हैं पर यह आधी-अधूरी हैं । जिस पर कभी-कभी जो जन-विमर्ष औपचारिकता निभाने मात्र के लिए किया जाता है और जो सुझाव व्यापक स्तर पर प्राप्त होते हैं उन्हें भी पर्याप्त महत्व नहीं दिया जाता है ।

12 वीं योजना को वर्ष 2007 में समाप्त होना है। कहा जा रहा है कि इसका किसी न किसी रूप में मध्य-समय का मूल्यांकन भी प्रस्तुत किया जाएगा, हालांकि इसमें देर तो हो ही गई है । 12 वीं योजना में कितने व कैसे बदलाव कि गए हैं, इसके बारे में अभी स्थिति स्पष्ट नहीं है । इसके बाद पंचवर्षीय योजना जारी रहेगी कि नहीं, इस बारे में भी अभी निश्चित तौर पर कुछ बताया नहीं गया है । इतने महत्वपूर्ण विषय पर इतनी देर तक अनिश्चय बने रहना उचित नहीं है । अब तक भारत में 12 पंचवषीर्य योजनाएं बन चुकी हैं । बीच में थोड़ा सा विघ्न आया था, तो उसे अल्पकालीन योजना द्वारा पूरा किया गया । पर पंचवर्षीय योजनाओं का यह सिलसिला कभी टूटा नहीं व छह दशकों से अधिक समय तक निर्बाध जारी रहा । इसे आगे भी जारी रहना चाहिए । क्योंकि कई सीमाओं और निर्बाध के बावजूद पंचवर्षीय योजनाओं ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । आधुनिक अर्थव्यवस्था में कई तरह कां संतुलन बनाए रखना ज़रूरी होता है । इसके लिए

एक निश्चित अवधि पर एक समग्र रूप में अर्थव्यवस्था के सभी पक्षों और उनके तालमेल के प्रयास ज़रूरी हैं । इन प्रयासों में निरंतरता बनी रहना ज़रूरी है । इसके लिए एक संस्थागत व्यवस्था बनी रहनी ज़रूरी है । इससे यह पता लगाने में बहुत सहायता मिलती है कि किस तरह की समस्याएं बढ़ रही हैं और आगे किन समस्याओं के बढ़ने की संभावना है । इसके बारे में पूर्व चेतावनी काफ़ी समय रहते मिल जाती है । विश्व स्तर पर हो रहे बदलावों से अर्थव्यवस्था का सामंजस्य कैसे बनाया जा सकता है, इस कार्य में भी पंचवर्षीय योजनाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है ।

भारत में पंचवर्षीय योजनाएं तैयार करते समय उससे पहले की योजना की समीक्षा की जाती है । जो लक्ष्य प्राप्त नहीं हो सके हैं उन्हें बताया जाता है व इसके कारणों का विश्लेषण किया जाता है कि यह लक्ष्य क्यों प्राप्त नहीं हो सके । इसके अतिरिक्त पंचवर्षीय योजना का आधा समय बीतने पर मूल्यांकन अलग से किया जाता है । इससे पता चलता है कि योजना अपने लक्ष्य के अनुसार कहां तक चल रही है और कहां तक पिछड़ रही है । जहां योजना पिछड़ रही है वहां उसे पटरी पर लाने के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं इसकी चर्चा भी मूल्यांकन में की जाती है । इसका अर्थ यह नहीं है कि पंचवर्षीय योजनाओं संबंधी कार्य पूरी कुशलता से हो रहे थे और इनमें सुधार की कोई गुंजाइश नहीं है ।

सच कहें तो कई तरह के सुधार की ज़रूरत है जिससे पंचवर्षीय योजनाएं और बेहतर ढंग से बन सकें । इसमें सबसे बड़ी ज़रूरत तो यह है कि पंचवर्षीय योजनाएं तैयार करने में जन-भागीदारी की प्रक्रियाएं पहले से चल तो रही हैं पर यह आधी-अधूरी हैं । जिस पर कभी-कभी जो जन-विमर्ष औपचारिकता निभाने मात्र के लिए किया जाता है और जो सुझाव व्यापक स्तर पर प्राप्त होते हैं उन्हें भी पर्याप्त महत्व नहीं दिया जाता है । अतः पंचवर्षीय योजनाएं तैयार करने में सुधार तो ज़रूर होना चाहिए, पर पंचवर्षीय योजनाओं को समाप्त नहीं करना चाहिए । निश्चित तौर पर पंचवर्षीय योजनाओं और उनके मध्य-काल मूल्यांकन को जारी रहना चाहिए ।

आर्थिक विकास व अर्थव्यवस्था की सही स्थिति के बारे में प्रामाणिक जानकारी लोगों तक पहुंचाना ज़रूरी है । इस संदर्भ में भी पंचवर्षीय योजनाओं के दस्तावेज़ व योजना-बीच के मूल्यांकनों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है । ऐसे कई दस्तावेज़ों में पहले की ग़लतियों को स्वीकार करते हुए भविष्य में इससे सबक़ लेने को व नीतिगत सुधार करने के लिए कहा जाता है । उदाहरण के लिए 12 वीं योजना के दस्तावेज़ में जल संबंधी अध्याय इस दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं । इस तरह की सरकारी स्तर की स्पष्ट स्वीकारोक्ति से बड़ी ग़लतियां सुधारने में बहुत मदद मिलती है । पंचवर्षीय योजनाओं संबंधी अनिश्चय केंद्रीय सरकार के स्तर पर दूर होगा, तो इससे राज्यों की योजनाओं संबंधी अनिश्चय को दूर करने में भी सहायता मिलेगी। इस समय इस बारे में बहुत अनिश्चय की स्थिति कई राज्यों में देखी जा रही है । केंन्द्रीय सरकार को चाहिए कि राज्यों में इस अनिश्चय की स्थिति को दूर करने के लिए शीघ्र निर्णायक क़दम उठाए ।

(विविधा फीचर्स)

लघुकथा

बेईमान

सवेरे-सवेरे चाय की चुस्कियों के साथ मेहता जी अख़बार पढ़ रहे थे, तभी उनके पड़ोसी वर्मा जी आ धमके, वो ठेकेदार थे । आते ही उनके बगल की कुर्सी पर बैठ गये ।

मेहता जी ने अपनी पत्नी से वर्मा जी के लिए चाय बनाने को कहा और वर्मा जी का उतरा चेहरा देखकर उनसे इसका कारण पूछा । क्या बताऊं ?

आजकल जिस पर भरोसा करो वही दगाबाज़ और बेईमान निकल रहा है । मैंने अपने दोस्त विनय को सड़क के ठेके में पार्टनर बनाया, अब इस धंधे में थोड़ा-बहुत घपला तो चलता ही है पर वो मुझे समझाने लगा है कि ये ग़लत है ।

सड़क दो महीने में ही उखड़ जाएगी । मैंने उसकी बात नहीं मानी तो विभाग में मेरी शिकायत कर दी । इतना खुदगर्ज़ और बेईमान दोस्त मैंने आज तक नहीं देखा । वर्मा जी लाल-पीले हो रहे थे ।

मेहता जी ये सुनकर अवाक रह गये । आज के ज़माने में किसी को ग़लत राह पर जाने से रोकना अगर बेईमानी और तुच्छता है तो अच्छाई की परिभाषा क्या है यह उन्हें समझ नहीं आया ।

● वंदना चौबे

सार्वजनिक नैतिकता का दायरा

क्या आज की राजनीति ऐसी हो चुकी है कि भ्रष्ट होने या भ्रष्टाचार से समझौता करने के लिए मजबूर कर रही है । अगर ऐसा है तो फिर इस राजनीति को ही बदलने यानी वैकल्पिक राजनीति कीं बात क्यों नहीं हो रही है ? ऐसी कोई पहल न होना यह बताता है कि मौजूदा राजनीतिक दल नैतिक रूप से चुक गए हैं । उन्होंने बस चुनाव को ही लोकतंत्र का पर्याय समझ लिया है ।

● शशि कुमार झा

यह अच्छी बात है कि पिछले कुछ समय से देश में भ्रष्टाचार पर लगातार बहस हो रही है । शायद ही इसके पहले कभी इस मुद्दे पर इतनी चर्चा हुई हो । भ्रष्टाचार जितने चरम रूप में आज दिखाई देता है, पहले नहीं था । मौजूदा बहस से यह ज़ाहिर होता है कि हमने भ्रष्टाचार को नियति नहीं मान लिया है और इस दौर से बाहर निकलने के लिए बेचैन हैं । लेकिन बहुत कुछ इस पर निर्भर करता है कि हम इस समस्या को किस नज़रिए से देखते हैं ।

ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो भ्रष्टाचार को बस एक नैतिक समस्या के रूप में देखते हैं यानी इसे व्यक्तियों की बुराई मानते हैं । ज़ाहिर है ये व्यक्तियों के मानस में बदलाव या चरित्र सुधार के कार्यक्रम के ज़रिए भ्रष्टाचार से निपटने का परामर्श देते हैं । लेकिन जहां भ्रष्टाचार सर्वभक्षी और संस्थागत रूप ले चुका हो, वहां सदाचार की सीख देना समस्या की असलियत रो मुंह मोड़ना है । एक सवाल यह भी उठता है कि सर्वव्यापी भ्रष्टाचार वाली व्यवस्था में नैतिकता को किस तरह से आंका जाए ? क्या व्यवस्था चलाने वालों के भ्रष्टाचार और व्यवस्था से पीड़ित लोगों की छोटी-मोटी अनैतिकताओं को एक ही पलड़े पर रखा जाना उचित होगा ? यहां से निजी बनाम सार्वजनिक नैतिकता का प्रश्न भी खड़ा होता है ।

ज्यां पॉल सार्त्र के 1948 में लिखे एक नाटक 'लेरा मैन्स सेल्स' यानी 'गंदे हाथ' का एक कम्युनिस्ट चरित्र होएडेंरर एक स्थान पर कहता है–'यहां ठीक केहुनियों तक मेरे हाथ गंदे हो चुके हैं । मैंने उन्हें गंदगी और खून में डुबो दिया है । क्या आप समझते हैं कि आप निर्दोषतापूर्वक शासन कर सकते हैं ?' सार्त्र से पहले भी शासकों या राजनीतिज्ञों के मूलयांकन को उनके निजी चरित्र, भावनाओं और नैतिक दुविधाओं में निरूपित करने की प्रवृत्ति इतिहासकारों और समाज विज्ञानियों में रही थी । लेकिन कई समकालीन चिंतकों और विश्लेषकों ने सार्त्र के 'गंदे हाथों' वाले रूपक को बड़े मार्के का माना है ।

माइकल बॉल्जर नाम के एक प्रभावशाली अमेरिकी राजनीतिक दार्शनिक तो ज़ोरदार तरीक़े से उस उलटी धारा का प्रतिनिधित्व करते नज़र आते हैं जो होएडेंरर के उपरोक्त सवाल का जवाब 'नहीं' में देने से ज़रा भी नहीं हिचकती इस सवाल में 'निर्दोषता' को कई लोग 'भोलेपन' से जोड़ कर देखते हैं जो राजनीतिक और प्रशासनिक उत्तरदायित्व के लिहाज़ से एक विवादास्पद और अवांछनीय चारित्रिक गुण भी हो सकता है ।

सीधे तौर पर पूछें तो राजनीतिक और प्रशासनिक पदों पर बैठे लोगों के शासन में आने के प्रतिस्पर्धी संघर्ष से लेकर शासन करने की ज़िम्मेदारी निभाने तक की प्रक्रिया आधुनिक गणतांत्रिक राज्यों में कितनी सरल और कितनी जटिल है, क्या यह प्रश्न भ्रष्टाचार जैसी समस्या पर बहस करने के लिए प्रासंगिक हो सकता है ? दूसरे सार्वजनिक पदों पर आसीन लोगों के भ्रष्टाचार का संबंध किस हद तक संबोधित व्यक्ति के निजी और स्वायत निर्णय, आचरण, जीवन उद्देश्य या पसंदगी-नापसंदगी पर निर्भर करता है ?

क्या सार्वजनिक जीवन को अपनाने का निर्णय एक

कठोर निर्णय है जिसमें व्यक्ति को संस्थापक और प्रक्रियात्मक बाध्यताओं के अनुरूप ऐसे फैसले भी लेने पड़ते हैं जिनमें अनिवार्य रूप से किसी न किसी के साथ ज़्यादती या अन्याय अवश्यंभावी और स्वाभाविक है ? क्या निजी जीवन की नैतिकता और सार्वजनिक जीवन की नैतिकता के लिए अलग-अलग मापदंड होते हैं, या होने चाहिए ? क्या सीमित अर्थों में ही सही, बहुमत आधारित लोकतंत्र राजनीति में सत्ता हासिल करने की प्रतिस्पर्धा के लिए प्रयुक्त होने वाली 'युद्ध' और 'हार-जीत' जैसी आक्रामक उपमाएं लोकतांत्रिक उद्देश्यों के बजाए सामंती और प्रतिक्रियावादी उन्माद और लोभ से ज़्यादा उत्प्रेरित नहीं लगतीं ?

एक जटिल बहुलतावादी समाज में, प्रतिनिधिमूलक संसदीय प्रणाली के अंतर्गत सत्ता हासिल करने में शुचिता और सदाचार कितनी जगह पहले थी या आज रह गई है ? क्या कथित तौर पर लोकतांत्रिक समाजों में राज्य सत्ता की प्रकृति पूरी तरह से लोकतांत्रिक अदर्शों के अनुरूप ढल पाई है या यह अभी तक प्राधिकार को वैधानिकता हासिल कराने के लिए कुछ चुनावी प्रक्रियाओं के समय-समय पर बेमन से किए जाने वाले अनुपालन के चक्र में फंस गई है, जिसमें एक पक्ष द्वारा दूसरे पक्ष को पछाड़ने के लिए उचित-अनुचित हथकंडे अपनाए जाते हैं ।

यह एक ऐसी स्थिति है, जिसमें तमाम पक्ष स्वयं को इसी व्यवस्था, इसकी प्रक्रियात्मक बाध्यताओं और अन्य पक्षों के अनुचित रवैयों से पीड़ित होने के रूप में पेश करते हैं और इसी आधार पर अपने भ्रष्ट साधनों का भी औचित्य सिद्ध करने के तर्क तलाशते हैं ?

मगर इस तरह की कथित सैद्धांतिक और दार्शनिक उलझनों को भारत में भ्रष्टाचार के मौजूदा विमर्श में अभी केंद्र में नहीं लाया गया है । हालांकि चाहे-अनचाहे हर कोई अलग-अलग तरह से, कभी दबे-छिपे तो कभी मुखर रूप से, इसे व्यक्त करने लगा में लगा है। जैसा कि कुछ दिनों पहले एक पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि अगर गांधी जी भी आज की राजनीति में होते तो उन्होंने भ्रष्टाचार से समझौता कर लिया होता या फिर राजनीति छोड़ देते । लेकिन सवाल है कि वे इस राजनीति में क्यों होते ? अगर वे जीवित होते तो इसी राजनीति का हिस्सा बनना चाहते या वे इसे आमूल बदलने की कोशिश करते ?

दूसरी बात यह है कि क्या आज की राजनीति ऐसी हो चुकी है कि भ्रष्ट होने या भ्रष्टाचार से समझौता करने के लिए मजबूर कर रही है ।

अगर ऐसा है तो फिर इस राजनीति को बदलने यानी वैकल्पिक राजनीति की बात क्यों नहीं हो रही है ? ऐसी कोई पहल न होना यह बताता है कि मौजूदा राजनीतिक दल नैतिक रूप से चूक गए हैं । उन्होंने बस चुनाव को ही लोकतंत्र का पर्याय समझ लिया है। अभी कुछ समय से राजनेता विरोधी माहौल में विभिन्न मंचों पर चर्चाओं के दौरान राजनीतिक भ्रष्टाचार से संबंधित सवालों पर आलोचकों को चुप करने के लिए जिस दलील का सबसे अधिक सहारा लिया जाता है वह यह है कि 'आप चुनाव क्यों नहीं लड़ लेते ?'

इसी से मिलता जुलता एक और तर्क ख़ास प्रचलित है । वह है एक ईमानदाराना, आध्यात्मिक और अपराधबोधी लहजे में यह कहना कि भ्रष्टाचार तो स्वयं हमारे भीतर भरा पड़ा है और जब तक हममें से प्रत्येक व्यक्ति सदाचार का बीड़ा नहीं उठाता तब तक यह नहीं ख़त्म हो पायेगा । दूसरा यह कि भ्रष्टाचार से निपटने के लिए क़ानून तो बहुतेरे हैं, लेकिन उनका कार्यान्वयन न हो पाने की वजह से यह ख़त्म नहीं हो पा रहा है । एक और तर्क यह दोहराया जा रहा है कि सारे नेता या सारे नौकरशाह भ्रष्ट नहीं हैं, इसलिए सब को एक ही पलड़े में तौलना लोकतांत्रिक राजनीति और सरकार की मंशा पर प्रश्नचिन्ह लगाने जैसा होगा जिससे अराजकता फैल सकती है ।

कुल मिलाकर यह कि भ्रष्टाचार को एक स्तर पर नितांत निजी मामले के रूप में ऐसे पेश किया जा रहा है जैसे कुछ व्यक्तियों, विशेषकर राजनीतिक और प्रशासनिक ओहदों पर विराजमान व्यक्तियों के नैतिक या कार्यकारी फैसले ही अंतिम रूप से जवाबदेह हैं । तभी तो हाल ही में लोक सेवा दिवस के अवसर पर हमारे प्रधानमंत्री के संबोधन में व्यक्तिगत स्वेच्छाचारिता, नैतिक साहस, सच्चाई के मार्ग से

For Information On
City Shops, RoaosQ, Restaurants, Magazines, Schools and much more.
Syed Shahbaz Alam Barvi
Business Development Director (09049185093)
Visit us:
www.shoppinglanes.com

भटक जाने अपने भ्रष्टाचारी सह-अधिकारियों को बहिष्कृत करने जैसे आचारशास्त्रीय और उपदेशात्मक पद्यों की भरमार थी। हो भी क्यों न, भ्रष्टाचार को निजी नैतिकता के प्रश्न के रूप में देखने वालों की कोई कमी नहीं है ।

अब देखिए न, अण्णा हज़ारे के आंदोलन और लोकपाल बिधेयक पर साझा समिति के सदस्यों के संदर्भ में भी सरकार से लेकर नागरिक समाज के स्तर पर निजी चरित्र और नैतिकता वाली दलीलों का बोलबाला रहा । एक ऐसे समाज में, जहां व्यक्तिगत स्तर पर भ्रष्टाचार की प्रचलित कसौटियों पर किसी के भी खरा न उतरने का अंदेशा हो, भ्रष्टाचार को लेकर कोई सार्थक बहस कैसे हो सकती है ? 'मैं भी भ्रष्ट, तू भी भ्रष्ट या हम सब चोर हैं' पर एक अन्यमनस्क सहमति के माहौल में अगर बहस की गुंजाइश हो भी तो निष्कर्ष क्या निकलता है ?

इसलिए इस बहस को 'निजी' से निकाल कर 'सार्वजनिक' पर केंद्रित करना ज़्यादा ज़रूरी जान पड़ता है । एक घोर विषमतापूर्ण समाज और अत्यधिक केंद्रीकृत राजनीतिक व्यवस्था में आम इन्सान की व्यक्तिगत असुरक्षा, जीवित बचे रहने की आख़िरी लड़ाई, शासन और क़ायदे-क़ानून की चकरघिन्नी में उलझ कर रह जाने की उसकी पीड़ा आदि से उपजे छोटे-छोटे भ्रष्टाचार और निर्बाध सत्ता का सुख भोग रहे व्यक्तियों और संस्थाओं द्वारा संगठित रूप से किए जा रहे भ्रष्टाचार की अलग-अलग नज़रिए से देखने की आवश्यकता है ।

इसलिए पहली बात यह है कि निजी नैतिकता की कसौटी पर पस्त हो जाने वाले आम आदमी के अपराध बोध को ढाल बनाने की आज़ादी सत्ता-व्यवस्था को हरगिज़ नहीं दी जा सकती । दूसरी बात यह है कि इसकी आड़ लेकर आत्म नियमन (सेल्फ़ रेग्युलेशन) के तर्क को सरकार और राजनीतिक नेतृत्व तक विस्तारित कर देने की चाल को भी नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए । वास्तव में किसी भी सत्तासीन संस्था से आत्म नियंत्रण की अपेक्षा करना चोर को ही रखवाली का काम सौंपने की हद तक का भोलापन होगा ।

भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने की पहल या आत्म प्रेरणा राजनीति या नौकरशाही के भीतर से अभी तक प्रभावी तरीक़े से क्यों नहीं आई या आगे भी क्यों नहीं आ सकती । इसके लिए सत्ता की प्रकृति की गहराई से जांच आवश्यक है । सार्वजनिक जीवन की नैतिकताएं स्वतः प्रेरणा से जागृत या प्रभावी नहीं हो सकती । इसके लिए राजनीतिक संस्थाओं के स्तर पर ऐसे अभिनव प्रयोग और सुधार आवश्यक हैं जो एक सहभागितामूलक माहौल में लोकतांत्रिक आदर्शों को सत्ता और इससे जुड़ी संस्थाओं के ऊपर बाध्यकारी अंकुश लगाने की सकारात्मक भूमिका निरंतर अदा करें । कम से कम उनकी निर्दिष्ट भूमिकाओं से उनको वापस जोड़ सकें । इस मामले में हमारी निश्चिंतता या महज़ पैवंद लगाने की क़वायद हमारे लोकतंत्र के भविष्य को ख़तरे में डाल रही है । (सा० : जनसत्ता)

दोहे

जिसे काट ले सांप तो, देते ज़हर उतार ।
कुर्सी काटे का नहीं, हो सकता उपचार ।।

कुर्सी से चिपके रहो, जब तक तन में जान ।
मूरख तेरी है बनी, कुर्सी से पहचान ।।

जिससे कुर्सी छीन ली, उसे नहीं चित-चैन ।
कैसे हासिल हो सखे, भाग रहा दिन-रैन ।।

कुर्सी से मानव हुआ, अब इतना भयभीत ।
मिले अगर उसको नहीं, मर जाएगा मीत ।।

थाली सबकी एक सी, वादों से भरपूर ।
हुए हितैषी दल सभी, जनता पर अक्रूर ।।

मानव रहे निराश जो, मूरख उसको जान ।
बुद्धिमान रहता सदा, रोहित आशावान ।।

मुझको डर लगता नहीं, हो अंधेरी रात ।
डरता हूं मैं मीत बस, केवल आदगजात ।।

ऊपर से लगता भला, अन्दर रखता घात ।
मिलता मौक़ा जब तुझे, देता सबको मात ।।

पंडित कितना है बड़ा, इसका नहीं सवाल ।
कितना उसमें ज्ञान है, करना इसका ख़याल ।।

रोहित यादव
मंडी अटेली, हरियाणा

लघुकथा

कसक

गांव का युवक पढ़-लिखकर शहर में नौकरी क्या लगती है, अपनी जड़ और ज़मीन से ही कट जाता है। शहर जाकर वह अपने गांव के अभावों और अतृप्तियों का प्रतिशोध लेना शुरू कर देता है । उसके इस प्रतिशोध का पहला शिकार मां-बाप ही होते हैं, क्योंकि अपने को ग़रीब घर में पैदा करने का सीधा ज़िम्मेदार वह उन्हें ही मानता है ।

हमारे लघुकथा-नायक श्रीमान के साथ भी ऐसा ही हुआ । श्रीमान ओवरसियर लगा है, सिंचाई विभाग में । तनख़्वाह के अलावा भी मोटी इंकम है । अब वह कपड़े के जूतों से लिबर्टी शूज़ तक और लट्ठे के कुरते-पाजामे से सफ़ारी सूट तक पहुंच गया है । पिछले साल ही शादी हुई है उसकी । अत: सारी कमाई पति-पत्नी के बनाव-सिंगार, खान-पान और पिकनिक-पिक्चर पर ही ख़र्च हो जाती है । मां-बाप के लिए कुछ नहीं बचता । उनकी हालत पहले जैसी भी नहीं रही । जो कुछ था श्रीमान की शिक्षा और शादी पर ख़र्च हो गया । उम्र की तरह खेती भी जवाब दे गई । अत: मां की लुगड़ी के पैवंद व काका के चेहरे की झुर्रियां और बढ़ गई हैं ।

श्रीमान कभी-कभार ही घर आता है । पत्नी को गांव में परेशानी न हो, अत: रास्ते में ससुराल छोड़ आता है । घर वालों के रुकने के लिए कहने पर, शानपत दिखाकर कहता है–"नीलम गुड़गावं में है, अकेली डरेगी । इसलिए आज ही जाना पड़ेगा ।" कल वह घंटे भर बाद ही जाने लगा, तो काका ने मन भारी कर कहा–"इतने नगीच हुआं पाछै बी महनां-महनां मैं आवा सा । आतो रह्या कर बेट्टा ! बहू नै बी साथ लियायाकर । हम कोई हमेस्यां तो बैठ्या ना रहां, इब तो साल-दो साल का सां ।" "वह तो ठीक हैं काका ! पर गांव में छ: बीघा ऊपर ज़मीन, कच्चे पुश्तैनी मकान और तुम्हारा सिवाय है ही क्या, जिसके लिए आना हो ।"

"तेरी मरजी बेट्टा !" कहकर काका ने श्रीमान को विदा कर दिया । पर उन्हें रात देर तक नींद नहीं आई । वह सोचते रहे कि बेटे के लिए उनका महत्त्व ऊसर ज़मीन और कच्चे मकान जितना भी है या नहीं।

डॉ॰ राम निवास 'मानव'
706, सेक्टर-13, हिसार (हरियाणा).

मुम्बई ऐसी भी थी !

मेरी एक मुंहबोली बहन थी केसर नाईक
मेरे उसके रब्त की थी बुनियाद ग़तानत
रिश्ता बाहम शबनम से बढ़कर पाकीज़ा
उसका घर अपनेपन का गहवारा जैसा
वालिद, भाई, बहनें सब इख़्लास का पैकर
मां बिल्कुल ममता की मूरत
उसके यहां जब भी मैं जाऊं
मां शफ़्क़त से प्यार से पूछे
"कसा आहे ?
(कैसा है तू ?)
क्या खाएगा ?
फिर थोड़ी ही देर में लाकर
जाने क्या-क्या रख देती थी
और मराठी में कहती थी
"सर्वत ध्यायचे"
(सब खाना है !)
फिर अमृत में डूबे लफ़्ज़ों में यह कहती
काफ़ी या चाय ?

मुम्बई छोड़े
लालबाग़ की बहन से बिछड़े
उन्तालीस बरस गुज़रे हैं
फिर भी अक्सर यूं लगता है
जैसे मां नाईक कहती हैं
"कसा आहे ?"
(कैसा है तू ?)
"सर्वत ध्यायचे"
(सब खाना है !)
क्या लेगा ?
काफ़ी या चाय ?

इन्तिज़ार नईम
दिल्ली-110006
मो॰ : 09810841086

पर्यावरण सुरक्षा और इस्लाम

■ अबरार अहमद

आज सारा विश्व पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से चिन्तित है । स्थिति यह है कि संसार की प्रत्येक वस्तु किसी न किसी रूप में प्रदूषित होती जा रही है । पानी, हवा तथा सम्पूर्ण भूमंडल प्रदूषण से विषाक्त बनता जा रहा है । कारख़ानों से गैस के रिसने, परमाणु संयंत्रों से रेडियो धर्मिता के बढ़ने, जलाशयों में कारख़ानों से निकल रहे गन्दे पदार्थों के मिलन आदि से वातावरण प्रदूषित होता है ।

संयुक्त राष्ट्र और विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा पर्यावरण की सुरक्षा के लिए बार-बार चेतावनी दी जाती रही है । प्रतिवर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस भी मनाया जाता है । पर्यावरण प्रदूषण के लिए आज का भौतिकवादी और यांत्रिक सभ्यता का पक्षपाती मानव ही मूल रूप से ज़िम्मेदार है । मानव के लालच से अनेक क्षेत्रों में पर्यावरण असंतुलन हो गया है । यह लोभ, लालच और अहंकार की चरम सीमा है कि अपने हितों और क्षणिक लाभों की ख़ातिर अमीर देश कायनात को तबाह करने पर तुले हैं । वैज्ञानिकों ने पर्यावरण प्रदूषण के निम्न कारण गिनाए हैं–

1. औद्योगिकरण तथा शहरीकरण की तीव्र गति, 2. प्रमाणु संयंत्रों की अधिकता तथा 3. प्राकृतिक संसाधनों का तेज़ी से दोहन ।

संयुक्त राष्ट्र की पर्यावरण समिति ने इस बात की आशंका व्यक्त की है कि जंगल इसी गति से कटते रहे और बर्फ़ इसी रफ़्तार से पिघलती रही तो शायद अगले 50 सालों में दुनिया के कई निचले इलाक़े डूब जाएंगे ।

वैज्ञानिकों ने पर्यावरण प्रदूषण का प्रभाव तीन स्तरों पर बताया है–

1. अधिक मात्रा में दूषित पदार्थ वायु में रहने से मानव एवं अन्य जीवों पर हानिकारक प्रभाव, 2. थोड़ी मात्रा में अधिक समय तक दूषित वायु में रहने से जैविक क्रियाओं पर प्रभाव तथा 3. वायु की दूषित होने से आनुवंषिक प्रभाव ।

इन प्रभावों के अनुसार वर्तमान महानगरों का वातावरण एकदम हानिकारक बन गया है ।

ताप बिजलीघरों तथा विशाल औद्यिक संस्थानों के आस-पास का वातावरण भी इसी तरह दूषित है, इससे मानव-स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ रहा है ।

जल प्रदूषण की समस्या भी विकराल रूप धारण कर रही है । अविकसित देशों में जल-मल-निवास की उचित व्यवस्था नहीं है । वहां छोटे-छोटे उद्योगों और कारख़ानों का गन्दा पानी नदी-नालों में आ जाता है । बड़े शहरों से सीवरेज का पानी भी नदियों में गिरता है, इससे हैज़ा, डिपथीरिया आदि रोग फैलते हैं।

प्रस्तुत हैं प्रर्यावरण-प्रदूषण से बचने के कुछ उपाय–

1. कल-कारख़ानों से निकलने वाले प्रदूषित पदार्थों के संशोधन की उचित व्यवस्था हो, 2. गन्दे नालों और सीवरेज को शुद्ध करने वाले ट्रीटमेंट प्लांट लगाए जाएं । 3. वनों की अंधाधुंध कटाई रोकी जाए तथा और वृक्ष लगाए जाएं, 4. प्राकृतिक सम्पदा के मनमाने विदोहन पर सख़्त रोक



लगाई जाए, 5. वायुमंडल को रेडियोधर्मिता से बचाया जाए।

इस्लामी दृष्टिकोण

पर्यावरण-प्रदूषण की समस्या का इस्लामी हल निम्नलिखित है–

दुनिया में लागू जो क़ानून व्यवस्था है, वह यह शिक्षा देती है कि ख़ूब कमाओ और उड़ाओ। बड़ी-बड़ी कंपनियां अधिक से अधिक लाभ कमाने के लालच में ख़ूब विज्ञापन देती हैं, ताकि लोगों में फ़ज़ूलख़र्ची की आदत डाल सकें। यदि किसी का काम एक मोटर साइकिल से चल जाता है, तो भी वह कार ख़रीदने को उतावला रहता है। एक कार ख़रीदने के बाद वह और अधिक कार रखने की होड़ में लग जाता है।

इस्लाम की शिक्षा है कि एक-दूसरे से आगे बढ़ने की होड़ केवल नेकियों और भलाई के कामों में होनी चाहिए, न कि इधर-उधर से माल कमाकर उसे फ़ज़ूलख़र्ची करके उड़ाने में। अंधाधुंध माल कमाने वालों के लिए क़ुरआन में है–

"एक-दूसरे से अधिक माल हासिल करने की धुन ने तुम्हें हलाक कर दिया।" (क़ुरआन, 102:1)

इस्लाम सादा जीवन जीने का और वस्तुओं को सावधानी से इस्तेमाल करने की शिक्षा देता है। "साधारण ढंग से रहना ईमान में से है।" (अबू दाऊद)

क़ुरआन के मुताबिक़ फ़ज़ूलख़र्च करने वाला शैतान के भाई होते हैं।" (क़ुरआन, 17:26-27)

फ़िज़ूलख़र्ची तो बिगाड़ फैलाता है, जिसे अल्लाह पसंद नहीं करता। "और यह कि अल्लाह बिगाड़ को पसंद नहीं करता।" (क़ुरआन, 2:205)

हज़रत अबू बक्र (रज़ि॰) ने इस्लामी फ़ौजों के लिए सिपहसालारों को निर्देश देते हुए कहा था कि फलदार पेड़ों को न काटना, किसी आबाद ज़मीन को वीरान न करना, शहद की मक्खियों को न जलाना और उन्हें तितर-बितर न करना।" (मुवत्ता इमाम मालिक)

इस्लाम की यह शिक्षा भी है कि यदि किसी के पास अधिक संसाधन उपलब्ध हों तो उन्हें ज़रूरतमंदों पर ख़र्च करना चाहिए।

"आप से पूछते हैं कि क्या ख़र्च करें ? कह दीजिए कि जो ज़रूरत से अधिक है।" (क़ुरआन, 2:219)

इस्लाम की शिक्षा यह भी है कि पानी का अत्यंत सावधानी से इस्तेमाल करना चाहिए।

"एक बार नबी (सल्ल॰) के एक साथी सअद (रज़ि॰) वुज़ू कर रहे थे। नबी (सल्ल॰) ने पानी कम ख़र्च करने के लिए कहा। उन्होंने पूछा कि क्या वुज़ू में भी फ़ज़ूलख़र्ची होती है। नबी (सल्ल॰) ने कहा हां, चाहे तुम बहती नदी के किनारे ही वुज़ू क्यों न कर रहे हो।"

(मुस्नद अहमद)

"नबी (सल्ल॰) ने अतिरिक्त पानी के व्यापार से भी मना किया है।" (मुस्लिम)

नबी (सल्ल॰) ने पेड़ों को अकारण काटने से मना फ़रमाया है तथा अधिक से अधिक पौधे लगाने की शिक्षा दी है। नबी (सल्ल॰) फ़रमाते हैं कि तुम देखो कि क़ियामत आने वाली है और तुम्हारे पास केवल इतना समय है कि तुम एक पौधा लगा सकते हो, तो उसको लगा दो।

इस सृष्टि का मालिक अल्लाह है और यहां जितने भी संसाधन हैं वे सब उसी की मिल्कियत हैं। इन्सानों को मात्र संरक्षक बनाया गया है। इन्सान को यह अधिकार दिया गया है कि वे यथा संभव संसाधनों का इस्तेमाल करें, लेकिन उनको बरबाद न करें और न करने दें।

क़ुरआन में है कि अल्लाह ने इन्सान को जो संसाधन प्रदान कर रखे हैं, उनमें से हर चीज़ के बारे में उससे पूछताछ होगी। यह वह मूलधारणा है जो दुनिया के संसाधनों को इस्तेमाल करने के मामले में ज़िम्मेदारी का ज़बरदस्त एहसास पैदा करती है। यही ज़िम्मेदारी का एहसास इन्सान को मजबूर करता है कि वह दुनिया में संसाधनों के इस्तेमाल में सतर्कता बनाए रखे और संतुलन से काम ले।

अत: हमारी ज़िम्मेदारी है कि पर्यावरण को स्वच्छ रखने के लिए और इसे दूषित होने से बचाने के लिए हम इस्लाम की शिक्षाओं का अनुसरण करें ताकि धरती स्वच्छ और प्रदूषण रहित बन सके।

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-110006 से मुद्रित। फ़ोन : 011-26949430, 09818799223
संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णत: प्रतिबंधित है।

अल्लाह के
रसूल (सल्ल०) ने बताया :
अल्लाह तआला क़ियामत के दिन
एक आदमी से कहेगा, ऐ आदम के बेटे,
मैं बीमार पड़ा था, तू मेरी इयादत को नहीं आया ।
वह कहेगा, ऐ मेरे रब, कैसे तेरी इयादत को आता
और तू तो रब्बुल आलमीन है । अल्लाह कहेगा
क्या तुझे मालूम नहीं, मेरा फ़लां बन्दा बीमार
पड़ा था पर तू उसकी इयादत को नहीं गया ।
क्या तुझे मालूम न था अगर तू उसकी इयादत
को जाता तो मुझे उसके पास पाता ।
(हदीस)

A WELL WISHER
KOLKATA

Posted on 20-21 August 2015
September 2015
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.08.2015
Total Pages-52 (With Covers)

कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2015-2017
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2015-2017

Dr. Mrs. Naheed F Khan

MBBS, DGO, MS (Obs & Gyn)
Mb. : 9830031647
E-mail : drnfkhan@yahoo.co.in
drnfkhan22@gmail.com

RESIDENCE

52B, Shakespeare Sarani
Sukh Sadan, Flat 7-D
Kolkata - 700 017
Ph. : 22830333

CHAMBERS

B. N. CLINIC
84/5, Ripon Street
Kolkata - 700016
Ph. : 22296057, 22296096
Tue, Fri, Sat : 4 pm - 8 pm
Thu : 11 am - 1 pm

BHAGIRATHI NEOTIA WOMAN & CHILD CARE CENTRE
2, Rawdon Street, Kolkata - 700017
Ph. : 4040510, 40405100
Mon : 8 am - 10 am
Wed : 7 pm - 9 pm

FORTIS MEDICAL CENTRE
2/7, Sarat Bose Road
Kolkata - 700020
Ph. : 24754320, 24754096
Tue : 11 am - 1 pm
Thu : 8 am - 10 am

DILKUSHA NURSING HOME
94 A, Dilkusha Street
Kolkata - 700017
Ph. : 22803639, 22874318
Wed : 11 am - 1 pm